शाश्वत धर्म

जून १९९२

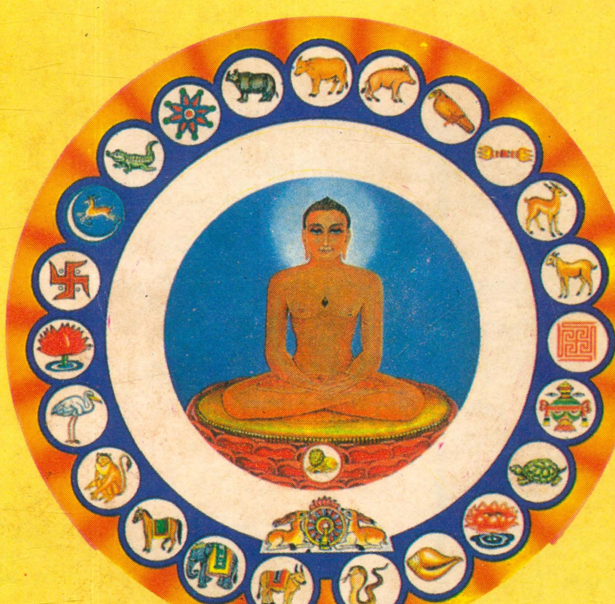

सम्पादक – जे. के. संघवी

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में घर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी,
* श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भैंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मर्ति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद. • श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ जैन संघ - आणंद • श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ जैन संघ - जावरा

शाश्वत धर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

प्रधान सम्पादक : जे. के. संघवी

सहसम्पादक : शांतिलाल सुराना

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीन सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र
कार्यालय © ५३४ ०७ २४ निवास © ५३४ ८० ७३
शाश्वत धर्म कार्यालय
डेवलेपमेन्ट बैंक के पास, जामली नाका-थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

वर्ष : ४० ★ अंक १ ★ जून १९९२

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

इस अंक में

❊ अपनी बात .... जे. के. संघवी ३
❊ सम्पादकीय .... जे. के. संघवी ५
❊ शीलत्व की सौरभ .... आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी ९
❊ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन (१५) .... मुनि श्री जयानंदविजयजी १७
❊ नमो या णमो .... श्री विमलकुमार चौरड़िया १९
❊ पशुओं को काटकर हम अपने .... श्री पन्नालाल मुंधड़ा २५
❊ २०० वर्ष का केलेन्डर .... श्री प्रितेश जैन ३२
❊ परिषद प्रांगण से .... संकलित ४३
❊ समाचार दर्शन .... संकलित ४५

स्थायी स्तंभ

❊ काव्यसुधा .... संकलित ८
❊ ज्ञान कसौटी (१५) .... श्री महेन्द्र जे. संघवी १५
❊ शब्द सागर इनामी स्पर्धा (११) .... साध्वीजी श्री प्रियसुदर्शनाश्रीजी २९
❊ क्या आप जानते हैं कि .... धर्म मित्र ३४
❊ स्वास्थ्य चर्चा .... संगीता शर्मा ३५
❊ रुकिये ! पढ़िये !! सोचिये !!! .... प्रवासी ३८
❊ सरे-राह चलते-चलते .... मुसाफिर ३९
❊ एक दृष्टि समाचार पत्रों पर .... चकोर दृष्टि ४०
❊ इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ .... संकलित ४१

ગુજરાતી વિભાગ

❊ સમાચાર દર્શન .... સંકલિત ૫૪
❊ દેશી ઉપચારથી પણ કેંસર મટી શકે છે ..... સુરેન્દ્રનાથ નિઝાડકર ૫૭
❊ અજબ એ આત્મબલ .... મુનિશ્રી પ્રશાંતરત્ન વિજયજી ૫૯
❊ ભારતની પ્રજાના મોંમાંથી તાજું દૂધ .... શ્રી સેવન્તી એમ. સંઘવી ૬૧
❊ સ્વસ્થ અને સાર્થક જીવનનો ઉપાય .... ડૉ. ચિનુભાઈ નાયક ૬૩

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है ।

'शाश्वत धर्म' का ४० वें वर्ष में प्रवेश

आज सस्ते मनोरंजन के नाम पर मनोभंजन करता हुआ घटिया साहित्य धड़ल्ले से बिक रहा है, ऐसे समय सात्विक सम्यग्ज्ञान के साथ नैतिक उत्थान व सुसंस्कारों की ज्योति लेकर समय के साथ चलने में 'शाश्वत धर्म' निरंतर प्रयास रत हैं। सामाजिक पत्र होने के नाते समय-समय पर इस दीर्घ यात्रा में इसके प्रकाशन स्थान बदलने पड़े। सन् १९८५ से थाने (महाराष्ट्र) में स्थानांतरण के बाद इसके बाह्य आवरण एवं आंतरिक मेटर में काफी बदलाव लाकर उसे पाठकों के लिए विशेष रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक बनाने के भरपुर प्रयास किये गये हैं। परिवार के हर व्यक्ति को उपयोगी सामग्री 'शाश्वत धर्म' के पठन से मिले ऐसे बहुआयामी प्रकाशन का हम प्रयत्न करते हैं।

पिछले वर्षों में मुद्रणकला में खूब परिवर्तन हुए हैं और कई नई तकनीकें हमारे सामने आयी हैं। हमारा प्रयास भी यही रहा कि नयी तकनीक का भरपुर उपयोग होकर हमारे पाठकों को 'शाश्वत धर्म' नयनरम्य मुखपृष्ठ के साथ आकर्षक, सुवाच्य अक्षरों व मुद्रित सामग्री के साथ मिले।

बिना किसी प्रेरणा के पाठकों द्वारा शाश्वत धर्म की सदस्यता ग्रहण करना या अंक थोड़ा देरी से पहुंचने पर कार्यालय पर पत्रों का आना इस बात की पुष्टि करता है कि 'शाश्वत धर्म' के प्रति लोगों का लगाव बराबर बढ़ रहा हैं।

यह अंक ४० वें वर्ष के प्रवेशांक के रूप में आपके हाथों में हैं। इस अवसर पर एक विनम्र अपील हम हमारे पाठकों से करते हैं कि आप अपने इष्ट मित्रों या संबंधितों को 'शाश्वत धर्म' मंगवाने हेतु प्रेरित करें। ध्यान रहे ऐसा कर आप सम्यग्ज्ञान की अनुमोदना के कारण लाभान्वित तो होंगे ही परन्तु हमारे मिशन/कार्य को भी एक भावनात्मक सहयोग मिलेगा।

पुनः आपसे वादा करते हैं कि 'शाश्वत धर्म' को नयी उंचाइयों के शिखर पर ले जाने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। गुरूकृपा एवं आपके सद्भाव का बल हमारे साथ हैं।

सद्भाव सहित आपका अपना

T.K. Sanghvi

(सम्पादक)

समय का सदुपयोग कीजिये : इनाम जीतिये

'ध' अक्षर पर स्वाध्याय चिन्तनात्मक प्रश्नावली पत्र

स्मृति : गुरूदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी के १६५ वें जन्म दिवस की पावन स्मृति में

प्रेरणा : प. पू.साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी

संयोजक : प. पू. साध्वीजी श्री डॉ. प्रियदर्शनाश्रीजी (एम्.ए. पी.एच.डी.)
प. पू. साध्वीजी श्री डॉ. सुदर्शनाश्रीजी (एम्.ए. पी.एच.डी.)

विजेताओं को कुल इनाम ५१००/– रूपये

(प्रथम पुरस्कार : २५००/– रूपये; द्वितीय पुरस्कार : १५००/– रूपये; तृतीय पुरस्कार : ११००/– रूपये)

सम्पूर्ण जानकारी एवं प्रश्नावली पत्र निम्नांकित पते से प्राप्त करें।

१) श्री कानराजजी कालुराजजी मेहता,
सूरज पोल, **जालोर – ३४३ ००१** (राजस्थान)

२) श्री पृथ्वीराजजी कावेड़िया,
द्वारा – अल्का सेल्स कार्पोरेशन, स्टेशन रोड़, पो. **भीनमाल,**
जि. जालोर (राजस्थान) पिन – ३४३ ०२९

आवश्यकता हैं!

विजयवाडा में धार्मिक अध्यापक की जरूरत है। पति–पत्नी यदि साथ आ सके तो प्राथमिकता दी जाएगी। संगीत का ज्ञान आवश्यक है। वेतन एवं अन्य अपेक्षाओं के साथ पत्र व्यवहार निम्नांकित पते पर करें।

Shri. Sambhavnath Rajendrasuri Jain Swetamber Trust
Kandulvari Street, VIJAYWADA 520 001 (A. P.)

सम्पादकीय

अब तो हद हो गई.....

भारत जिसे अहिंसा का विश्वतीर्थ कहा जाता रहा है। अहिंसा, प्रेम और दया के संस्कार जहॉ की संस्कृति मे कूट-कूट कर भरे थे। जहॉ दूध, घी की नदियॉ बहती थी, वहॉ आज हिंसा का तांडव नृत्य हो रहा है। दूध, घी की जगह खून की नदियॉ बह रही है। करुणा, दया प्रेम इन मानवीय जन्मजात संस्कारों के साथ छेड़छाड़ की जा रही है। भारतीय प्रजा को गुम राह कर क़त्लखाने घडल्ले से खुलते जा रहे हैं। पशुधन जो भारत की मजबूत रीढ़ है आज वह नष्ट होता जा रहा है। अण्डा, मांस और मछली उद्योग उन्नति पर है। सरकार नित नयी योजनाऐं बनाकर, कर्ज लेकर या देशी-विदेशी साझेदारी द्वारा इनको बढावा दे रही है। इनके दूरगामी परिणामों की ओर आंखे मूंद ली है। हिंसा के वातावरण में, करोड़ों पशुओं, जीवों की आह के बीच हम शांति और सुख की कल्पना भी नहीं कर सकते। आज आंतकवाद, दंगे, अपहरण, डकैती, बलात्कार आदि काले कारनामों से देश पीड़ित है, जिसके मूल में हिंसाचार को बढावा भी सशक्त कारण है। मांस उद्योग की लॉबी अमेरिका में तो काफी शक्तिशाली है ही, अब हमारे देश में भी यह काफी बलशाली हो गयी है। नेशनल एग कोऑर्डिनेशन कमेटी, गिरगांव (पुणे), वेंकटेश्वर हैचरीज प्रा. लिमि., वेंकी इंडिया लिमि., अलकबीर फूड प्रोसेसिंग प्रा. लि. (दिल्ली), अरेबियन एक्सपोर्टर्स लिमि. (दिल्ली), वेस्टर्न हेचरीज लिमि. इत्यादि ने केन्द्र सरकार पर अपना अपूर्व वर्चस्व कायम कर लिया है, ये मांस संस्थान जैसा चाहते हैं दूरदर्शन या आकाशवाणी से वैसा प्रसारण करवा सकते हैं। पैसों के बल पर सरकारी अधिकारियों की जेबें गर्म रखते हैं और जो चाहे जैसा चाहे करवा लेते हैं। क़त्लखाने खोलने में अरेबियन एक्सपोर्ट प्रा. लि. और अलकबीर ने यही नीति अपनायी है। यह सारा काम इस खूबी व खामोशी के साथ हो रहा है कि आम जनता को इसकी कोई जानकारी नहीं होती जब तक कि कोई ठोस आकार ग्रहण नहीं कर लेता।

कुछ वर्षों पूर्व भिवंडी (जिला-थाने) के पास अलकबीर द्वारा लगाये जाने वाले कत्लखाने को सरकारी मंजूरी दे दी गयी। कार्य प्रारंभ होने पर लोगों को मालूम होते ही जमकर विरोध हुआ। पैसों के बल पर बिके हुए अधिकारी इतना जल्दी कैसे मान लेते! आखिर विरोध करनेवालों पर हमारी (?) सरकार द्वारा गोलियाँ चलाई गयी और मानवता की रक्षा के लिये कुछ बलि चढाये जाने के बाद जब जन विरोध और उग्र रुप धारण करने लगा तब हारकर सरकार को यह योजना निरस्त करनी पड़ी थी।

आज दो घटनाऐं मेरे सामने है, जो हरेक अहिंसा प्रेमी को कुछ सोचने के लिये मजबूर करती है। पहली घटना हैदराबाद की है, जिसमें दया, शांति और प्रेम के मसीहा भगवान महावीर के जन्मोत्सव निमित्त निकली विशाल शोभायात्रा पर आंध्र प्रदेश सरकार की पुलिसों द्वारा गोलियॉ चलायी गयी। कई लोग घायल हुए। इतना ही नहीं कई कार्यकर्ताओं

के घर जाकर रात्रि में सारे कानूनों को ताक में रखकर उन्हे गिरफ्तार किया गया एवं उन पर मनघडंत आरोप लगाकर झूठे मुकदमे दायर किये गये । इस घटना के पिछे मूल कारण था– अलकबीर द्वारा खोले जाने वाले कत्लखाने का अहिंसा प्रेमी जनता द्वारा विरोध करना । भिवंडी में निर्दोषों के खून की होली खेलने के बाद अब उसकी योजना हैदराबाद के पास कत्लखाना बनाने की थी । विरोध की आवाज को दबाने के लिये, अहिंसा प्रेमियों में डर पैदा करने के लिए कत्लखाने के विरुद्ध चलाए जाने वाले आंदोलन को कुचल डालने के लिए, इन लोगों ने मिलकर एक साजिश द्वारा जुलूस पर लाठियाँ, अश्रुगैस एवं गोलियॉ बरसायी । पैसों के बल पर मांस उद्योग लॉबी इस देश पर कितनी हावी हो गयी है, उपरोक्त घटना इसका जीवंत उदाहरण है ।

दूसरी घटना गुजरात में शंखेश्वरतीर्थ से १० किलोमीटर दूर स्थित पंचासर गांव में जैन मुनि पर हमले की है । पिछले वर्ष मुनिराज श्री जंबुविजयजी आदि ठाणा का यहॉ चातुर्मास था । चातुर्मास में जीवदया विषयक प्रवचनों को सुनकर उस नगर एवं आसपास के जैन-अजैन काफी प्रभावित हुए । एवं वहॉ गौशाला हेतु मकान व उसके संचालन में अच्छी आर्थिक व्यवस्था जमायी । आज वहॉ १७५ गायें बैल आदि पशु है । गांव के बाहर एक तालाब है । चातुर्मास के बाद उसमें से मछली पकड़ना सभी ने बंद कर दिया एवं इस विषय में गांव के चरवाहे बराबर ध्यान रखने लगे । उस तालाब का पानी सभी लोग पीते थे । वहॉ के ठाकुर कभी-कभी मछली पकड़ने आते, जिससे गांव में विरोध था ।

दि. १६ मई को किसी कारण वश गांव के लोगों व ठाकुरों के बीच शाम ५ बजे तालाब के किनारे झगड़ा हुआ । उस दिन मुनि श्री जंबुविजयजी अपने शिष्य के साथ उसी नगर में विराजमान थे । शाम ७-३० बजे करीब मंदिर से दर्शन कर उपाश्रय आ रहे थे; उस समय ठाकुरों की एक टोली ने यह कहकर हमला किया कि मछली मारने के लिए इन्ही महाराज का विरोध है । हमले में मुनि श्री धर्मचंद्रविजयजी के हाथ में चोंट लगी । सारी घटना पुलिस में दर्ज करायी गयी है ।

इस प्रकार आज अहिंसा पर चारों तरफ से कुठाराघात हो रहा है । हमारी सरकार आंखे मूंद कर विदेशी मुद्रा के लिए सारे पाप करने के लिये तैयार है । राजनेताओं, सांसदो, विधायकों व सरकारी अफसरों के खर्च अनगिनत बढ़ते जा रहे हैं । कमर तोड़ टेक्स प्रजा से लेने के बाद भी अपनी गलतनीतियों एवं भ्रष्टाचार के कारण बाहर से कर्ज लाकर बदले में यहाँ से अच्छी बनावट का अनाज, फल एवं सागभाजी का निर्यात सरकार कर रही है । इससे आगे बढकर पशुधन का नाशकर उनका मांस विदेशों में भेजा जा रहा है; इसलिये आधुनिक कत्लखानों की योजनाऐं बनायी जा रही है ।

हमारे कृषिमंत्रालय को भी परम्परागत कृषि को छोड़कर मांस मछली व अंडो के उत्पादन में ज्यादा रस है । इसीलिये वह अब अण्डों और मांस का प्रचार करने लगा है । भारत के सूचना/प्रसारण विभाग के अन्तर्गत जो प्रकाशन प्रभाग पुस्तकें छापता है, वह प्रतिवर्ष "इंडिया-१९९१" जैसी वार्षिकी भी हिन्दी-अंग्रेजी में प्रकाशित करता है । इंडिया-९१ अंग्रेजी में प्रकाशित हो गयी है । जिसमें कई चौंका देने वाली बातें प्रकाशित की गयी है । एग्रीकल्चर (कृषि) के अंतर्गत मांस, कत्तलघर, मछली, पौल्ट्री, रेशम आदि ले

लिया गया है । मांस उत्पादन को देश के एक आवश्यक और महत्वपूर्ण कृषि घटक के रुप में निरुपित किया गया है । पौल्ट्री को कृषक-अर्थतन्त्र का एक महत्वपूर्ण घटक बताया गया है और कहा गया है कि पौल्ट्री उद्योग खाद्य को उच्च पोषण युक्त मानवाहार में परिवर्तित करने का एक सक्षम माध्यम है । जो अण्डा उत्पादन वर्ष १९५०-५१ में १८३ करोड़ था । वर्ष १९८८-८९ तथा १९८९-९० में क्रमश : १८६७ तथा १९५८ करोड़ हो गया । नेफेड (नेशनल एग्रीकल्चरल को ऑपरेटिव फेडरेशन) पर राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर अण्डे तथा पौल्ट्री-मांस के विपणन की जिम्मेदारी सौंपी गयी है । देश में प्रतिवर्ष बहुविध पशुओं से १० लाख टन मांस उत्पादित होता है । वर्ष १९८८-८९ में यह ११७ करोड तथा १९९१-९२ में १९५ करोड मूल्य का हुआ । स्वच्छ और पुष्टिकर मांस के लिये क़त्लखानों का आधुनिकरण आवश्यक है । गत वर्षों में तीन आधुनिक क़त्लखाने स्थापित किये गये । कलकत्ता, सिक्किम, श्रीनगर, दिल्ली, हैदराबाद और बैंगलोर में आधुनिक कत्लखाने खोलने के प्रस्ताव है । कृषि मंत्रालय द्वारा सभी राज्यों को पत्र लिखकर दोपहर में स्कूली बच्चों को अंडे का नाश्ता देने के लिये कहा गया है ।

उपरोक्त सारी बातें भारतीय संस्कृति में विश्वास रखने वाले एवं अहिंसा को मानने वालों के लिये अत्यन्त आघातजनक है । यह हमारा दुर्भाग्य है कि कृषि मंत्रालय कत्लखाने खोले और चलाये । सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी विचार करें तो समझ में आयेगा कि पशुओं की कत्ल राष्ट्र को खूब नुकसान पहुंचा रही है । दूध आज कितना महंगा हो गया है कि गरीब सामान्य या मध्यम वर्ग के बालकों को पीना एवं देखना दुर्लभ हो गया है । अब नये क़त्लखाने खुलने पर और पशुओं की कत्ल होने पर कैसी परिस्थिीति निर्माण होगी, यह विचारणीय है । बार-बार कई जगहों पर नाश्ते में स्कूली बच्चों को अंडे वितरण की योजना विरोध के कारण निरस्त की जाने के बाद पुनःपुन उस ओर सरकार का ध्यान जाना इस बात को स्पष्ट करता है कि पौल्ट्री उद्योग भ्रष्टाचार की नीतियों द्वारा हमारे नेताओं से अपने मनचाहे कार्य करवा रहा है । अन्यथा अंडे व मांस के विषय में सैकडों वैज्ञानिक तथ्यों द्वारा सिद्ध हो चुका है कि इनसे नाना प्रकार के रोग पैदा होते हैं व ये पर्यावरण के लिये भी घातक है । मानवीय आहार शाकाहार ही है ।

अहिंसा भारत की संस्कृति है । सभी धर्मों ने एक मत से अहिंसा को प्रधानता दी है । जब तक इस देश की धरती से कत्लखाने खत्म नहीं होंगे तब तक शांति का संदेश कोरा दिखावा मात्र रहेगा और न तो कश्मीर और पंजाब की समस्या हल हो सकेगी, न ही भूखमरी और बेरोजगारी; न ही क्रूर हत्याओं, अपहरणों और दंगो का कोई हल निकल पायेगा । अब ज्यादा देर हो जाये, उससे पहले अहिंसा में विश्वास रखनेवाले हम सभी सरकार की गलत नीतियों का जमकर विरोध करें व भारतीय संस्कृति के माथे पर लगे काळे दाग को मिटायें ।

J.K. Sanghvi

● जे. के. संघवी ●

लोभ रुपि अग्नि को धन वैभव से शान्त करने का प्रयत्न करना निरर्थक ही नहीं, वरन विपरात कार्य है। ✱✱✱

मैं आत्मा हूँ

चिदानंद अविनाशी मैं आत्मा हूँ
सदा मुक्त निर्मल अचल आत्मा हूँ
चिदानंद...

जिसे जानने की नहीं शक्ति मन में
नहीं बुद्धि सक्षम कहे कुछ कथन में
वही आदि शक्ति अखंड आत्मा हूँ
चिदानंद...

सभी इंद्रियों से परे है जो चेतन
पृथक नाम रूप से जो विलक्षण
वही सच्चिदानंद मैं आत्मा हूँ
चिदानंद...

जिसे जल गलाए न अग्नि जलाए
कहे शास्त्र नाहि कोई चुराए
वही अतुल धन मैं अमर आत्मा हूँ..
चिदानंद...

जिसे ऋषिमुनि जन सदा याचते हैं
निजानंद मस्ती में नाचते हैं
वही आदि शक्ति अखंड आत्मा हूँ
चिदानंद...

जिसे प्राप्त कर शेष पाना नहीं कुछ
मिटाना नहीं कुछ बनाना नहीं कुछ
वही बिन्दु सागर बसंत आत्मा हूँ
चिदानंद...

ऐतिहासिक कथा

शील की सौरभ

गतांक से आगे

आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी

तदेव हि तप: कार्य: दुर्ध्यानं यत्र नो भवेत्।
येन योगा न हीयन्ते क्षीयन्ते नेन्द्रियाणि च।।

गीता में भी यही तो कहा है कि यह मन तप के द्वारा ही वश में किया जा सकता है। मन समस्त दुविधाओं का मूल कारण है।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो:

स्वयं को शुभविचारों की ओर प्रेरित करने के लिए मनरूपी अश्व का नियमन तप रज्जु से ही करना चाहिये और उसे साधना मार्ग पर गतिमान करना चाहिये। तपस्या की सिद्धि के लिए आत्म प्रेरणा के साथ-साथ सत्संगति भी आवश्यक है।

सत्संगति कथय किं न करोति पुंसाम् ?

सत्संगति मनुष्य के लिए क्या नहीं कर सकती? सब कुछ कर सकती है।

आत्मकल्याण के लिए सत्संगति अत्यन्त आवश्यक है। जब लोहे जैसी धातु भी पारस के सत्स्पर्श से स्वर्ण में परिवर्तित हो जाती है, तब बुद्धिमान मनुष्य का तो कहना ही क्या?

सत्संग का सर्वोत्कृष्ट परिणाम प्रकट करनेवाली निम्नकथा आज भी सत्संग के इतिहास में सुवर्णाक्षरों में लिखी हुई है।

कोई एक मुनिराज विहार करते-करते वत्स देशान्तर्गत कौशांबी नगरी में पहुँच गये। धर्मलाभ का कारण जानकर वे वहाँ चातुर्मास के लिए ठहर गये। श्रेष्ठी अर्हद्दास का पुत्र विजय उनके प्रवचनामृत का श्रद्धापूर्वक नित्य रसपान किया करता था। मुनिराज की वाणी में जादू था। धीरे-धीरे विजय की मनोवृत्ति में परिवर्तन होने लगा। उसे स्वाध्याय तथा तत्त्व चिन्तन में रस लग गया। मुनिराज से तत्त्व चर्चा करते-करते वह क्रिया रुचि संपन्न हो गया। सर्व विरति चारित्र के रसायण ने अविरत जीवन रूपी लोहे को सुवर्ण में बदल दिया। विजय का जीवन सत्संगति के कारण धर्ममय बन गया।

धीरे-धीरे वर्षावास समाप्त हुआ और मुनिराज अन्यत्र विहार के लिए तैयार हो गये। साधु के लिए भला स्थान का क्या मोह? भोले विजय के लिए मुनि विरह असह्य हो गया। वह मुनिराज को रोकने लगा, वह बोला - ''महाराज! स्नेह लगा कर आप ऐसे कैसे चल दिये? यहीं रुक जाईये आप।''

मुनिराज मुस्कराकर बोले - ''वत्स! यह मोह ही तो बंधन है और हम इसी मोह बंधन से मुक्त होने का प्रयत्न करते हैं। हमारा स्थाईवास कहीं नहीं होता। न स्थाई कोई घर और न स्थाई कोई परिजन। यही संसार का भी क्रम है। हर सुख संयोग के पिछे वियोग दु:ख छिपा हुआ हैं।अत: इस सांसारिक सुख का त्याग करना ही समझदार के लिए उचित है।

जीवन में व्रतधारण कर संसार से विरत होने में ही सच्चा सुख है, अतः यदि सुख की कामना करते हो तो विरति में रहना सीखो। व्रती जीवन में ही सच्चा सुख है

यह शरीर तो क्षणभंगुर है। सार्थक जीवन वही है जिसमें चतुर्थ अणुव्रत स्वदारा संतोष या परस्त्रीगमन विरमण व्रत का कठोरतापूर्वक पालन किया जाये। इस व्रत के पालन से पाँचों अणुव्रतों के पालन का फल प्राप्त हो जाता है। साथ ही स्वदारा को भी कृष्ण पक्ष में छोड़ कर मन-वचन-काया से अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया जाये, तो वह और अधिक फलदायक है। शास्त्रकार ज्ञानी गुरु भगवन्तों ने शील व्रत पालन का अपार महत्त्व बताते हुए कहा है कि मात्र शील पालन से भी मोक्ष प्राप्त हो सकता है। जैसे कि—

सीलं उत्तमं वित्तं, सीलं जीवाण मंगलं परमं।
सीलं दोहग्गहरं, सीलं सुखाण कुल भवणं।।

शील उत्तम धन है, जीवमात्र के लिए परम मंगल है, दुर्भाग्य दूर करके सौभाग्य प्रदान करानेवाला है और सुख की खान है।

शास्त्रकार कहते है—

बिभेषि यदि संसारान्मोक्ष प्राप्तिं च कांक्षसि।
तदेन्द्रियजयं कर्तुं स्फोरय स्फार पौरुषम्।।

यदि तुम्हें संसार से भय लगता है और तुम मोक्ष प्राप्ति की कामना करते हो, तो इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के लिए अपने पौरुष का उपयोग करो। इन्द्रिय जय करने का अर्थ मात्र इन्द्रियों को स्वकर्म से रोकना ही नहीं है, अपितु शुभाशुभ विषयों में रागद्वेष की निवृति भी इन्द्रिय जय है। अतः शुभाशुभ विषयों में संगद्वेष की निवृतिपूर्वक इन्द्रियों को स्वकर्म से रोकना चाहिये।

बुद्धिमान पुरुष के लिए विषयों के व्यालपाश से मुक्त होकर आत्मानंदी होना ही श्रेय मार्ग है।

आत्मानं विषयैः पाशैः भववास पराङ्मुखम्।
इन्द्रियाणि निबन्धन्ति मोहराजस्य किङ्कराः ।।

ये इन्द्रियाँ मोहराज की सेविकाएँ हैं। ये संसार विमुखो को भी पुनः बन्धन में डालने की ताक में रहती हैं। जिसने शीलव्रत धारण कर इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली है, उसके लिए सागर गागर बन जाता है। पुराणों में एक कथा है कि अगस्त्य ऋषि ने समुद्र को पी लिया था। आशय इतना ही है कि इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के कारण संसार सागर उनके लिए अंजुली जितना संकीर्ण बन गया था। इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाले के लिए आग शीतल जल बन जाती है, शूली सिंहासन बन जाती है, साँप पुष्पमाला बन जाता है, शेर हिरन सा निरीह बन जाता है, मेरूपर्वत सरसों के दाने सा बन जाता है और हलाहल अमृत बन जाता है। कहा भी है—

वह्निः तस्य जलयते जलनिधिः कुम्भायते तत्क्षणात्।
मेरूः स्वल्प शिलायते मृगपतिः सद्य कुरङ्गयते।।
व्यालो माल्य गणायते विषरसः पीयूष वर्षायते।

यस्याङ्कऽखिल लोकवल्लभमतं शीलं समुन्मीलति।।

अठारह हजार शीलांगरथ को रत्नत्रयसंपन्न महात्मा विरति, तप, ध्यान तथा भावना की पवित्रता से अनायास ही प्राप्त कर लेते हैं।

सम्यग्दृष्टिर्ज्ञानी विरति तपोध्यान भावनायोगैः।
शीलाङ्क सहस्राष्टा दशकमयत्नेन साधयति।।
शीलार्णवस्य पारं गत्वा संविज्ञ सुगममार्गस्थ।
धर्म ध्यानमुपगतो वैराग्योप्राप्नुयाद्योगम्।।

वैराग्य योग तभी प्राप्त होता है, जब शील समुद्र को पार कर संविज्ञ सुगम मार्ग पर गमन किया जाये और धर्मध्यान में तन्मयता प्राप्त की जाये।

मूलं चैतदधर्मस्य भवभाव प्रवर्धनम्।
तस्माद्विपान्न वत्त्याज्य-मिदं मृत्युमनिच्छता।।

शील को खंडित कर विषयों में रममाण होना अधर्म का मूल है अतः मृत्यु की अनिच्छा करनेवाले मुमुक्षु को विषमिश्रित अन्न भक्षण के समान विषय सेवन का त्याग करना चाहिये। यही परमात्मा का अमर सन्देश है।

मुनिराज की अमृतोपम वाणी विजय एकाग्रतापूर्वक सुनता रहा। उसे अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति हो रही थी। वह सोच रहा था कि इस ज्ञानामृत का मैं सतत पान करता रहूँ। वह अपनी प्रसन्नता छिपा न सका। उसने सन्तोष पूर्वक मुनिराज की वाणी का सत्कार किया और कृष्ण पक्ष में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने का नियम ले लिया।

साधु-सन्त कहाँ एक ही स्थान पर रहते हैं?

बहता पानी निर्मला, बन्धा गन्दा होय।
साधु तो फिरता भला, दाग न लागे कोय।।

विजय के जीवन को शीलव्रत से अलंकृत कर मुनिराज अन्यत्र विहार कर गये। विजय का जीवन कृतार्थ हो गया।

सच्चे मुनि ऐसे ही होते हैं। धर्म की प्रभावना करते हुए वे स्वयं के साथ अन्य जीवों का भी कल्याण करते हैं।

धर्म के दस लक्षण हैं। उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य। इनका पालन करता हुआ संसारी जीव मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होता है। इन दस लक्षणयुक्त जीव ही धर्म का पूर्ण अधिकारी होता है। जैसा की कहा है—

सेव्यः क्षान्ति मादर्व-मार्जव शौचे च संयम त्यागो।
सत्य तपो ब्रह्मकिश्चन्यानी त्येष धर्मविधि :।।
धर्मस्य दया मूलं न चाक्षमावान्दययां समादत्ते।
तस्माद्यः क्षान्तिपरः साधयत्युत्तमं धर्मम्।।

धर्म का मूल दया भाव है। क्षमारहित मनुष्य दयावान नहीं हो सकता; इसलिए जो क्षमावान है; वही उत्तम धर्म साधन कर सकता है।

विनयायत्ताश्च गुणा: सर्वे विनयश्च मार्दवायत्त: ।

यास्मिन्मार्दवमखिलं सर्वगुण माप्तत्व माप्नोति।

दया के पश्चात् विनय आने में देर नहीं लगती। समस्त गुण विनय के अनुगामी होते हैं और विनया मार्दवता का अनुगामी है इसलिए मार्दवता समस्त गुणों को आप्तत्व प्रदान करती है। अत: विनयी बनना एक प्रकार से समस्त गणों का उपार्जन करना है। नम्रता बहुत बड़ी उपलब्धि है।

नाऽऽर्जवो विशुद्ध्यति न धर्ममाराधयत्यशुद्धात्मा।

धर्माद्रहितो न मोक्षो मोक्षात्परमं सुखं नान्यत्।।

विनयी बनने का सत प्रयत्न करना अन्य गुणों का स्वत: उपार्जन है। विनम्रता आत्मा को जो श्रेष्ठ स्थिति प्रदान करती है, वह है सरलता अर्थात् माया से रहितता; क्योंकि माया का त्याग किये बिना चित्त विशुध्द नही होता और बिना चित्त शुद्धि के धर्माराधन नहीं हो सकता। यदि धर्माराधन नही हुआ तो फिर मोक्ष कहाँ? अत: आर्जवता अत्यन्त आवश्यक है।

विजय इसे अपने जीवन के सत्कर्मों का ही फल मान रहा था, जो ऐसे सत्संग का लाभ मिला। इतने श्रेष्ठ गुरु का योग उसे पूर्वजन्म के किसी ऋणानुबन्ध से ही हुआ होगा। विजय यह मान रहा था कि अपना गुरुदेव के साथ जन्म जन्मान्तर का संबंध है।

सतां सद्भि: योग: कथमपि पुण्येन भवति।

पुण्य बिना सत्संग प्राप्त नहीं होता और सद्गुरु का योग भी प्राप्त नहीं होता। अत: अवश्य ही यह अपने भाग्योदय का शुभ मुहूर्त है धन्य है ऐसे गुरूजन, जिनमें गुणों का प्रकाश जगमगा रहा हैं।

यस्तु यतिर्घटमान: सम्यक्त्व ज्ञान शील सम्पन्न: ।

वीर्य मनिगूहमान: शक्त्यनुरुप प्रयत्नेन।।

सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रुप रत्नत्रय से विभूषित हो कर ऐसे गुरुजन स्वयं तो मोक्षगामी होते ही हैं; किन्तु अपनी संगति में आनेवाले अन्य जीवों को भी मोक्षोन्मुख बना जाते हैं।

अपने गुरु के गुणों का चिन्तन करते-करते विजय स्वयं चिन्तनशील स्वभाव का बन गया। वह कभी गृहस्थ जीवन के सुख दुख: के बारे में सोचता , कभी संसारी जीवों के मोह लोभ के परिणामों का अवलोकन करता, कभी दु:ख पीड़ित जीवों की स्थिति पर विचार करता और फिर सोचा करता, सोचा ही करता। अन्ततोगत्वा उसकी मनोभूमि में त्याग बीज अंकुरित होने लगे, फलित होने लगे।

विजय की उदासीन और एकान्त प्रिय वृत्ति उसके माता-पिता से छिपी नहीं रह सकी। उन्होंने उसका विवाह शीघ्र करने का निश्चय कर लिया। आखिर उनके बुढ़ापे का सहारा तो वही था। और फिर पोते पोतियों का मुख देखकर घर में उनकी बाल क्रीड़ाओं का स्वप्न भी वे देख रहे थे। सच है - मोहग्रस्त जीव न जाने क्या-क्या स्वप्न देखा करता

है। उसे अपने परिवार के अतिरिक्त और कुछ नहीं सूझता। मोही जीव और जहाज पर रहा हुआ पक्षी दोनों की स्थिति एक सी रहती है। जहाज पर रहा हुआ पक्षी समुद्र में इधर-उधर उड़-उड़ कर अन्त में पुनः जहाज पर आकर बैठ जाता है, उसी प्रकार मोही व्यक्ति यदि कहीं सत्संग में चला भी गया, तो भी अन्त में वह अपने परिवार का ही सहारा लेता है। वह रह-रह कर घर-परिवार के इर्द-गिर्द भटकता रहता है। अतः विजय के माता-पिता भी बहू, पोते आदि के सुख के दिवा स्वप्नों में विचरण करते हुए मन ही मन अपने मंसूबे पूरे करने की सोच रहे थे।

इधर विजय की स्थिति कुछ अलग ही थी। उसकी युवावस्था में भी उसकी प्रौढता नज़र आती थी। वह धीर, गंभीर और विरक्त-सा बन गया था। उसकी इस स्थिति से उसके माता-पिता बहुत चिन्तित थे।

मुनिराज अपना वर्षावास पूरा कर कौशांबी से विहार कर गये। उसके कुछ समय पश्चात् पुनः एक बार कौशांबी नगरी में किन्हीं साध्वीजी महाराज का अपनी शिष्याओं के साथ आगमन हुआ। कौशांबी में पुनः एक बार धर्म ध्यान की लहर चल पड़ी। धनावह सेठ की मेधाविनी सुपुत्री विजया पर धर्मध्यान का प्रभाव छा गया। विजया अनिद्य सुन्दरी तो थी ही, पर साथ ही बुद्धिमान और अनेक कलाओं की जानकार भी थी। वह विवाह के योग्य हो गयी थी, अतः उसके माता-पिता उसके लिए किसी राजकुमार से दूल्हे का खोज रहे थे। पर व्यक्ति सोचता कुछ और है और होता कुछ और है। हम सोचते क्या है और होता क्या है? 'मेरे मन कछु और है, कर्ता के कछु और।'

कौशांबी में गुरुणीजी महाराज का आगमन क्या हुआ, जैसे विजया के लिए जीवन परिवर्तक महामंत्र सफल हो गया। विजया उनके पास नित्य जाने लगी धार्मिक अध्ययन के लिए। वह उनके त्यागी जीवन से प्रभावित होती गयी और दिन-दिन शील, चारित्र और धर्मबोध में डूबती गयी। वह वैराग्य रंग में दिन-दिन रंगती गयी। देखते-देखते गुरुणीजी का वर्षावास पूरा हो गया।

उन्हें कहाँ वहाँ घर बना कर रहना था? वे तो न यहाँ, न वहाँ। उनका कोई स्थायी निवास तो था नहीं। उन्होंने अपने विहार की तैयारी की।

जब विजया को यह ज्ञात हुआ कि साध्वीजी महाराज अब विहार करने की तैयारी में हैं, तो उसका भोला मन उनके भावी विरह की कल्पना से तड़प उठा। उसे लगा कि मैं भी उनके समान ही सर्व विरति चारित्र ग्रहण कर लूँ और उनके साथ विहार करती रहूँ। अच्छा हुआ, संसार के दलदल में फँसने के पूर्व मुझे सावधान करने के लिए गुरुणीजी महाराज का आगमन हुआ। क्या सुख है संसार में? कभी मोह, कभी वियोग, कभी अभाव और कभी संताप। सचमुच यह संसार दुःखमय ही है,संयोग वियोगमय है और भोग रोगमय है। देखो तो, मेरा पड़ोसी पुत्र विरह से दुःखी है, तो वे चाचा पुत्रों के दुष्ट व्यवहार से दुःखी हैं। मेरी मामी बहू के दुर्व्यवहार से दुःखी है, तो मेरी वह बहन अभावग्रस्त जीवन से दुःखी है। इस संसार में कहीं भी सुख की छाया तक दिखाई नहीं देती। किसी भी संसारी का हृदय टटोलने पर वहाँ दुःख की आर्तध्वनि ही सुनाई देती है। क्यो न इस भवार्णव में डूबने से पूर्व सत्संग की नाव पर चढ़कर मै स्वयं को मोक्ष की ओर ले जाऊ? और उसने मन ही

मन विवाह न कर शील व्रत पालन करने का संकल्प कर लिया।

गुरुणीजी ने अपना सामान पोटले में बाँधा और पोटला उठाकर वे उपाश्रय से बाहर निकली ही थीं कि उन्हें अपने सामने रास्ता रोके विजया दिखाई दी। उसकी आँखो में आँसू थे और उसका गला रुंध गया था। वह बोलना चाहती थी, पर बोल नहीं पा रही थी। अन्त में सिर झुकाकर हाथ जोड़कर उसने कहा— "आप यहीं रहिये। क्या आप मुझे विरह की आग में तड़पाना चाहती है? मैं आपके बिना नहीं रह सकूँगी।"

विजया की आग्रह भरी वाणी सुनकर गुरुणीजी भी गद्‌गद् हो गयीं। विजया के स्नेह को देखकर एक बार क्षणभर के लिए वे भी भाव विहवल हो गयी। फिर तुरन्त उन्होंने स्वयं को स्महाल लिया। विजया के सर पर स्नेहिल हाथ रखकर वे बोल पड़ी—

विजया! तू नहीं जानती कि हम साधु है? न तो हम किसी एक जीव के बँधे हैं और न किसी एक घर के। इसी प्रकार न हम लोग किसी एक गाँव से ही बँधी हैं हमारे लिए तो यहसारा संसार ही घर है। संसार के समस्त जीव हमारी दया के आकांक्षी हैं। संसार के भँवर में चक्कर लगाते जीवों को सहारा दे कर उन्हें मोक्ष मार्ग की ओर लगाना हमारा काम है। संसार का प्रत्येक जीव हमें प्रिय है। सर्वज्ञ वीतराग प्रभु की आज्ञा हमारा पार पत्र (पासपोर्ट) है।

संयोग से तुम मेरी संगति में आ गयी।संस्कार, पूर्व पुण्योदय आराधना, निष्ठा, श्रध्दा आदि ने तुम्हारे लिए मार्ग निर्माण कर दिया अब तुम शीलव्रत की आराधना करके अपने जीवन को सफल बनाओ। हमारा तुम्हें हार्दिक आशीर्वाद है। हम तुम्हे पुन: मिले या न भी मिले, यह कोई निश्चित नहीं है। सब संयोग की बात है। जाओ, मन छोटा मत करो, प्रसन्न रहो और चार महीने की जमा पूँजी से आराधना का सफल व्यापार करो।

यदि हो सके तो परमात्मा के मार्ग का अनुसरण - अनुगमन करने के लिए दृढता पूर्वक शीलव्रत को धारण करो।साधना का मार्ग अपनाओ, संसार के मोहजाल को तोड़ने का सतत प्रयत्न करो, जीवन को तप से तपाओ, धर्म से सुवासित करो और शील से सजाओ और चतुर्थ अणुव्रत का अक्षय पालन कर चरम उत्कर्ष को प्राप्त करो। जब तक शील नहीं आयेगा, आगे की गाड़ी नहीं मिलेगी। शास्त्रकारों ने कहा है—

सीलं धम्म निहाणं, सीलं पावाणं खंडियं भणियं।
सीलं जन्तूण जगति, आकित्तिमं मंडणं नेयं।।
नरयदुवार निरुंधण कमाड
सुरलोग धवल मंदिरे आर हणे पवर निस्सेणी।।

शील धर्म निधान है। 'शीलं परमभूषणम्' - सबसे श्रेष्ठ आभूषण शील ही है। शील एक ऐसा गहना है जो मनुष्य के लोकोत्तर जीवन का श्रृंगार करता है औरउसका मूल्य चुका कर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

शील को पापभंजक बताया गया है। संसार में प्राणियों का अकृत्रिम आभूषण शील ही है।

शील नरक गति के द्वार बन्द करने की अर्गला है। इसके रहते जीव नरक गति में कभी नहीं जाता। शील देवलोक के धवल मंदिर में आरोहण करने के लिए श्रेष्ठ सीढी है -मणिमय सोपान परंपरा है। (शेष अगले अंक में)

ज्ञान कसौटी (१५)

- श्री. महेन्द्र जे. संघवी (थाने)

(स्वाध्यायी पाठक निम्मांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः एक कागज पर लिखें, फिर इसी अंक में पृष्ठ - १८ - पर दिये उत्तरों से मिलान करें। -- सम्पादक)

३५१) एक समय में उत्कृष्ट कितने तीर्थंकर विचरते हैं ?
३५२) एक समय में जघन्य कितने तीर्थंकर विचरते हैं ?
३५३) जैन धर्म की शुरुआत कब से हुयी ?
३५४) अवसर्पिणी काल और उत्सर्पिणी काल कितने समय के होते हैं ?
३५५) महाविदेह क्षेत्र के तीर्थंकरों का आयुष्य कितना होता हैं ?
३५६) एक पूर्व याने कितने वर्ष ?
३५७) भरत-ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का उत्कृष्ट आयुष्य कितना होता हैं ?
३५८) भरत-ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरो का जघन्य आयुष्य कितना होता है ?
३५९) कौन से जीव तीर्थंकर नाम कर्म का बधं कर सकते हैं ?
३६०) चक्रवर्ती मृत्यु के बाद कौनसी गति में जाता हैं ?
३६१) बलदेव मृत्यु के बाद कौनसी गति में जाता हैं ?
३६२) वासुदेव मृत्यु के बाद कौनसी गति में जाता हैं ?
३६३) प्रतिवासुदेव मृत्यु के बाद कौनसी गति में जाता हैं ?
३६४) इस अवसर्पिणी काल में दीक्षा न लेने वाले चक्रवर्ती कौन से हैं ?
३६५) प्रथम चक्रवर्ती भरत का आयुष्य कितना था ?
३६६) अंतिम चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त का आयुष्य कितना था ?
३६७) बलदेव और वासुदेव में क्या सबंध होता हैं ?
३६८) बलदेव और वासुदेव का वर्ण कैसा होता हैं ?
३६९) पहले त्रिपृष्ठ वासुदेव और अंतिम कृष्ण वासुदेव का क्रमशः आयुष्य कितना था?
३७०) जिस वक्त चक्रवर्ती विद्यमान होता हैं, उसके समकालीन समय में क्या वासुदेव होता हैं ?
३७१) क्या वासुदेव, बलदेव और प्रति वासुदेव समकालीन समय में होते हैं ?
३७२) चौमासी प्रतिक्रमण वर्ष में कितनी बार आता हैं ?
३७३) अब हम किस द्विप पर रह रहे हैं ?
३७४) जंबुद्वीप का आकार कैसा हैं ?
३७५) क्या जैन दर्शन यह मानता हैं कि - पृथ्वी नारंगी जैसी गोल हैं ?

मां का दूध बनाम गाय का दूध

तत्व (१००) ग्राम दूध की मात्रा में)	मां का दूध	गाय का दूध
ऊर्जा	३०० किलो जूल्स	२८० किलो जूल्स
प्रोटीन	१.१ ग्राम	३.६ ग्राम
केसीन	०.४४ ग्राम	२.९ ग्राम
लेक्टाल-भूमिन	०.६७ ग्राम	०.६५ ग्राम
लेक्टोस	६.८ ग्राम	४.९ ग्राम
फैट (घृतांश)	४.५ ग्राम	३.६ ग्राम
पोलीअन		
सेचुरेटड	०.७ ग्राम	०.१४ ग्राम
मोनोसेचुरेटेड	२.१ ग्राम	१.१ ग्राम
सेचुरेटड	१.७ ग्राम	२.१ ग्राम
कोलेस्ट्रोल	२० मि.लि. ग्राम	११. ३ मि. ग्राम
विटामिन ए	१८९.८ आई. यू.	११४.७ आई यू.
विटामिन डी	२.२ आई यू.	४.० आई. यू.
विटामिन ई	०.२७ आई यू.	०.१५ आई यू.
विटामीन सी	४.३ मि. ग्राम	१.० मि. ग्राम
फोलासीन	५.२ माइक्रोग्राम	५.५ माइक्रोग्राम
नाईसीन	०.१५ मि. ग्राम	०.९५ मि. ग्राम
रीबोफ्लेविन	०.०३६ मि. ग्राम	०.१८ ग्राम
थाईअमीन	०.०१६ मि. ग्राम	०.०३ मि. ग्राम
विटामिन बी-६	०.०१ मि. ग्राम	०.०५ मि. ग्राम
विटामिन बी-१२	०.०३ माइक्रोग्राम	०.५३ माइक्रोग्राम
विटामिन के	१.५ माइक्रोग्राम	०.६ माइक्रोग्राम
कैल्शियम	३४ मि. ग्राम	१२२ मि. ग्राम
फासफोरस	१४ मि. ग्राम	९६ मि. ग्राम
आयोडीन	३ माइक्रोग्राम	४.७ मि. ग्राम
लोहा	०.०२ मि. ग्राम	०.०५ मि. ग्राम
मैंगनीज	४ मि. ग्राम	१.२ मि. ग्राम
जस्ता	०.१६ मि. ग्राम	०.४ मि. ग्राम
तांबा	२४ माइक्रोग्राम	३० माइक्रोग्राम
सोडियम	०.७ मि. ग्राम	२.२ मि. ग्राम
पोटेशियम	१.३ मि. सममात्र	३.८ मि. ग्राम
क्लोराइड	१.१ मि. सममात्र	२.८ मि. ग्राम

✧ ✧ ✧

कर्तव्य महान है

उंचे पद पर प्रतिष्ठित होने मात्र से व्यक्ति महान नहीं बनता । व्यक्ति की महानता तो उस पद के प्रति वफादारी में होती है । पद के अधिकार के साथ ही पद की जवाबदारियाँ भी बढती है । आज पद के अधिकार पाने के लिए दौड़ चल रही है जबकि उन पदों के कर्त्तव्य पालन की उपेक्षा की जा रही है । पूर्व में लोग कर्त्तव्य पालन के लिए लड़ते थे । जबकि आज की लडाई अधिकार पाने के लिए है । जीवन कर्त्तव्य प्रधान होना चाहिये । अधिकार प्रधान नहीं ।

✧ ✧ ✧

वस्त्रों का प्रदर्शन

मानव की मनोवृत्ति में कितना परिवर्तन आ गया है ! तन ढकने के कपड़े वह दूसरों को दिखाने के लिए पहन रहा है । सचमुच जो वस्त्र मर्यादा रक्षण के लिए थे, उन्हीं वस्त्रों से मानव अपनी मर्यादाओं को तोड़ रहा है । आज वस्त्र को प्रदर्शन की वस्तु बना देने से जो नुकसान हुआ है उसका हिसाब लगाना कठिन है । क्या अपहरण, बलात्कार आदि की घटनाओं के पीछे युवति का उद्भट वेष जवाबदार नहीं है ।

मुनिराज
श्री रत्नसेनविजयजी म.सा.

✧ ✧ ✧

श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी कृत चतुर्विंशति जिन स्तवन (धारावाहिक)

श्री धर्मनाथ जिन स्तवन (१५)

विवेचन-मुनिराजश्री जयानंदविजयजी

धरम धरम जग ढूंढे धरण में, धरम नुं धरे नहीं ध्यान दमीसर ।
ध्यान धर्यो जिणे धर्म जिणंद नो, लहे ते निर्मलज्ञान दमीसर ॥
धर्म जिनेश्वर दिल धरी ध्याइए ॥ टेर ॥ १ ॥
चंचलता सविवारे चित्ततणी, अंतर मुहूर्त अबीह । दमीसर ।
भवभ्रम भेद भली परे भावा लोपे लोभनी लीह । दमीसर । धर्म. ॥२॥

हे इंद्रियों के दमन करनेवाले धर्मनाथ भगवंत ! इस जगत में अनेक लोग ऐसे हैं जो पृथ्वी पर परिभ्रमण करते हुए धरम-धरम करते धरम को ढूंढे रहे हैं ।

कोई स्व स्व मान्यतानुसार धरम कर रहे हैं तो कोई धर्म कहां है उसे खोजने में व्यस्त है । पर वास्तविक धर्म की प्राप्ति न होने से वे धर्म का ध्यान नहीं करते । जिन्होंने धर्म जिनेश्वर के स्वरुप को समझकर धर्म जिनेश्वर का ध्यान धर लिया है । वे आत्माएँ निर्मल ज्ञान को प्राप्त कर लेती है ।

जहां देवाधिदेव के वास्तविक स्वरुप को समझ लिया एवं जिनाज्ञानुसार जीवन यापन होने लगा कि वह चित्त की चंचलता को परिपूर्णरुप से दूरकर अंतर्मुहूर्त में भव संसार के भ्रम की परिपूर्ण रीति से विचारणा करता हुआ लोभ की रेखा को दूर कर देता है ।

लोग अपने मतपक्ष को तज कर जिन मत का स्वीकार करते हैं । ऐसी विमल निर्मल जिनवाणी पर मुझे पूर्ण विश्वास है ।

आज्ञा अपाय विपाक रु आकृति, अछे आलंबन एह । दमीसर ।
आदरे चोथे या बात अष्ट मे, शिव सुख साधे रे जेह दमीसर । धर्म. ॥३॥
अर्थ अर्थान्तर शब्द शब्दान्तरे, योग योगान्तर यात दमीसर ।
अष्टम स्थान थी उपशम आदरे , निश्चल बात दमीसर । धर्म.॥४॥
ध्यानान्तर थई केवल पद वरे, राजे सूरि राजेन्द्र दमीसर ।
अक्रिय भाव भजे तिहां आतमा, निर्मल सिद्ध मुनीन्द्र । दमीसर । धर्म. ॥५॥

धर्म ध्यान के चार भेद (१) **आज्ञा विचय** = जिनाज्ञा रुप प्रवचन सिद्धांत के चिंतन / विचार में सतत दत्त चित्त रहना (२) **अपाय विचय** = संसार में अपाय अर्थात् पतन के कारणों का विचार करते हुए उनसे बचने का उपाय करना ।(३) **विपाक विचय** = शुभाशुभ कर्मो के फल का विचार करना । (४) **संस्थान विचय=** चौदह राजलोक में आत्मा ने जन्म मरण किये हैं , ऐसे लोक स्वरुप का चिंतन करना ।

इन चार प्रकार के धर्म ध्यान के आलंबन के द्वारा आत्मा शिवसुख की साधना प्रारंभ कर देता है। चतुर्थ गुणस्थानक से आरंभ कर आठवें गुणस्थानक पर उपशम या क्षपक श्रेणि करता है। श्रेणि करने वाला अर्थ का विचार करता हुआ अर्थ का रहस्य का विचार करता है शब्द का विचार चिंतन करता हुआ शब्द के रहस्य का चिंतन करता है। योग का विचार करता हुआ योग के रहस्य का चिंतन करता है । इस प्रकार अर्थ से अर्थान्तर, शब्द से शब्दान्तर एवं योग से योगान्तर में जाता है .

जो उपशम श्रेणि करता है वह ग्यारहवें गुण स्थानक पर आयु क्षय करता है तो सर्वार्थ सिद्ध विमान में जाता है काल से गुणस्थानक के समय को पूर्ण करता है तो निचे गिरता है । चौथे, पांचवें, छट्ठे, सातवे में अटक / रुक जाता है तो ठीक नहीं तो प्रथम गुण स्थानक पर भी चला जाता है ।

आठवें से क्षपक श्रेणी करनेवाला दसवें गुण स्थानक से बारहवें गुण स्थानक पर जाकर घाती कर्मो

का सर्वथा क्षय कर ध्यानान्तर होकर केवल पद अर्थात् केवल ज्ञान को प्राप्त कर लेता है । (केवलज्ञानियों को किसी भी प्रकार का ध्यान करने का न होने से ध्यानान्तर कहा है, एवं केवलज्ञान प्राप्ति के समय शुक्ल ध्यान के प्रथम एवं द्वितीय भेद का ध्यान होता है। केवल ज्ञान की प्राप्ति के बाद कोई ध्यान नहीं होता। शुक्ल ध्यान का तृतीय भेद आयुष्य की पूर्णता के पूर्व अन्तर्मुहूर्त काल में होता है और चतुर्थ भेद चौदहवें गुण स्थानक में योगों की सर्वथा अक्रियता के समय होता है ।)

केवलज्ञान प्राप्त करने वाले एक तो तीर्थंकर भगवंत के रुप में शोभायमान होते हैं दूसरे सामान्य केवल ज्ञानी के रुप में शोभायमान होते है .

शुक्ल ध्यान के तृतीय भेद में योग निरोध कर चतुर्थ भेद में अक्रिय बनकर निर्मल सिद्ध पद पाकर मुनियों के इन्द्र बन जाते हैं या वे मुनीन्द्र निर्मल सिद्ध बन जाते हैं ।

गुरुदेवश्री ने इस स्तवन में आत्मा की उन्नति का मार्ग एवं क्रम दर्शाया है । चित्त की चंचलता का निवारण कर धर्म ध्यान में चित्त को स्थिर कर, संसार के स्वरुप का विचारक बनकर, सम्यग्दर्शन प्राप्तकर,सम्यदर्शन के बल से धर्म ध्यान के विशेष चिंतन से श्रेणि प्राप्तकर , निर्मल केवल ज्ञान को प्राप्त कर, मोक्ष सुख को पा लेता है ।

इसी अंकमे पृष्ठ १५ पर प्रकाशित ज्ञान कसौटी (१५) के उत्तर

१) १७०, २) २०, ३) अनादिकाल से ४) प्रत्येक १० क्रोड़ा क्रोड़ी सागरोपम का , ५) चौरासी लाख पूर्व, ६) ७०५६० अरब वर्ष, ७) ८४ लाख पूर्व, ८) ७२ वर्ष, ९) सिर्फ कर्मभूमि के मनुष्य,१०) दीक्षा ले तो देवलोक या मोक्ष में और न ले तो नरक में ,११) देकलोक या मोक्ष में ,१२) नरक, १३) नरक,१४) सुभूम और ब्रह्मदत्त,१५) ८४ लाख पूर्व, १६) ७०० वर्ष,१७) भाई-भाई का, १८) क्रमशः गोरा और श्याम,१९) ८४ लाख वर्ष व एक हजार वर्ष, २०) नहीं,२१) हाँ, २२) तीन, २३) जंबुद्वीप, २४) थाली जैसा गोल , २५)नहीं,

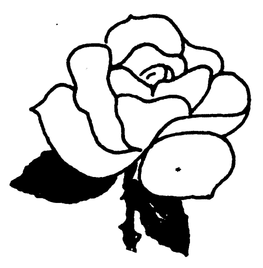

फोटो विवरण पृष्ठ ४८ पर प्रकाशीत

'नमो' या 'णमो'

– श्री विमलकुमारजी चौरड़िया

जैन समाज में परमेष्ठि नमस्कार महामंत्र का सर्वाधिक महत्व है। इसका महत्व समझाने के लिये विद्वानों को उपमाओं एवं रुपकों का आश्रय लेना पड़ता है फिर भी उसका महत्व नहीं समझ पाते हैं। 'णमोकार' महामंत्र – पाप रुपी पर्वत को भेदने के लिये वज्र के समान है; कर्म रुपी वन को भस्म करने के लिये दावानल है; दु:ख रुपी बादलों को बिखेरने के लिये प्रचण्ड पवन है; मोह रुपी दावानल को शान्त करने के लिये नवीन मेघों के समान है; अज्ञान रुपी अन्धकार को नष्ट करने के लिये दोपहर के सूर्य के समान है; कल्याण रुपी बेल का उत्कृष्ट बीज है; सम्यकत्व रुपी रत्न के उत्पन्न होने के लिये रोहणचलकी धरती के समान है।

इस प्रकार के महाफल को प्राप्त करने के लिये अन्य सावधानी के साथ मंत्र का शुद्ध जानना, शुद्ध उच्चारण करना, तथा अस्खलित, अमिलित अहीनाक्षर, अन्य अक्षर को जोड़े बिना, उचित गति व उत्तर के साथ बोलना आवश्यक है।

महर्षियों ने जाप के लिये कई मंत्र भिन्न भिन्न आशयों के लिये बनाये हैं। उसमें कई बीजाक्षर हैं। यह विषय अपने आप में अलग विवेचन की अपेक्षा रखता है। यहाँ कुछ शब्दों के आंशिक प्रभाव का वर्णन करेंगे तथा 'नमो' और 'णमो' के अन्तर व उसके प्रभाव का वर्णन करेंगे। मंत्र साधन हैं। अच्छे मंत्रों का श्रद्धा पूर्वक, लयबद्ध, शुद्ध, आत्म निष्ठा तथा संकल्प शक्ति के समन्वय के साथ किया गया जाप अत्यन्त शक्तिशाली हो जाता है। ऐसा जाप पलक झपकें इतने समय में समस्त भूमण्डल ही नहीं १४ राजूलोक में अपना उद्देश्य प्रसारित कर देता है। जाप के शब्दों की स्पन्दित तरंगों का एक चक्र (सर्कल) बनता है।

जिस प्रकार इलेक्ट्रो मेगनेटिक तरंगों की शक्ति से अन्तरिक्ष में भेजे गये राकेट की उड़ान को धरती पर से ही नियंत्रित कर सकते हैं, उसकी यांत्रिक खराबी दूर कर सकते हैं, लेसर किरणों की शक्ति से मोटी चद्दरों में छेद कर सकते हैं, उसी प्रकार एकाग्रता से मंत्रों के जाप से निकली तरंगों से, मंत्र योजकों द्वारा बताये गये वांछित कार्य किये जा सकते हैं।

जाप प्रक्रिया के साधक को और वातावरण को प्रभावित करने की दोहरी शक्ति है।

जाप करने वाला मन के निग्रह से सोर विश्व के प्राण मण्डल में स्पन्दन का प्रसार कर देता है। मन एक प्रेषक यंत्र (transmitter) की तरह कार्य करता है। मन रुपी प्रेषक यंत्र से प्राण रुपी विद्युत द्वारा विश्व के प्राण मण्डल में स्पन्दन फैलाया जाता है जो उन जीवों के मन रुपी यंत्रों (Receivers) पर आघात करता है जिनमें जाप करने वाले योगी कोई भावना जगाना चाहते हैं। क्यों कि वाणी का मन से; मन का व्यक्तिगत प्राण से

और अपने प्राण का विश्व के समष्टि प्राण से उत्तरोत्तर सम्बन्ध है। इसीलिये मंत्रों की रचना में विशेष प्रकार के वर्णों और शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिनके प्रभाव से विशेष शक्ति को जगा देने वाले स्पन्दन प्राणमय जगत में आन्दोलन करते हैं।

जहाँ तक साधक को प्रभावित करने की स्थिति हैं; – मंत्रों के जाप से मनुष्य के शरीर की ग्रन्थियों का स्राव संतुलित हो जाता है; स्नायु संस्थान व्यवस्थित हो जाता है; भावों की शुद्धि होती है; कुछ ग्रन्थियां हारमोन्स उत्पन्न करती है जिससे मनुष्य की बीमारियां दूर हो जाती है; मनुष्य की बीमारियां व संकटों का अवरोध करने की शक्ति बढ़ जाती है तथा मनुष्य स्वस्थ होकर विशेष आभामण्डल से युक्त हो जाता है। मंत्राक्षरों में 'ओऽम्' शब्द का बहुत उपयोग होता है। 'ओऽम्' शब्द का लम्बा, मधुर उच्चारण करने से निम्नलिखित स्थिति बनती है :–

मूलाधार से अपान वायु व नाड़ियां ऊपर की ओर खिंचेगीं साथ ही प्राण वायु मुख से अन्दर ली जावेगी जो छाती में इकट्ठी हो जावेगी। 'ओऽम्' का पूरा उच्चारण होने पर मुँह बन्द हो जावेगा, मूलाधार के वहाँ मूलबन्ध हो जावेगा; नाभि = मणिपूर चक्र हल्के से पीठ की तरफ दबेगा और अनाहत चक्र के पास छाती में प्राण वायु और अपान वायु का कुम्भक हो जावेगा।

इस क्रिया से भिन्न–भिन्न चक्रों के जागृत होने के साथ शरीर की भिन्न–भिन्न ग्रन्थियों से जो स्राव होगा उसके फल स्वरूप सारे शरीर में जो प्रतिक्रिया होगी उससे बूढ़ा भी जवान हो जाता है। 'गोरक्ष पद्धति' के अनुसार :–

'अपान प्राणयोरेक्यात् क्षयो मूत्र पुरिपयोः।
युवा भवति वृद्धोऽपि सततं मूल बन्धनात्॥'

अपान और प्राण वायु का ऐक्य कर जो निरन्तर मूल बन्ध का अभ्यास करता है, उसके मल मूत्र क्षय होते हैं और बूढ़ा भी जवान हो जाता है।

इसी प्रकार 'ह्रीं' शब्द भी बिजाक्षर है। इसके मधुर, नाद पूर्ण उच्चारण से उपरोक्त क्रिया के साथ मणिपूर चक्र पर विशेष दबाव पड़ता है, उसे जागृत करता है। मणिपूर चक्र नाभि के वहाँ है। यह चक्र अग्नि तत्व का है। उर्जा का केन्द्र है। यही वह केन्द्र है जहाँ से भोजन सामग्री, औषधियाँ अपना रस बनाकर शरीर को पुष्ट करती है। इसके अतिरिक्त इसके अन्य कई लाभ हैं।

नमस्कार महामंत्र में कई महानुभाव 'णमो' शब्द के स्थान पर 'नमो' शब्द का उपयोग करने लग गये हैं।

'णमो' और 'नमो' का शब्दार्थ एक ही है। इसमें नमन, विनय, समर्पण आदि का भाव है। 'नमो' शब्द भी विनय रुप होने से लौकिक में कार्य सिद्धि का हेतु बन जाता है किन्तु नमस्कार महामंत्र में केवल लौकिक ही नहीं अपितु पार लौकिक कार्य सिद्धि का

तथा शारीरिक स्वस्थता का हेतु छिपा हुआ है। अत: उस अपेक्षा से नमस्कार मंत्र के 'णमो' शब्द का रहस्य, उपयोगिता व फल जानना आवश्यक है।

साधारण रुप में प्रत्येक शब्द चाहे किसी भाषा का हो, मंत्र है। अक्षर अथवा अक्षर के समूहात्मक शब्दों में अपरिमित शक्ति निहित है।

मंत्रो से वांछित फल प्राप्त करने के लिये मंत्र योजक की योग्यता, मंत्र योजक की शक्ति, मंत्र के वाच्य पदार्थों की शक्ति, उन वाच्य पदार्थों से होने वाले शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सौरमण्डलीय शक्ति का प्रभाव तो है ही साथ ही मंत्र साधक की शक्ति, आत्मा में स्थित भाव, अखण्ड विश्वास, निश्चल श्रद्धा, आत्मिक तेज, मंत्र की शुद्धि, मंत्र की सिद्धि आदि का विचार भी आवश्यक है।

णमोकार महामंत्र मूल में प्राकृत भाषा में है। प्राकृत भाषा और संस्कृत का अन्तर कर्पूर मन्जरी १/७ में निम्नलिखित है :-

'परुसो सक्क अबंधो पउ अबंधो वि होउ सुउमारो।
पुरिस मलिहाणं जेत्ति अमिंहतरं तेत्ति अमिमाणं॥'

संस्कृत रचनाएं कठोर होती हैं और प्राकृत रचनाएं सुकुमार पुरुषों और महिलाओं में जितना अन्तर है उतना ही इन दोनों भाषाओं में है।

जिस प्रकार भाषा प्रेमियों को 'शरण' के स्थान पर 'सरन'; 'चरण' के स्थान पर 'चरन'; 'व्याकरण' के स्थान पर 'व्याकरन' अप्रिय लगते हैं उसी प्रकार शुद्ध मंत्रोच्चार करने वालों को तथा मंत्रों से सम्बन्धित देवताओं को 'णमो' के स्थान पर 'नमो' अप्रिय लगते हैं। परिणाम में साधक वांछित लाभ नहीं पा सकता। इसीलिये निशीथ चूर्णी में गलती करने वाले साधुओं के लिये पारांछित प्रायश्चित बताया है। उसमें १२ वर्षों तक अपने साधु जीवन को छिपा कर अन्य लिंगी वेश में विचरण करना पड़ता है जैसा श्री सिद्धसेन दिवाकरजी ने किया था।

यहाँ हम 'ण' और 'न' के अन्तर को जानकर उससे होने वाले प्रभाव पर विचार करेंगे। दोनों का मुख्य अन्तर निम्नलिखित है :-

भाषा विज्ञान के अनुसार प्रत्येक अक्षर का अपना-अपना स्वरूप होता है। जिस प्रकार किसी व्यक्ति का स्वरूप (Personality) में उसका आकार, शरीर रचना, चाल ढाल, व्यवहार, आचरण सब सम्मिलित होते हैं जिसका अपना प्रभाव होता है, वैसे ही अक्षर के स्वरूप में उसकी समस्त बातें सम्मिलित रहती है जिसका अपना प्रभाव होता है।

''शास्त्रों में 'ण' शब्द का स्वरूप 'व्योम' बताया है। व्योम = आकाश - में व्यापकता, विशालता, अवगाहन देने की, कम्पनों को प्रवाहित करने आदि की योग्यता है उसी प्रकार 'ण' शब्द के निरन्तर जप से होने वाले कम्पन अपने स्वरूप के साथ ध्वनि

तरंगों पर आरोहित होकर सौर मण्डल में विस्तारित होकर सौर मण्डल में छिपी शक्तियों को प्रभावित करते हैं। 'न' शब्द तो 'शून्यम्' स्वरूप वाला है उसका प्रभाव वैसा ही होगा। व्यवहार में भी हम देखते है कि 'न' शब्द लगने पर वह कार्य शून्य हो जाता है। 'जाना' 'गया' 'आना' शब्दों के आगे यदि 'न' लगा दिया जाय तो वह उन शब्दों को शून्य कर देता है।''

'न' दन्त्य वर्ण है।

'ण' तालव्य वर्ण है।

'न' बोलने पर जीभ की नोक ऊपर के दांतों के पीछे लगती है; बोलने पर जीभ में किसी प्रकार का खिंचन नहीं आता है।

'ण' बोलने पर जीभ की नोक का पिछला भाग तालु के कठोर भाग (Hard Plate) को छोड़कर तालु के मध्य–भाग मूर्धा (Cerebrum) से रगड़ता है इसीलिये 'ण' को मूर्ध्यन्य भी कहा है।

'ण' बोलने से जीभ में हलका सा खिंचन आता है। यह हलका सा खिंचन एवं तालु के मध्य भाग पर जीभ का एक नवकार् मंत्र में १४ बार रगड़ना सारे शरीर की तंत्रिकाओं और ग्रन्थियों को प्रभावित करता है।

जीभ को तालु की ओर मोड़कर लगाना आंशिक खेचरी मुद्रा है। खेचरी मुद्रा से विकल्पों का प्रवाह चल रहा है तो 'खेचरी' मुद्रा करना चाहिये। 'ण' के उच्चारण में यह सहज ही होता रहता है।

जीभ का सम्बन्ध कपाली तंत्रिकाओं (GLOSSOPNARYNGEAL NERVE) कहलाती है। इसका सम्बन्ध जीभ और कण्ठ की पेशियों से है। यह जीभ तथा ग्रसनी में फैली हुई है। दूसरी तांत्रिक अधोजीभ (BYPOGLOSSAL NERVE) कहलाती है। यह जीभ की पेशियों का संचालन करती है और जीभ के नीचे रहती है। इसके सूत्र मेरू रज्जु और मेरू शीर्ष (MEDULLA OBLONGATA) दोनों से निकलते हैं। इसके तन्तु जीभ की पेशियों में जाते है। इसका प्रभाव यह होता है कि नाभि से लेकर मस्तक तक सुषुम्ना नाड़ी व अन्य नाड़ियां व भिन्न–भिन्न चक्र प्रभावित होकर अपना–अपना कार्य करने लगते है।

इसके साथ ही 'ण' शब्द के लय बद्ध बार–बार बोलने से जीभ का तालु से घर्षण होता है। तालु मस्तिष्क की निचली परत है। शरीर के अन्दर जो कोशिकाएं है वे क्षोभ शीलता (IRRITABILITY) वाली है। लय बद्ध घर्षण से तालु की व जीभ की कोशिकाओं में क्षोभशिलता होने से व कपाली तंत्रिकाओं में हलन चलन होने से कपाल की ग्रन्थियों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। मस्तक की पीनियल (नैत्र) व पिट्यूटरी (पियूष) ग्रन्थियां व अन्य ग्रन्थियां प्रभावित होकर स्राव करने लगती है। पीनियल ग्रन्थिया का महत्वपूर्ण कार्य

गोनाडस् (काम ग्रन्थियों) के स्रावों को रोकना है। यह ग्रन्थि शैशवास्था में व्यक्ति की कामवृत्ति का नियमन कर उसे यौवन प्राप्ति तक उससे मुक्त बनाये रखती है। यौवन प्राप्ति के बाद यह ग्रन्थि यौवनौचित वयस्कता को लाने में सहायक बनती है। पिट्यूटरी ग्रन्थि समस्त अन्तःस्रावी तंत्र की अधिनायक है। यह कई हारमोन्स उत्पन्न करती है; अन्य ग्रन्थियों का नियंत्रण करती है, यह उनकी शासक है। उन ग्रन्थियों से क्रिया करने वाले उत्तेजक हारमोन्स को यह उत्पन्न करती है। अभी तक की खोज के अनुसार यह ग्रन्थि – अस्थियों की वृद्धि के लिये जननेन्द्रिय की वृद्धि के लिये, अवटुकाव परावटुका के लिये, अधिवृक्कों के लिये, स्तन में दूध की उत्पत्ति के लिये, कारबोहाइड्रेट के पाचन व चिकनाई के पाचन के लिये, आग्नाशय को क्रियाशील करने के लिये, कारबोहाइड्रेट तथा चिकनाई के स्वांगीकरण के लिये, यकृत के लिये, रक्तकणों की उत्पत्ति तथा मधुमेह का नियंत्रित करने आदि के लिये यहीं से हारमोन्स बनते है। इसके प्रभाव से शरीर का कोई भी भाग अछूता नहीं है। थाइराइड, एड्रेनल, कार्टेक्स तथा गोनाड्स् को प्रेरित या निरोध करनेवाले हार्मोन्स के स्राव पिट्यूटरी ग्रन्थि से ही होते है।

योग शास्त्र के अनुसार शरीर का कोई अंग ऋण विद्युत की प्रधानता वाला है और कोई अंग धन विद्युत की प्रधानता वाला है। जीभ ऋण विद्युत की प्रधानता वाली है तथा मस्तिष्क धन विद्युत का केन्द्र है। तालु मस्तिष्क की निचली परत होने से जीभ का तालु पर घर्षण होने से ऋण विद्युत और धन विद्युत का मिलान होने से तरंगे प्रवाहित होकर आज्ञा चक्र को जागृत करती है। जीभ को भावना पूर्वक तालु के मध्य भाग से लगाने पर आत्मरति जैसा उद्देश्य पूरा होता है। योगियों के अनुसार तालु के मूल भ्रू मध्य में आज्ञा चक्र है, वहाँ चन्द्रमा का स्थान है, उसका मुख नीचे की ओर है, वह अमृत की वर्षा किया करती है। उस अमृत वर्षा से देह की नाड़ियां भर जाती है। एवं योगी का शरीर दिव्य बन जाता है। उपरोक्त वर्णित हारमोन्स का भी यही प्रभाव है।

णमोकार महामंत्र में 'ण' शब्द का प्रयोग १४ बार हुआ है। एक माला जपने में 'णो' शब्द का बार–बार (१५१२ बार) लय बद्ध उच्चारण करते रहने से जीभ क्रमशः तालु से लगती रहती है उसके फल में आज्ञाचक्र को जागृत करती है।

इस प्रकार 'ण' शब्द का बार बार उच्चारण करने से ये सब लाभ सहज में हो जाती हैं। इससे शरीर की आध्यात्मिक मानसिक एवं शारीरिक पुष्टता के साथ बीमारियों को रोकने की अवरोधक शक्ति बढती है तथा बीमारियां हो तो दूर हो जाती है। यही कारण है कि कई महानुभाव कहते है कि नमस्कार मंत्र के जाप से उनकी अमुक–अमुक बीमारी दूर हो गई। जामनगर के शा. गुलाबचन्द खीमचन्द का उदाहरण उल्लेखनीय है। वे केन्सर के रोगी थे। अपने आत्मकथांश में केन्सर की मारक, दाहक व्यथा का मर्म भेदी ब्यौरा देकर बताते हैं कि जब वे विशेषज्ञों के उपचार से निराश हो गये तब 'णमोकार' महामंत्र के जाप से उन्हे शरण समाधान शान्ति प्राप्त हुई।

योग शास्त्र के अनुसार आज्ञाचक्र ही दिव्य नैत्र या तृतीय नैत्र है। यहाँ सुसुम्ना, इडा, पिंगला तीनों मुख्य नाडियों का सम्मेलन होता है। इसमें नैत्र जैसी सूक्ष्म संरचना है। इसकी तुलना टेलीवीजन, राडार, टेलिस्कोप की समन्वययुक्त क्षमता से की जा सकती है।

आज्ञाचक्र के जागृत होने पर व्यक्ति दृढ़ संकल्प वाला, इन्द्रियों और इच्छाओं पर नियंत्रण करनेवाला शीघ्र निर्णय लेनेवाला, दूसरों का नैतृत्व करनेवाला बनता है। इतना ही नहीं जब जाप, ध्यान, आसन, क्रियाओं की एकाग्रता से आज्ञाचक्र जागृत हो जाता है तो मनःपर्यव ज्ञान व अवधि ज्ञान तो हो ही जाते है; केवलज्ञान की भूमिका बन जाती है।

षट्चक्र निरूपणम में लिखा है कि :– ''आज्ञा चक्र को सिद्ध करनेवाला, पर काय प्रवेश करनेवाला बन सकता है। वह सबका हितकारी, शास्त्रों का ज्ञाता, ब्रह्मवेत्ता, प्रसन्नचित्त, सिद्धि विद्याओं का ज्ञाता, दीर्घायु, लोक व्यवस्था में सहायता देनेवाला बनता है।''

'णमो' शब्द का नमस्कार महामंत्र के जाप में किया जानेवाला उपयोग अनजाने में ही साधक में इस प्रकार की शक्ति उत्पन्न करता है। अतः नमस्कार महामंत्र में 'नमो' के स्थान पर 'णमो' शब्द का उपयोग ही हितकर है।

उपरोक्त कथन में किसी बन्धु का कोई विरोध हो, तर्क हो, सुझाव हो तो अवश्य सूचित करने की कृपा करें ताकि जानकारी की शुद्धि हो और ज्ञान वर्धन हो।

□ ● □ ● □ ● □ ● □

मां की ममता

प्यारे बच्चों कभी न अपनी मां का हृदय दुःखाना
प्यारी मां की प्यारी याद रख उसको शीश झुकाना
मां का दूध सुधा सा इसकी कौन लगा सकता कीमत
मां की सेवा अमर साधना वह विद्वानों का अभिमत

सारे जग में महापुरूषों ने अपनी मां का पाया प्यार
प्यारी मां की ममता का वे पाते ही रहे दुलार
जिसको अपनी मां का नहीं मिलता है प्यार
वह क्रूर और आतंकवादी बनता उसका जीवन भार

इसीलिये मातृत्व जगत में सभी जगह पूजा जाता
मां की गोद में शिशु वर्ग का मन भी हर्षित हो जाता

– **श्री सौभाग्यमल जैन वकील (रतलाम)**

पशुओं को काटकर हम अपने आर्थिक आधार को काट रहे हैं।

— श्री पन्नालाल मुंदडा.

घोर आश्चर्य कर बात है कि जब सारी दुनिया में हिंसा की प्रवृत्तियां घट रही हैं और लोग हिंसा के दुष्परिणामों से परेशान होकर शांति की तलाश में भटक रहे हैं, ऐसे समय में महावीर, बुद्ध और गांधी के देश में हिंसा का भीषण तांडव दिनों-दिन तेजी से बढता जा रहा है।

आजादी से पहले देश में २८० कतलखाने थे जो आज २८०० से भी अधिक हो गए है। हैदराबाद में ३०० एकड़ जमीन पर एक बड़ा कतलखाना आकार ले रहा है। इसमें सिर्फ निर्यात के लिए पशु काटे जाएंगे। अमेरिकी कंपनी के सहयोग से केरल में एक २२ हजार करोड़ रुपए का कतलखाना प्रस्तावित हैं। यदि हमने अभी से इसका विरोध न किया तो सरकार चुपचाप इसे मंजूरी भी दे डालेगी। यहां तक कि चन्द स्वार्थी तत्व इस घृणित कार्य को उद्योग का दर्जा दिलाने में जुटे हैं। अज्ञानता के कारण सरकार मुर्गी पालन को उद्योग मान बैठी है और डेयरी उद्योग को दी जानेवाली ३० प्रतिशत की आर्थिक सहायता (सबसिडी) बन्द करके मुर्गी पालन को यह छूट दी जा रही है। सौन्दर्य-प्रसाधन, दवा आदि के लिए भी क्रुरतापूर्वक पशुपक्षियों का अंधाधुंध वध किया जा रहा है।

गौरतलब है कि देश के सभी कतलखाने गैर संवैधानिक और गैर कानूनी है। उनसे निकलनेवाला मांस स्वास्थ्य के लिए अति हानिकारक है। निर्यात के लिए, कृषि योग्य, लाभदायक और दुधारु पशु काटना गैर कानूनी हैं। अत: अब हमें अविलम्ब इनके खिलाफ छेडनी होगी एक कानूनी जेहाद। इसके लिए हमें कानूनी प्रकोष्ठ (लीगल सेल) की स्थापना करनी पड़ेगी। प्रकोष्ठ के लिए तथ्य जुटाने हेतु साथ में एक अध्ययन व शोध केन्द्र की स्थापना भी करनी ही पड़ेगी। इसमें लगेगी जगह, विशेषज्ञ और अनीवार्य पूंजी निवेश।

इसी तरह मांस निर्यात के समय भी हमें यह कुतर्क दिया जाता है कि आयात के सामने निर्यात को संतुलित करने के लिये हमें जो कुछ भी मिलता है, हम उसका निर्यात करते हैं। जरा सोचीये तो सही दूसरे देश अपना पशुधन क्यों नही नष्ट करते? क्योंकि वे अपने देश का आर्थिक आधार नही तोड़ना चाहते और वहा के पर्यावरण को संतुलित बनाए रखना चाहते हैं।

वस्तुत: आज का यह चंद डालरों का लाभ कितना बडा घाटे का सौदा है यह बात उस समय समझ में आएगी जब दूध ५० रुपए लिटर हो जायेगा और घी सिर्फ म्युजिएम में दिखेगा। पेट्रोल के भांडार समाप्त हो जाने के बाद पेट्रोल, पेट्रोलियम गैस (इंधन) और खाद के आयात में ही हमारा खजाना खाली हो जायेगा।

यदि हमारा पशुधन सुरक्षित रहा तो खाद, गोबर गैस का अक्षय उर्जा भंडार तथा अधिक संख्या में पशु होंगे तो उनकी प्राकृतिक मृत्यु के पश्चात चमड़ा, सींग आदि का भारी भंडार घरेलु उपयोग तथा निर्यात के लिए उपलब्ध होता रहेगा।

इसके अलावा हमारे देश में जड़ी बूटियों, हस्तकलाओं, खनिज, शाकाहारी खाद्य

पदार्थों आदि के उत्पादन और निर्यात की अनंत सम्भावनाएं हैं। गौरतलब है कि इनके निर्यात में हमारा एकाधिकार होगा फलत: हमें अंतर्राष्ट्रीय बाजार में स्पर्धा का सामना भी नहीं करना पड़ेगा।

पशुधन की रक्षा का सबसे सुगम मार्ग शाकाहार है। मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से भी शाकाहार सर्वश्रेष्ठ हैं। जब लोग मांसाहार करेंगे ही नहीं तो कतलखाने किसके लिये चलाए जाएंगे? सच तो यह है कि अहिंसा और शाकाहार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

शाकाहार से बढेंगी सात्विक वृत्तियाँ और तामसी प्रवृत्तियों में कमी होगी। फलत: दुनिया में अपराध अपने आप घटने लगेंगे। जो काम सेना, कानून और पुलिस नहीं कर पाई उसे शाकाहार के प्रचार-प्रसार से साधा जा सकता है। यहाँ तक कि तृतीय विश्व युध्द की सर्वनाशी काली छाया का भी शाकाहार के प्रकाश से चीरा जा सकता है। कहते हैं-

''जैसा खाए अन्न, वैसा हो जाए मन''

जब मन सात्विक और अहिंसा प्रिय होगा तो लड़ाई झगडे, छीना झपटी, हाय-हाय, लोभ काम आदि अपने-आप घट जाएगें। क्योंकि तब आदमी कैसे छीने? कैसे बलात्कार करें? कैसे मारे? कैसे लुटें? की बजाए आत्म चिंतन और परमार्थ की बात सोचेगा। यही तो है व्यक्ति और समाज को एक साथ सुखी बनाने का रास्ता, जिसपर चलकर विश्वशांति और विश्वबंधुत्व की कल्पना को साकार किया जा सकता है।

गोवंश को प्राथमिकता क्यों?

जब हम कोई काम हाथ में लेते हैं तो कहीं न कहीं से उसकी शुरुवात करनी पड़ती है और सबसे पहले हम सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिन्दु से ही श्री गणेश करते हैं। पशुधन की दृष्टि से गोवंश के महत्व को प्रतिपादित करने की कोई जरुरत नहीं है। वह स्वयंसिद्ध है।

हल से की जाने वाली खेती सबसे अधिक वैज्ञानिक तथा सस्ती खेती थी। अंग्रजों ने भारत जैसे कृषि प्रधान देश की अर्थव्यवस्था नष्ट कर.उसे गुलाम बनाए रखने के लिए ही हल, तेल पेरने की घानी, रहट आदि को बंद करवाया था। पशुओं के अभाव में इंडोनेशिया में तो आदमी को हल खींचना पड़ रहा है।

रासायनिक खाद से धरती की उर्वरक शक्ति घटती है और क्रमश: कम और घटिया फसल पैदा होती है। रासायनिक किटकनाशक से फसलें भी जहरीली हो जाती है और पेड, पौधों का भी हानि पहुंचती है। जबकि गोबर की खाद सर्वोत्तम होती है तथा गोमूत्र एक श्रेष्ठ कीटनाशक है। हाल ही में शोध से जो तथ्य प्रकाश में आए हैं उनके अनुसार इस तरह का अनाज आदि खाने से पशुपक्षी तक मर रहे है और मानव जाति में फैल रही है तरह-तरह की बीमारियाँ।

दूध न दे सकने वाली गाय और भैंस से भी प्रतिवर्ष ३५००कि. ग्रा. गोबर और ३००० लीटर मूत्र मिलता है। इसे ३५०० सी.एफ.टी. बायोगेस, ८० टन खाद तथा २००० लीटर किटकनाशक बनता है। इसके अलावा इनकी प्राकृतिक मृत्यु से चमड़ा, सींग, खुर, बाल, आदि अनेक चीजें मिलेंगी।

गोबर : शुध्द रोगाणुनाशक, औषधि गुण संपन्न, गृह शुद्धि, समिश्र खाद, जैविक

गैस और परमाणु विकिरण रोकने के लिए प्रयोग किया जाता है।

गोमूत्र : औषधिय महत्व रोगाणुनाशक और कीट नियंत्रक।

दूध : माँ के दूध जैसा है। और तो और पैगंबर मोहम्मद ने भी कहा है कि गाय का दूध स्वास्थ्य के लिए अति उत्तम है।

घी : इसकें केरोटिन बहुत अधिक मात्रा में होता है जो अन्य घी में नगण्य मात्रा में होता है। इसके अनेक औषधीय महत्व और स्वास्थ्यपूर्वक गुण है। इसमें पिघलने का तापमान मनुष्य शरीर के अनुपात में है अत: सुपाच्य है।

पशु शक्ति : कृषि और परिवहन में अत्याधिक प्रयोग की जाती है। श्रीमती इंदिरा गांधी ने अगस्त १९८१ में नैरोबी के उर्जा सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा था।

''इस जेट युग में लोग विगत के प्रतिकों के रुप में बैलगाड़ियों का उल्लेख करते है किंतु भारत में हमारे सभी, बिजलीघरों जिनकी अधिकतम क्षमता २२००० मेगावाट है, से अधिक शक्ति पशु प्रदान करते हैं। यदि उनको हटा दिया जाए तो बिजली उत्पादन पर और २५४० अरब डालर का पूंजी निवेश करने के अतिरिक्त कृषि अर्थव्यवस्था को खाद और सस्ते इंधन की हानि होगी।

पंच गव्य : गाय के दूध, दही, घी मूत्र और गोबर रस का मिश्रण एक स्वास्थ्यप्रद और रोगनिवारक, आसान व सस्ती उपलब्धि है।

१९८७ में डॉ. पी. एन. भट निर्देशक भारतीय पशु अनुसंधान संस्थान ने एक सम्मेलन में निम्न जानकरी दी।

''कृषि का अधिकतर कार्य बैलों से होता है। इनसे मिलने वाली उर्जा ४० हजार मेगावाट के बराबर है। इनसे देश को दो खरब सत्तर अरब (२७००० करोड़) रुपये का लाभ मिलता है। इसमें देश की ४० खग्ब की संम्पत्ति लगी हुई है।

न केवल जैन, बौद्ध या हिन्दू धर्म में बल्कि इस्लाम और ईसाई धर्म में भी गोवंश के महत्व को स्वीकारा गया है। कुरान का एक पूरा अध्याय गाय की सुरक्षा पर ही है।

चीन जैसे कम्युनिस्ट देश में तक गोवध अपराध है। अफगानिस्तान में गोवध पर कानूनी प्रतिबन्ध है। एक साल पहले बर्मा में भी गोवंश वध पर कानूनी प्रतिबंध लागू किया गया है।

जफर का हुक्म था कि ''सर कलम कर दो उसका, जो गाय का कातिल हो।'' ''तारीखे अहदे सल्तनत इंग्लिशिया'' नामक किताब के पृष्ठ १७ पर लिखा है कि यहाँ तक कि कहीं कोई बकरी ईद के अवसर पर भी यदि गाय, बैल, भैंस, बछड़ा-बछड़ी आदि में से किसी की भी कुर्बानी कर दे तो उसे तोप से बांधकर उड़ा दिया जाता था। इस तरह के अपराध हाने पर अपराधियों पर मुकदमा चलाए वगैर ही अपराधी को मृत्युदंड दे दिया जाता था।

डॉ. सयद महमूद ने अपनी पुस्तक ''काऊ प्रोटेक्शन अंडर मुस्लिम रुल ए

हिस्टेरिकल सर्वे में लिखा है कि अकबर ने अपने संपूर्ण विशाल राज्य में आदेश जारी करके गोवंश वध पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था। आइने अकबरी में इसका विस्तार से उल्लेख किया गया है।

उसके बाद जहांगीर ने भी यह हुक्म जारी किया था कि रविवार (अकबर का जन्म दिन) और शुक्रवार (जहांगिर की ताजपोशी का दिन) को और किसी भी ग्रहण वाले दिन किसी भी जानवर को न मारा जाए और न ही आखेट किया जाए।

इस्लामी गोरक्षक के अनुसार भी मुहम्मद शाह और शाह आलम जैसे भारत के शासकों ने गोवध पर प्रतिबंध लगा दिया था।

यह देखा गया है कि अरब, सीरिया, मिश्र, त्रिपोली और एशियाई तुर्की के मुसलमान गोवध नहीं करते।

सऊदी अरब में आज भी गोवध करने वालो को मृत्युदंड दिया जाता है।

ऐसे परमोपयोगी गोवंश वध पर रोक लगना अब जरुरी है क्योंकि प्रतिमिनिट देश में २०.५ गायें कट रही है।

माननीय संसद सदस्य श्री. गुमानमलजी लोढा ने १७ अगस्त, १९९० को संसद में प्रस्ताव रखा था। सांसदों की उदासीनता के कारण प्रस्ताव पारित नहीं हो सका। गत १७ नवम्बर १९९० को यही प्रस्ताव पुन: पेश किया जाना था लेकिन देश की राजनीतिक परिस्थितियों के कारर प्रस्ताव संसद में नहीं रखा जा सका। इस पर भी हम निराश नहीं है और प्रस्ताव पारित करवाने की दिशा में सतत प्रयत्नशील रहेंगे।

अहिंसा के प्रतिक महावीर के अनुयायियों को ही इस दिशा में पहला कदम उठाना चाहिए ऐसा सोचकर हमने सबसे पहले जैनियों का अव्हान किया और कार्यसिद्धी हेतु तपबल प्रदान करने के उद्देश्य से एक लाख अट्ठम (तेला) तप का आव्हान किया था। देशभर के पूज्य साधु-साध्वियों की प्रेरणा से हजारों तप भी हुए, जो हमारे पास जमा तप पूंजी है। कहीं-कहीं से सूक्ष्म रुप में आर्थिक सहयोग भी प्राप्त हुआ है और कई संघों और जीवदया खाते में से भी आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया।

अब हमें यह उदासीनता छोड़कर संगठित और सक्रिय होने का समय आ गया है। इस अहिंसा के अभियान में तन-मन-धन से सहयोग की अपेक्षा है। अत: अहिंसा प्रेमी सज्जनों, जैन संघो और इतर संगठनों के मुक्तहस्त आर्थिक सहयोग से ही कार्य की सिद्धी संभव है।

इस कार्य की सिद्धी के बाद हम अहिंसा अभियान की लम्बी और कठिन यात्रा की दिशा में और आगे कदम बढाएंगे और सभी तरह के पशु-पक्षी आदि के वध पर रोक लगवाएंगे। हिंसा के सूक्ष्म से सूक्ष्मतर रुप को समाप्त करना ही हमारा उद्देश्य है।

अब हम समस्त अहिंसा प्रेमीयों को मिलकर देश भर में बनाना है अहिंसक वातावरण ताकि इन स्वार्थी सांसदों पर जनमत के बल पर इस सही काम को करवाने के लिए दबाव डाला जा सके। इसके अलावा कोई और रास्ता है भी कहाँ।?

-प्रेषक : अहिंसा अभिनव ट्रस्ट, बम्बई

शब्दसागर इनामी स्पर्धा (११)

संकलनकर्ता : साध्वीजी डॉ. प्रियदर्शनाश्रीजी
साध्वीजी डॉ. सुदर्शनाश्रीजी

प्रस्तुत स्पर्धा ११ का उत्तर अलग से फुलस्केप पेपर पर लिखकर पूर्णनाम पता एवं शाश्वत धर्म की सदस्य संख्या के साथ कार्यालय के पते पर १० जूलाई तक पहुंचाएं। प्रस्तुत स्पर्धा के उत्तर एवं परिणाम अगस्त ९२ में प्रकाशित किये जाऐंगे।

(**नोट :**– शाश्वत धर्म सदस्य संख्या के अभाव में प्राप्त उत्तरों को स्वीकृत नहीं किया जाएगा।)
एक सदस्य संख्या का एक ही उत्तर स्पर्धा में शामिल किया जायेगा।

पुरस्कार सौजन्य : पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से जूना जोगापुरा (राज.) निवासी शा. चन्द्रभाणजी भीखाजी श्री श्रीमाल की धर्मपत्नी श्रीमती शांतिबाई की ओर से ५०१/– पांच सौ एक रुपये का नगद पुरस्कार उत्तीर्ण प्रतियोगियों में समान रूप से वितरित किया जाएगा।

१	■	२	■	३	४	■	५	६	७	८	■
■	९					१०	■	११			■
१२			■	१३			■		■		■
१४		■	१५	■	■				■		१६
	■	१७		१८		■	१९		२०		
२१			■		■	२२		■		■	
	■		■	२३	२४		■	२५			■
२६	२७	■	२८			■	■	२९		■	३०
■		■	३१			■	३२		■	३३	
३४	■	■	३५			३६	■		■	३७	
३८		३९	■	■	४०		■		■	४१	
	■		■	४२	■	४३	४४	■	४५	■	
४६					■	■	४७				■

बायें से दायीं ओर :-

१. छप्पन दिक् कुमारियों में से एक। (१)

३. पंचम गणधर के दाहिने पैर में... का चिन्ह था (२)

५. ...याचना भरत ने बाहुबली से की थी। (४)

९. ...धर्म...का प्रचार-प्रसार अब दिन-दुगुना रात-चौगुना बढ़ता जा रहा है। (३-३)

११. जंबूद्वीप के क्षेत्रों में से एक। (३)

१२. जंबूद्वीप के दस पदार्थ...हैं। (३)

१३. आचार्य भगवन्त गच्छ के...होते हैं। (३)

१४. पिता का समानार्थी शब्द। (२)

१७. ...मुनि को खाते-खाते केवल ज्ञान हुआ। (४)

१९. राजस्थान के प्रसिद्धतीर्थ...में मूलनायकजी श्री आदिनाथ भ. हैं। (५)

२१. ...चौवीस हैं। (३)

२२. शरीर की स्वस्थता के लिए हित, ...व पथ्यकारी भोजन करना चाहिए। (२)

२३. ग्वाले के भव में शालिभद्रने मुनि को..द्गान दिया था। (३)

२५. आज मानव के नैतिक गुणों के मूल्यों का...नहीं होता है। (३)

२६. पुण्यतत्त्व के बयालीस भेदों में से एक। (२)

२८. श्रीकृष्ण...में बड़े हुए। (३)

२९. यात्रा (प्राकृत में)। (२)

३१. ...खाना शरीर के लिए हानिकारक है। [कृपया (खु) की जगह (कु) लिखे।] (३)

३२. कंसारी को...नहीं होते। (२)

३३. अपने से जो भी वडिल हो; उन्हें...कहना चाहिए। (२)

३५. ...में कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिए। (४)

३७. राम का अपर नाम। (२)

३८. सन्नारी को प्राणों की बाजी लगाकर भी अपने शील की...करना चाहिए। (३)

४०. बहिरात्मा दुन्यवी सुखों के राग...में आसक्त होती है। (२)

४१. साबू...लटों का कलेवर है। (२)

४३. आत्मिक सुखों में जो...है, वह भौतिक सुखों में नहीं। (२)

४६. वह सूत्र जो प्रतिक्रमण करते वक्त श्राविकाएँ नहीं बोलतीं। (५)

४७. बांस पर अपनी नृत्य कला दिखाते-दिखाते...कुमार को केवलज्ञान हुआ। (४)

ऊपर से नीचे की ओर :-

२. तीन लोक में कुल पन्द्रह अरब, बयालीस क्रोड़, अठ्ठावन लाख छत्तीस हजार अस्सी...जिन बिंब है। (३)

४. श्री ऋषभदेव प्रभु के साथ चार हजार ...पुरूषों ने भी दीक्षा ग्रहण की। (३)

६. द्रौपदी का...दुःशासन ने किया। (५)

७. अनजान में हुई भूल एक बार...हो सकती है। (२)

८. ज्ञाताधर्मकथा सूत्र में...नगरी का वर्णन आया है। (३)

९. ज्ञान-दर्शन से युक्त केवल एक आत्मा ही...है। (३)

१०. चौवीश तीर्थंकरों में से एक तीर्थंकर की जन्म-नगरी। (३)

१२. आठ कर्म की एक सौ अठ्ठावन उत्तर प्रकृतियों में से एक। (६)

१५. ...जमीन-जोरू ये तीनों कलह की जड़ है। (२)

१६. सुमंगला का पुत्र...था। (३)

१७. वीरमतीने चन्द्राजा को...बनाया था। (३)
१८. ...को उपसर्ग सहन करते हुए केवलज्ञान हुआ। (६)
१९. "...में बनाया हुआ दिन में खाना" रात्रिभोजन के भंगों में से एक है। (३)
२०. रत्नराज अग्रज भ्राता के साथ...गए थे। (४)
२२. ...की परिक्षा संकट के समय ही होती है। (२)
२४. श्री...बीसवें तीर्थंकर के शासन में हुए। (५)
२५. ...पर शाश्वत जिन चैत्य है। (५)
२७. ...क्रूर ग्रह है। उसकी शांति के लिए श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी की माला गिनें। (२)
२८. स्थूलिभद्रजी की...गोत्र। (३)
३०. अनागत तीर्थकरों में से एक। (५)
३३. ...आने पर मानव को तनिक भी घबराना नहीं चाहिए। (३)
३४. ...तीन खंड का राज्य करते हैं। (४)
३६. वीर प्रभु पर उपसर्ग करनेवाला देव। (३)
३९. सम्यक्त्व के प्रकारों में से एक। (३)
४२. गुरूजनों की शिष्यों पर ... होनी चाहिए (२)
४४. जाति (प्राकृत में)। (२)
४५. तेरह काठियों में से एक। (२)

शब्दसागर इनामी स्पर्धा (९) के परिणाम एवं उत्तर

परिणाम :– निम्नांकित दो प्रतियोगी सफल रहे।

१) महेन्द्र जे. संघवी, २) संगीता जे. संघवी (आहोर)

शेष इनके भी प्रयास सराहनीय रहे – १) फौंजालाल सी. मोदी (गांधीधाम) २) श्रीमती सुशीलाबाई मेहता (झाबुआ) ३) श्री गौतमचंद बागरेचा (बालोतरा) ४) कु. मीना मेहता (जालोर) ५) श्री एस. आर. डूंगरवाल (बड़वाह)

उत्तर :– बाएं से दायीं ओर

१) आर्या (उल्टाचले) २) गमती ३) मेरू ६) सुन्दरी ८) जीव ९) देशविरति १०) कावी ११) वर्धमान १३) अनादि १४) अन्नथ १६) एकत्व १८) जीवाणु २०) नाक २१) चाचा २४) मदिरा २६) श्री २७) सौरीपुर २८) त्रीक

उपर से नीचे की ओर

१) आश्रव २) गमे ३) मरूदेवी ४) मन्दर ६) सुविधिनाथजी ७) रीति ८) जीरावला १०) कान १२) मारक १३) अन्न १५) अणु १६) एक १७) त्वचा १९) वाव २०) नाभि २२) चामर २३) नारी २५) रात्री

२०वीं एवं २१वीं शताब्दी का कैलेण्डर

(अ) वर्ष

1901-2100

	1925	1953	1981	2009	2037	2065	2093
	1926	1954	1982	2010	2038	2066	2094
	1927	1955	1983	2011	2039	2067	2095
	1928	1956	1984	2012	2040	2068	2096
1901	1929	1957	1985	2013	2041	2069	2097
1902	1930	1958	1986	2014	2042	2070	2098
1903	1931	1959	1987	2015	2043	2071	2099
1904	1932	1960	1988	2016	2044	2072	2100
1905	1933	1961	1989	2017	2045	2073	
1906	1934	1962	1990	2018	2046	2074	
1907	1935	1963	1991	2019	2047	2075	
1908	1936	1964	1992	2020	2048	2076	
1909	1937	1965	1993	2021	2049	2077	
1910	1938	1966	1994	2022	2050	2078	
1911	1939	1967	1995	2023	2051	2079	
1912	1940	1968	1996	2024	2052	2080	
1913	1941	1969	1997	2025	2053	2081	
1914	1942	1970	1998	2026	2054	2082	
1915	1943	1971	1999	2027	2055	2083	
1916	1944	1972	2000	2028	2056	2084	
1917	1945	1973	2001	2029	2057	2085	
1918	1946	1974	2002	2030	2058	2086	
1919	1947	1975	2003	2031	2059	2087	
1920	1948	1976	2004	2032	2060	2088	
1921	1949	1977	2005	2033	2061	2089	
1922	1950	1978	2006	2034	2062	2090	
1923	1951	1979	2007	2035	2063	2091	
1924	1952	1980	2008	2036	2064	2092	

दिन

रवि	1	8	15	22	29	36
सोम	2	9	16	23	20	37
मंगल	3	10	17	24	31	
बुध	4	11	18	25	32	
बृहस्पति	5	12	19	26	33	
शुक्र	6	13	20	27	34	
शनि	7	14	21	28	35	

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
-उद्देश्य-
समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रचार, समाज सुधार, आर्थिक विकास.

प्रकाशक :- शाश्वत धर्म कार्यालय, थाने © ५३४ ०७ २४

२०० वर्ष

(ब) महीने

जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	ज़ून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर
4	0	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
5	1	1	4	6	2	4	0	3	6	1	3
6	2	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
0	3	4	0	2	5	0	3	6	1	4	5
2	5	5	1	3	6	1	4	0	2	5	0
3	6	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1
4	0	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
5	1	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
0	3	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1	4	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6
2	5	5	1	3	6	1	4	0	2	5	0
3	6	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
5	1	1	4	6	2	4	0	3	5	1	3
6	2	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
0	3	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1	4	5	1	3	6	1	4	0	2	6	0
3	6	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1
4	0	0	3	5	1	3	6	2	4	0	2
5	1	1	4	6	2	4	0	3	5	1	3
6	2	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1	4	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6
2	5	5	1	3	6	1	4	0	2	5	0
3	6	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1
4	0	1	4	6	2	4	0	3	5	1	3
6	2	2	5	0	3	5	1	4	6	2	4
0	3	3	6	1	4	6	2	5	0	3	5
1	4	4	0	2	5	0	3	6	1	4	6
2	5	6	2	4	0	2	5	1	3	6	1

उदाहरण :- ५ मार्च, १९८५ को कौन-सा दिन था ?
सर्वप्रथम वर्ग (अ) में वर्ष १९८५ का पता कीजिए । फिर अपनी ऊँगली को दाहिनी ओर आगे की ओर वर्ग (ब) में मार्च के महीने तक ले जाइये । अब यहाँ उपस्थित अंक में ५ (जिसका कि दिन ज्ञात करना है) जोड़ दीजिए । चूँकि उपस्थित अंक ५ है अत: टोटल ५ + ५ = १० हो जायेगा अब इस संख्या (१०) को वर्ग (स) में देखिए कि यह किस दिन पर है । इस तरह आप यह जान जाएँगे कि ५ मार्च, १९८५ को मंगलवार था । इसी प्रकार आप वर्ष १९०१ से २१०० तक की किसी भी तारीख का दिन ज्ञात कर सकते हैं।

संकलन :- प्रितेश उत्सवमल जैन –इन्दौर

क्या आप जानते हैं कि

★ पर्यावरण को सबसे ज्यादा नुकसान औद्योगिक देशों से ही हो रहा है । इनसे होने वाले अधिक प्रदूषण के कारण तापमान बढ़ रहा है । इन उद्योगों से वातावरण में फैलने वाले रसायन ही बाद में तेजाबी बारिश के रूप में फिर पृथ्वी पर गिरते हैं । इससे पेड़ मर जाते है । धरती, मनुष्य और पशुओं को काफी नुकसान होता है । इन उद्योगों में काफी मात्रा में इस्तेमाल किये जाने वाले क्लोरोफ्लूरोकार्बस भी ओजोन परत के लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं । इनका उपयोग एअर कंडीशनर व रेफ्रीजेटर बनाने में किया जाता है ।

★ कंज्यूमर गाइडेंस सोसायटी ऑफ इंडीया ने सरकार से आग्रह किया है कि वह अल्फा ओल्फिन सल्फोनेट्स (ए ओ एस) के इस्तेमाल पर फिर से विचार करे । स्वास्थ्य मंत्री, कैबिनेट सचिव, प्रधानमंत्री कार्यालय और पर्यावरण मंत्रालय को लिखे पत्र में सोसायटी ने कहा है कि यह रसायन विकसित देशों में अस्वीकार किया गया है, इससे कैंसर होने की आशंका है । बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत लाने की कोशिश में सरकार ने हाल में गोदरेज-गुजरात को जर्मनी की जीएमबीएच के सहयोग से एओएस बनाने के लिए प्लांट स्थापित करने की इजाजत दी है । जिसके अनुसंधान में कई तथ्यों को उजागर करते हुए यह पत्र लिखा गया है ।

★ सांस की बिमारियों के सम्बन्ध में जो राष्ट्रीय औसत है, दिल्ली में वह उससे बारह गुना अधिक है । वायु प्रदूषण के कारण दिल्ली में दस में से तीन व्यक्ति सांस से संबंधित बिमारियों के शिकार हैं ।

★ भोजन की दुनियाँ में स्वाद गंध का मायाजाल तरह तरह के रसायनों से ही संभव हो पाया है । ऐसे रसायनों की संख्या लगभग ३५०० है ।

★ १९५६ से १९७५ तक के एक सर्वेक्षण के अनुसार उस समय की सबसे बड़ी ५०. बहुराष्ट्रीय कम्पनियां सिर्फ ५.३ प्रतिशत पूंजी बाहर से लेकर आयी थी । उनकी अधिकांश पूंजी यहाँ की बैंकों आर्थिक संस्थाओं या जनता से ऋण लेकर या शेयर बेचकर तैयार की गयी है । अब उनकी निवेश सीमा ५० प्रतिशत तक कर दी गयी है यानी वे न सिर्फ अपनी कम्पनियों पर पूरा नियंत्रण रखेंगी बल्कि दूसरी भारतीय कम्पनियों को भी कब्जे में कर लेंगी ।

★ हिन्दुस्तान लीवर कम्पनी १९२० में भारत आई थी । उस समय वह सिर्फ २० हजार रूपये की पूंजी लाई थी । पर आज सिर्फ साबुन उद्योग में इसने १४०० करोड रूपए का कारोबार खड़ा कर रखा है । यह कम्पनी ३०० करोड रूपए सालाना सिर्फ विज्ञापन पर खर्च करती है ।

★ सन् १९४६ से १९६१ के दौरान विदेशी कम्पनियों ने जितनी पूंजी हमारे यहाँ लगायी, उससे तीन गुना अधिक बाहर भेज दी । विदेशी मिल्कीयतवाली नौ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने जितनी पूंजी हमारे देश में लगायी थी, वह उन्हे दो साल के मुनाफे में वापस मिल गयी ।

धर्ममित्र

स्वास्थ्य + चर्चा

मच्छर भगाइए बीमारियां बुलाइए

– संगीता शर्मा

मच्छरों से छुटकारा पाना अब भी बड़ी समस्या बनी हुई है। मच्छर हमारी नींद ही हराम नहीं करते बल्कि अनेक बिमारियों को बुलावा भी देते है वैसे तो पहले मच्छरों के साथ केवल मलेरिया जैसी बीमारी का ही संबंध था लेकिन आज ये मच्छर मस्तिष्कज्वर से लेकर ऐसी ऐसी नई बीमारीयों के वाहक बन गए हैं जिनका कभी नाम भी सुनने में नहीं आता था।

एक तरफ जहां अनुसंधानकर्ता मच्छरों से लड़ने के लिए नए–नए प्रयोग कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ अंतरराष्ट्रीय उद्योग कंपनीयां मच्छर भगाने वाली दवाएं और अन्य उपकरण काफी बड़े पैमाने पर बेचने में लगी है। मच्छरमार दवाओं और उपकरणों को आज बहुत बड़ी मात्रा में उत्पादित किया जा रहा है और बहुत बड़े स्तर पर इनका विज्ञापन किया जा रहा है जो करोडों अरबों डालर का हो गया है। इन उपकरणों और दवाओं में से अधिकांश की खासियत यह है कि ये मच्छरों पर पूरा प्रभाव डालकर लोगों को उनके आतंक से मुक्त तो कर देते हैं लेकिन साथ–ही–साथ कुछ मात्रा में लोगों के स्वास्थ पर भी अपना विनाशकारी प्रभाव छोड जाते हैं जिससे भले ही लोगों को मलेरिया और मच्छरों द्वारा फैलाए जानेवाले दूसरे रोगों से तो छुटकारा मिल जाता है मगर उनकी जगह कई दूसरी बीमारियां मनुष्य को अपनी गिरफ्त में ले लेती है।

पिछले साल कलकत्ता और बंबई में काफी तादाद में लोग एक अजीबोगरीब बीमारी से परेशान रहे। डाक्टर लोग लगातार उपचार करते रहने के बावजूद ये नहीं जान सकें कि ये कौन सी बीमारी है। इसमें लगातार दो हफ़्ते तक तेज बुखार रहा और फिर बिना ईलाज के ही दस–पंद्रह दिन बाद अपने आप उतर गया। कलकत्ता के लोगों ने इस बुखार को कलकत्ता बुखार व बंबई के लोगों ने इसे 'डोम्बीवली बुखार' का नाम दिया।

जब इस बुखार के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ने लगी तो चिकित्सकों ने इस बीमारी के कारणों की खोज की और तब पाया कि अधिकतर मरीज ऐसे इलाकों के थे जहां मच्छरों का बहुत बोलवाला था और इसी कारण अधिकतर लोग मच्छर भगानेवाले उत्पादों का प्रयोग करते थे। अपनी जांच के बाद डाक्टरों ने पाया कि मच्छर भगाओ दवाओं और उपकरणों से ही लोगों को सीने और फेफड़ों में दर्द की शिकायत हुई। अब यह माना जा रहा है कि अन्य शहरों में भी इसी तरह की बीमारी फैलने की संभावनाएं है।

इसका मुख्य कारण यह है कि आम जनता को इस बात की जानकारी नहीं है कि मच्छर भगाने के लिए जो कीटकनाशक वो इस्तेमाल कर रहा है उसका सेहत पर कोई बुरा असर भी पड़ सकता है। पिछले दिनों विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बताया कि मलेरिया से बचने के लिए निकली हर दवा मैल्फोक्वीन दिमाग और शरीर के लिए घातक हो सकती है। हमारे देश में मच्छरमार दवाओं

में कुछ ऐसे कीटकनाशकों का इस्तेमाल हो रहा है, जो अन्य देशों में प्रतिबंधित है। इसी कारण कंपनियां कीटनाशक उत्पादों की संरचना की जानकारी का खुलासा भी नहीं करती।

हमारे देश में लगभग पांच–छह साल पहले जापानी तकनीक से बनी मच्छरमार दवाएं आई और इतनी लोकप्रिय हुई कि हर घर में इनका अंधाधुंध इस्तेमाल होने लगा। लेकिन बाजार में खूब बिक रहे इन ब्रांडों में विषैले रसायन 'डी–एथिलीन' का इस्तेमाल किया जा रहा है यह बेहद विषैला कीटकनाशक रसायन हैं जिसके लगातार उपयोग से स्वास्थ के लिए खतरा पैदा हो सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ इस बात के लिए बहुत चिंतित है कि आज अनजाने में ही लाखों लोग इनका प्रयोग करके कई नई बीमारियों को बुलावा दे रहे हैं। आज मच्छरों से बचने के लिए बिजली से चलनेवाले जिन उपकरणों या अगरबत्तियों का सहारा लिया जाता है वह मच्छरों को मारने, भगाने या बेहोश करने का काम तो करता है साथ ही मनुष्य के शरीर पर भी अपना जहरीला प्रभाव छोड़ता है।

इस धुंए में फोसफीन नामक गैस होती है जो हल्की, विषैली और गंधहीन होती है। जब हम बिजली से चलेनेवाली टिकिया लगाते हैं जिसका धुंआ ना तो हमको महसूस होता है न उसकी कोई गंध ही आती है किंतु उस धुंए से पैदा गैस प्रभावशाली ढंग से अपना काम करती रहती हैं। जब हम अगरबत्ती जलाते हैं तो उसमें से काफी तेज धुंआ निकलता है और उसकी एक विशेष गंध भी होती है हालांकि यह गंध अगरबत्ती बनाते समय विशेष रूप से उसकी सामग्री में मिलाई जाती है ताकि मच्छर इसकी तेज गंध से जल्दी आकर्षित होकर इसका शिकार बने और लोगों को इसका प्रयोग अच्छा लगे लेकिन विशेषज्ञों ने अपनी जांच के बाद बतलाया है कि ये धुंआ और इसकी गंध मनुष्यों के लिए भी बहुत हानिकारक है और कई छोटी–बड़ी बीमारियों को जन्म देने में सहाय्यक है। जैसे सिरदर्द, एलर्जी, नाक में खुश्की होठों का सूखना, गले में खराश वगैरह।

अब चिकित्सा विज्ञान ने इस तथ्य को मान्यता दे दी है कि फोसफीन गैस युक्त ये धुंआ और इसकी गंध हरेक के लिए हानिकारक है खासतौर पर एशिया, अफ्रिका के उन राष्ट्रों में जहां सफाई का ज्यादा ध्यान न रखने पर मच्छरों का प्रकोप छाया रहता है और लोगों द्वारा इन तमाम उपकरणों का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है।

कुछ चिकित्सकों के अनुसार इन उपकरणों का धुंआ परोक्ष रूप से तो किसी बीमारी को जन्म नहीं देता मगर कई बीमारियों को बढ़ाने में सहायता करता है। जैसे इनका प्रयोग लगातार करने से 'दम घुटने और सांस रूकने की सी स्थिति' की शिकायत रहती है। दिल के मरीजों के लिए इस तरह की शिकायतें बहुत घातक सिद्ध हो सकती हैं। इसी तरह 'दमा' के मरीजों को ये धुंआ और भी गंभीर स्थिति में पहुंचा देता है।

अधिकांश स्वास्थ्य विशेषज्ञ सबसे ज्यादा चिंतित तो उन बच्चों के लिए हैं जिन्हें जन्म से ही मच्छर भगानेवाले उपकरणों का धुंआ झेलना पड़ रहा है। अनजाने में ही ज्यादातर मां–बाप अपने बच्चों के निकट कछुआ छाप, कैसपर या गुडनाइट आदि जला देते हैं ताकि इनका धुंआ बच्चों की मच्छरों से रक्षा कर सकें। बच्चे ज्यादा तेज, जल्दी और गहरी सास लेते हैं इसलिए ये धुंआ बहुत तीव्र गति से अधिक मात्रा में उनके शरीर में प्रवेश कर जाता है और बच्चे बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। बच्चों में इन्हें झेलने की क्षमता औरों से कम होती है।

बच्चों के साथ–साथ ये धुंआ महिलाओं पर भी बुरा प्रभाव डालता है, इससे उनकी आंखों में जलन पड़ सकती है, सांस लेने में कठिनाई हो सकती है, लगातार खांसी की स्थिति बन सकती है। इस धुंए का सबसे बुरा प्रभाव औरतों पर गर्भावस्था के दौरान पड़ता है जब गर्भ में शिशु भी मां के साथ इस धुंए का सेवन करता है। इससे बच्चा जन्म से ही मंद बुद्धि का हो सकता है या उसमें कोई शारीरिक विकलांगता पैदा हो सकती है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने इसी के साथ त्वचा पर लगानेवाली क्रीम को भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताया है। आमतौर पर देखा गया है कि साधारण रूप से चेहरे को सुंदर बनाने के लिए लगाई जानेवाली किसी भी तरह की क्रीम का स्वास्थ्य पर विपरित प्रभाव ही पड़ता है इसीलिए त्वचा विशेषज्ञ शरीर पर क्रीम इत्यादि लगाने के लिए मना करते हैं। जबकि उन क्रीमों में सुंदरता बढ़ानेवाले पदार्थों का मिश्रण ही किया जाता हैं। इसके विपरित मच्छर से बचानेवाली क्रीमों में ऐसी सामग्री मिलाई जाती है जिसकी खुशबू मच्छरों को अच्छी न लगे तथा मच्छर पास में न आए। हालांकि निर्माता अपनी तरफ से तो ये कोशिश करते होंगे कि इस तरह की क्रीम का स्वास्थ्य पर किसी भी रूप में बुरा प्रभाव न पड़े। पर इस कोशिश में वे खरे नहीं उतर पाते।

त्वचा विशेषज्ञों के मुताबिक इस क्रीम से त्वचा पर झुर्रियां पड़ने का अंदेशा रहता है। त्वचा रूखी या खिंची–खिंची सी महसूस होती है। त्वचा पर निशान पड़ने, हल्के–हल्के दानें हो जाने और खारिश (खुजली) हो जाने की संभावना बढ़ जाती है। क्योंकि ये क्रीम हाथ–पैरों वगैरह पर भी लगाई जाती है इसलिए वहां की त्वचा की लचक कम हो जाती है। हाथ सूखे–सूखे और खुरदरे से हो जाते हैं।

क्रीम लगाने का एक सबसे बूरा पहलू यह है कि ये क्रीम कहां–कहां लगाई जाए और कहां–कहां नहीं, यही पता नहीं होता। आमतौर पर सोते समय मनुष्य का मुंह तो खुला ही रहता है। यानि यह अपने सारे शरीर को तो चादर से ढक सकता है किंतु मुंह तो ढक कर नहीं सोया जा सकता। इसलिए रोज ये याद रखना चाहिए कि ये क्रीम चेहरे, कान और गर्दन पर लगाए तभी मच्छरों से सुरक्षा मिल सकेगी। लेकिन एक सुरक्षा के साथ साथ दूसरी कुछ आफतें मिल जाएंगी।

इन आफतों से बचने और मच्छरों को भगाने के लिए यदि क्रीम का प्रयोग करना ही पड़े तो बहुत कम करना चाहिए। उसके बाद रोज सुबह उठते ही साबुन से वो सभी अंग जहां–जहां क्रीम लगाई है धोकर मलाई या कच्चा दूध मलना चाहिए। साथ ही मच्छर भगानेवाले सभी उपकरणों का प्रयोग करते समय सावधानी बरतनी चाहिए और इन्हें इस्तेमाल करने की सही विधि सीखनी चाहिए।

इसलिए सबसे जरूरी बात यह है कि लोगों को मच्छर भगाने के लिए किसी भी तरह की सामग्री को प्रयोग करने की सुरक्षित विधि का ज्ञान कराया जाए। इस तरह के प्रयोगों के प्रति मीडिया को एक ऐसी नीति बनानी चाहिए जिससे लोगों की जानकारी बढे। जबकि इसके विपरित मिडिया लोगों को भ्रमित करनेवाला प्रचार कर रहा है। जहां एक तरफ स्वास्थ्य अधिकारी इस तरह के प्रयोगों से लोगों को सावधान कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ आकाशवाणी, दूरदर्शन व पत्र–पत्रिकाओं में इनके जोरदार विज्ञापन दिए जा रहे हैं। खासतौर पर दूरदर्शन में जिसमें कछुआ छाप या नाइटक्वीन जलाकर पास में ही चैन से सोते हुए लोगों को दिखाया जाता है।

इस तरह के विज्ञापन अनपढ़ तो क्या पढ़े–लिखे लोगों को भी गुमराह कर देते हैं।

रूकिये ! पढ़िये, सोचिये !

- अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि जिस्म की प्राकृत रोग-बचाव प्रणाली भी नशा करने वालों में कमजोर हो जाती है । इससे तरह-तरह के संक्रामक रोग उत्पन्न होने की शंका बढ़ जाती है ।
- सिगरेट और चिलम के सहारे नशा करने वाले लोगों के फेफडों और दिल पर असर पड़ता है ।
- पूरी दुनिया में हरित क्रांति के नाम पर संकर बीजों का प्रचार और प्रसार बढ़ रहा है । पश्चिमी देशों से चला यह रोग आज इतना फैल चुका है कि इसके नतीजे, पंजाब में साफ-साफ दिखने भी लगे हैं । इन बीजों के प्रचार-प्रसार में राजनैतिक स्वार्थ है । इसको समझे बिना उपयोग में लाना न सिर्फ एक घातक कदम है बल्कि आत्महत्या है ।
- संकरबीज की राजनीति मल्टीनेशनल कंपनियों की एक सुनियोजित साजिश है । यह साजिश है खान-पान, रहन-सहन, दवा आदि के मामले में गुलाम बनाने की । अधिक अन्न उपजाओ, दुनिया को भूख से बचाओ का नारा रटाते हुए शुरू किये गए इस अभियान का पर्दाफाश तो ईथियोपिया जैसे अफ्रीकी देशों में हो चुका है, जहाँ अन्न के अभाव में लाखों लोग दम तोड़ रहे हैं । इस नारे ने भूख का डर दिखाकर पूरी दुनियाँ में जो अभियान चलाया, इससे हर देश की परम्परागत खेती की प्रथा पर कुठाराघात ही नहीं किया बल्कि उसे तबाह कर दिया ।
- संकर बीजों के इस्तेमाल से पांच गुने पानी की जरूरत होती है । इस पानी की पूर्ति के लिये बड़ेबड़े बांधों का निर्माण होता है और बड़े बांधों की तकनीक बड़ी कम्पनियों और पश्चिमी देशों के हाथों में कैद होती है ।
- जल्दी उगने और अधिक उपज के नाम पर जिन संकर बीजों का प्रचलन आज हो रहा है उसे अधिक पानी तो चाहिये ही, अधिक रासायनिक खाद भी चाहिये और फिर संकर बीज व रासायनिक खाद से पैदा होने वाली फसलों की बीमारी को समाप्त करने के नाम पर अधिक रासायनिक दवायें (कीटनाशक) चाहिये ।
- जबसे संकर बीज, रासायनिक खाद न कीटनाशक दवाओं का प्रयोग बढ़ा है, तब से बच्चों में चर्मरोग, जानवरों में कई तरह के रोग और बड़ों में आंत की बिमारियाँ बढ़ी है ।
- प्रदूषणजन्य बिमारियों की गंभीरता आज हम बेशक महसूस न कर पाएं लेकिन आने वाले वर्षों में ये विस्फोटक रूप अवश्य ले लेंगी । वाहनों के धुएं में मौजूद कार्बन मोनो ऑक्साइड शरीर में प्रवेश कर खून में मिल जाती है और हीमोग्लोबिन से प्रतिक्रिया कर कार्बोहीमोग्लोबिन का निर्माण करती है, जो पर्याप्त मात्रा में रक्त में ऑक्सीजन का अवशोषण नहीं होने देता । जिसके अनेक दुष्प्रभाव होते हैं ।
- रासायनिक खादों और कीट नाशकों के इस्तेमाल से फसलों का उत्पादन तो बढ़ गया लेकिन आदमी, पशु और दूसरे प्राणियों को काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है । रासायनिक खादों के इस्तेमाल से बरसात के दिनों में खेतों में बड़ी तादाद में नाइट्रोजन और फास्फेट बह निकलते हैं ये जलस्त्रोतों में पहुंचकर काफी घातक साबित होते हैं ।

प्रवासी

सरेराह चलते - चलते

★ **पर्यावरण पुरस्कार** - सरदार सरोवर बांध के खिलाफ जारी नर्मदा बचाओ आंदोलन की नेता मेधा पाटकर को गोल्ड मैन पर्यावरण पुरस्कार के लिये चुना गया है। मेधा पाटकर विश्व के इस प्रकार के पुरस्कार प्राप्त छः लोगों में से एक है, जिसमें पुरस्कार के तहत ६० हजार डालर दिये जाते है। सानफ्रांसिस्को स्थित गोल्ड मैन एनवायर्नमेंटल फाउण्डेशन द्वारा चयन समिति में २५ देशों के पर्यावरण विशेषज्ञों को रखा गया था जहां विश्व में पर्यावरण रक्षार्थियों को सन्मानित किया जा रहा हैं वहीं दूसरी ओर हमारी सरकार आंखें मूंद कर इनके अभियान को दबाने की कोशिश कर रही हैं।

★ **नशे का व्यापार** - तम्बाकू, बिडी, अफीम और शराब के व्यवसायी पहले तो नेताओं को चुनाव के लिये आर्थिक मदद करते रहे, बाद में खुद ही लोक प्रतिनिधि के रूप में संसद तक पहुंच गये। इसीके साथ नशे का व्यवसाय फलने-फूलने लगा। अब तो भगवान ही मालिक है इस देश का।

★ **डिब्बा बंद भोज्य पदार्थ** - विकसित देशों की तर्ज पर शीघ्र और सुरक्षित भोज्य पदार्थ उपलब्ध कराने का दावा करने वाले उद्योग हमारे देश में भी तेजी से पनप रहे है। पहले से तैयार, पके हुए और प्रोसेस्ड भोज्य पदार्थों से सुविधा है। इसके साथ ही ईंधन और समय की बचत भी, लेकिन इसे खाने वाले यह नहीं जानते कि केवल एक बार में वे लगभग एक दर्जन ऐसे रसायन निगल जाते हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से असुरक्षित हैं।

★ **राजनीति में अपराधियों की घुसपैठ** - यह खबर चौंका देने वाली हो सकती हे लेकिन हकीकत है कि हर जगह चुनाव में यह स्थिती सामने आने लगी है। उत्तर प्रदेश की बात ही लें। पिछली विधानसभा में अठारह प्रतिशत विधायक ऐसे थे, पुलिस रिकार्ड में जिन्हें अपराधी कहा गया था। मौजूदा विधानसभा में ऐसे विधायकों की संख्या तीस प्रतिशत से उपर पहुंच गयी है, जिनका काला इतिहास पुलिस थानों में दर्ज है। अपराधियों के पांव जिस तेजी से बढ़ रहे हैं उससे लगता है कि आने वाले वर्षों में जनता के भाग्यविधाता माफिया, सरगना, हिस्ट्रीशीटर और शातिर अपराधी होंगे।

★ **सरकारी माल और मंत्री** - उत्तर प्रदेश सरकार के इस्टेट डिपार्टमेन्ट द्वारा दी जानकारी के अनुसार राज्य के भूतपूर्व मंत्री, विधानसभ्य आदि सरकारी आवास खाली करते समय अपने साथ सरकारी सामान भी साथ ले गये, जिसमें रेफ्रीजरेटर्स, वुलनकार्पेट, रूमकुलर, गीझर्स, स्टील के कपाट, खिडकियों के परदे भी शामिल थे। यही बात दूसरे राज्यों के लिये भी है। प्रजा के पैसों का कितना दुरूपयोग होता होगा, इसकी कल्पना करना भी मुश्किल है। नामधारी सेवकों का कितना नैतिक अधःपतन हुआ है, यह घटनायें उसकी परिचायक है।

★ **सरकारी खर्च कटौती** - एक तरफ सरकार खर्च में कटौती की बातें करती है और दूसरी ओर उसके द्वारा संचालित विभिन्न परियोजनाओं में विलम्ब के कारण अनावश्यक खर्च बढता है। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित प्रोग्राम इम्प्लीमेन्टेशन डिपार्टमेन्ट द्वारा प्रसारित जानकारी के अनुसार विविध योजनाओं को समयावधि में पूर्ण न करने के कारण २४,४६८ करोड रूपये का ज्यादा खर्च हुआ। क्या कार्य में विलम्ब यह आर्थिक अपराध नहीं है ?

—मुसाफिर

एक दृष्टि : समाचार पत्रों पर

❀ **असम सरकार की तैंतीस व्यावसायिक कम्पनियों में से असम ग्लास इंडस्ट्रीज लिमिटेड का तो कोई खाता बही ही नहीं बना। इनमें से कोई भी कम्पनी १९९० तक के अपने हिसाब–किताब को खातों में दर्ज नहीं कर पायी। महालेखापरिक्षक सह नियंत्रक की हाल में प्रकाशित रपट में यह जानकारी मिलती है। रपट के दायरे में ३१ मार्च १९९० तक के हिसाब हैं। इस समय तक जितनी कम्पनियों के हिसाब–किताब मिल पाये उस अनुसार सात कम्पनियों को २७ करोड़ ९१ लाख रूपयों का घाटा हुआ, जबकि इन कम्पनियों की लागत पूंजी ९ करोड ८२ लाख रूपए हैं। (जनसत्ता २१–४–१९९२)**

छोटी से छोटी दूकान और कम लगत वाला व्यापारी भी कुछ लाभ में रहता हैं जबकि जनता के पैसों पर खड़े सार्वजनिक क्षेत्र में इतना घाटा क्यों होता है। बेजवाबदारी और भ्रष्टाचार का राजकारण यही तो फल लायेगा! छोटी–छोटी बातों में हिसाब–किताब के रखरखाव हेतु व्यापारियों को तंग करनेवाली सरकार अपने द्वारा संचालित उद्योगों में झांककर देखेगी?

❀ **प्रदूषण फैलाने में सरकारी स्टील प्लांटों ने हद कर दी। (जनसत्ता २८–४–१९९२)**

सरकारी क्षेत्र के स्टील प्लांटों में प्रदूषण नियंत्रण के मामले में दस साल में अफसरों की कई बैठकें हुयी, लेकिन लक्ष्य पूरा करने की सिर्फ तारीखे बढ़ाते गए। जब भी किसी अफसर ने इन प्लांटों पर सख्ती बरतने की कोशिश की सरकार ने उन्हें ही हटा दिया। इन प्लांटों से पानी और हवा दोनों दूषित होते हैं, जिनका खामियाजा आसपास की आबादी को भुगतना पड़ रहा हैं।

❀ **गुजरात सरकार की नौ कम्पनियाँ १३० करोड़ रूपये के घाटे में!**

(गुजरात समाचार १–५–१९९२)

कहा गया है कि – जहाँ का राजा व्यापारी वहाँ की प्रजा भिखारी। सरकारी कम्पनियों का घाटा जनता पर नाना प्रकार के कर लगाकर या बढ़ाकर वसूल किया जाता हैं। किसी राजनेता या अफसर को अपनी जेब से तो नुकसान भरना है नहीं, फिर क्यों कोई चिन्ता करें?

❀ **पिछले छः वर्ष में देश की २८ बेंकों में कुल रू.३३,३०९.७२ लाख के घोटाले!**

(गुजरात समाचार २३–५–१९९२)

बैंकों में भ्रष्टाचार रोकने का कभी गंभीर प्रयास हमारे यहाँ नहीं किया गया। प्रजा के पैसों के साथ कितने गन्दे खेल खेले जाते हैं। अधिकारी वर्ग के हाथ इनमें हुए बिना ऐसे काण्ड सम्भव नहीं होते।

लक्ष्य के प्रति निष्ठा ही सफलता की कुंजी

(सत्य कथा)

आज के युग में वही मनुष्य जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है जो लक्ष्य के प्रति निष्ठावान रहता है । लक्ष्य की ओर–ध्येय के प्रति जब दृढ़ता रहेगी तो मनुष्य किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है । जिस व्यक्ति में अपने उद्देश्य के प्रति समर्पण-भावना नहीं, एकाग्रता नहीं, वह जीवन में उन्नति नहीं कर सकेगा । विकास-पथ पर अग्रसर नहीं हो सकेगा । जीवन में वास्तविक सफलता का आधार ध्येय-निष्ठा ही है और इसका अभाव है असफलता, तात्पर्य कि लक्ष्य के प्रति एकान्त समर्पण ही सफलता की यथार्थ कुंजी है ।

लक्ष्य के प्रति एकाग्र व्यक्ति, जीवन में सदैव सूर्य की तरह चमकता है और अपना नाम अमर कर जाता है । किंतु-लक्ष्य प्राप्ति सहज संभव नहीं, जीवट साधना है । जीवन विपत्तियों का घर है, विकट संघर्षों का विकराल रण-क्षेत्र है । अथाह समुद्र है जिसमें हर क्षण ज्वार-भाटा मंडराता है, अतः एक कवि ने कहा है–

'संघर्षों से मत घबड़ाना बढ़ते रहना तुम साथी ।
कांटो की चुभनों में भी तो रहतीं कलियां मुस्काती।'

कविकुल शिरोमणी कालिदास कौन था ? एक वज्र महामूर्ख । सतत उत्साह व ध्येयनिष्ठ बनकर आगे बढ़ा । विद्यार्जन कर वह एक महामनीषी बन गया ।

उज्जैन नरेश की सुपुत्री तिलोत्तमा भारत विख्यात विद्यामार्तंड थी और राजा ने ऐलान कर दिया कि जो शास्त्रार्थ में उसे पराजित कर देगा, उससे ही उसकी विदुषी पुत्री का विवाह होगा । राज-सभा में बड़े-बड़े मूर्द्धन्य पंडित थे पर कोई भी तिलोत्तमा की अद्वितीय प्रतिभा के समक्ष नहीं टिक सका । सभी दिग्गज, धुरंधर एक के बाद एक तिलोत्तमा की अत्यंत कुशाग्र बुद्धि के समक्ष पछाड़ें खा, नत मस्तक हो गए । तब पंडितों ने चाल चली व संकल्प किया कि इस विद्याभिमानिनी तिलोत्तमा का विवाह एक ऐसे महामूर्ख से किया जाए कि आजीवन उसे निरंतर पश्चाताप ही करना पड़े ।

पंडितों का समूह संसार के सबसे बड़े मूर्ख की तलाश में चहुंओर खोज में व्यस्त हुआ और आखिर ऐसे घने जंगल में जा पहुंचा जहां एक व्यक्ति वृक्ष की जिस डाल पर बैठा था, उसी पर कुल्हाडी चला रहा था । सचमुच इससे बढ़कर वज्र महामूर्ख आखिर कहां मिले? पंडितों ने उससे वृक्ष के नीचे उतरने को कहा व पूछा तेरी शादी हो गई क्या? उस मूर्ख ने नकारात्मक उत्तर दिया । पंडितों ने उसके सामने एक राजकुमारी से विवाह का प्रस्ताव रखा । मूर्खराज ताज्जुब में पड़ गया । पंडितों ने कहा– बस, हमारा कहना मानो व राजसभा में मौन ही धारण किए रहना । हम तेरी शादी करा देंगे । मूर्ख लकड़हारा राजी हो गया ।

पंडितों का समूह उस महामूर्ख को उज्जैन ले आया व उत्तम से उत्तम वस्त्रों से आच्छादित कर राजसभा में ले गए। ऐलान किया गया कि आज की धर्मचर्चा (शास्त्रार्थ) मौनचर्चा होगी। तिलोत्तमा राजी हो गई व उसने अपने जमाने के उस तथाकथित मूर्द्धन्य विद्वान को एक उंगली दिखाई कि आत्मा एक है। पर उसने दो उंगलियां दिखाकर यह प्रमाणित किया कि मैं तेरी दोनों आंखें फोड़ दूंगा। पंडितों को तिलोत्तमा को परास्त करना था। उन्होंने अर्थ दिया–आत्मा एक नहीं, दो हैं–एक संसारी आत्मा और दूसरी मुक्त आत्मा।

फिर तिलोत्तमा ने जोरों से हाथ हिलाया तो उस 'विद्वान' ने समझा कि यह मुझे थप्पड़ मारना चाहती है तो जवाब में उसने घूंसा दिखाया। पंडितों ने अर्थ दिया कि राजकुमारी कहती है कि इंद्रियां पांच हैं। 'महामनीषी' ने घूंसा दिखाकर बताया कि इंद्रियों को मुट्ठी में रखना अर्थात् इन्द्रियों का दमन करना।

आखिर, तिलोत्तमा को हार माननी पड़ी और उसने फूलों की जयमाला एक महामूर्ख महामनीषी के गले में डाल दी। सभा विसर्जित हुई। ठाट-बाट से विवाह हुआ और राजकुमारी तथा मुर्खराज लकड़हारा महलों में पहुंचे पर एक विदुषी एवं मूर्ख का सम्मिलन कैसा? महल के नीचे ऊंट चिल्ला रहा था तो वह मुर्ख उटर-उटर चिल्लाने लगा। उससे ऊंट का भी शुद्ध उच्चारण करते न बन पड़ा। तिलोत्तमा पंडितों की चाल समझ गई कि कैसा मूर्ख पतिदेव मेरे लिए खोज निकाला गया? बड़ा क्रोध आया और उसने अपने पति को अपमानित कर महल से निकाल दिया।

मूर्खराज पछताए। महसूस किया कि वे शिक्षित नहीं, तभी उन्हें राजकुमारी से तिरस्कृत होना पड़ा। फिर उन्होंने विद्याभ्यास प्रारंभ किया। दिन-रात बस पढ़ने की धुन। अपना उत्साह, ध्येय के प्रति निष्ठा अनवरत अखंड बनाए रखा और 'कालिदास' बनकर पण्डितराज हुए। कविकुल-नरेश हो देदीप्यमान हुए और तब राजकुमारी तिलोत्तमा से सम्पूर्ण सम्मान पाया। कालिदास फिर आखिर सर्वकाल का प्रचंड उद्‌बोधनकारी कवि हो गया।

लगनशीलता, ध्येयनिष्ठा व आत्मविश्वास में कैसी गजब की शक्ति है कि जिसने एक महामूर्ख को महामनीषी कालिदास बना दिया। ध्येयनिष्ठ व्यक्ति की आत्मा शक्ति बेकार नहीं जाती। लक्ष्य के प्रति एकान्त समर्पण-भावना चाहिए! भगवान् महावीर की अमर वाणी है–"चएज्जदेहं न हु धम्म सासणं"– 'हे शिष्य! तू शरीर को छोड़ दे पर आत्मधर्म को मत छोड़।' मेरु पर्वत हिल सकता है लेकिन लक्ष्य चंचल नहीं होना चाहिए। "कार्य वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्" शरीर की मुझे परवाह नहीं है। मैं अपने सुलक्षित कार्य को साध कर रहूंगा। यह ध्येय निष्ठा ही मानव को उन्नति के शिखर पर आरोहित कर सकती है। जो लक्ष्यहीन होते हैं, लक्ष्य से पुनः-पुनः जो विचलित होते रहते हैं, वे सांसारिक, सामाजिक व आध्यात्मिक किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते। अतः सभी दृष्टियों से ध्येय के प्रति अटल रहना परम् अपेक्षित है।

दहेज प्रथा समाज के लिये कलंक है। जहां शुद्धि है वहां सिद्धि है।

परिषद के प्रांगण से

अध्यक्ष की ओर से

प्रिय परिषद सदस्यमहानुभाव,

कोई भी समाज या देश अपना सुखद भविष्य आगामी पीढी के आधार पर ही निश्चित करते हैं। हमारी संस्कृति, आचार, विचार तथा व्यवहार की पवित्रता पर निरन्तर बल देती रही है। जीवन का उच्चलक्ष्य, जीवन को पवित्रता से परिपूर्ण करना हैं। ऐसी पवित्रता का विकास परिवार से होता हैं। परिवार में जैसे संस्कार बालक को प्राप्त होते हैं, वैसे ही वह विकसित होता हैं। जिस परिवार में पिता स्वयं बीड़ी-सिगरेट पीता हो, अपशब्दों का उपयोग करता हो, परिवार के सदस्य आपसी फूट व क्लेश से ग्रस्त हों, उनकी इन प्रवृत्तियों का बच्चों पर वैसा ही प्रभाव होगा। जिस परिवार में धर्म का कोई लक्ष्य न हो, अभक्ष्य व अपेय पदार्थों का उपयोग किया जाता हो, उस परिवार का बालक आदर्श या संस्कारपूर्ण होगा, ऐसा मानना आकाशकुसुम की प्राप्ति के समान हैं। इससे विपरीत जिस परिवार में धर्म व संस्कृति के परमाणुओं का संचार होता हैं, आचार-विचार में धार्मिकता को महत्व दिया जाता है, बोलचाल व्यवहार में उच्चादर्श को महत्व मिलता है, वह परिवार अपने बच्चों को अच्छे जीवन की ओर अग्रसर करने में सफल हो जाता हैं। ऐसे परिवार के बालक अपने परिवार ही नहीं समाज व देश के नाम को भी गौरवान्वित करते हैं। बालक के सुधार की प्रक्रिया घर से ही प्रारंभ होती हैं। शिक्षा शास्त्रीयों ने भी माना हैं कि परिवार सबसे महत्वपूर्ण पाठशाला है तथा माता पिता श्रेष्ठ शिक्षक हैं।

हम परिषदजनों पर सामाजिक तथा धार्मिक काफी दायित्व हैं। हमारा संकल्प समाज को उन्नत करने का है। राष्ट्रसंत पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज का आशीर्वाद हमें प्राप्त है। उन्होंने स्पष्ट उद्बोधन किया है कि – 'परिषद समाज की जन्मपत्री का अंकन करती हैं। परिषदजन स्वयं सुधारेंगे तो समाज में सुधार आएगा। वे आगे आकर समाजोत्थान का बीड़ा उठाएं।' प्रत्येक परिषदजन से मेरा आग्रह है कि वह अपने परिवार में बच्चों को अधिकाधिक संस्कारजन्य बनाने के लिए प्रयत्न करें। ऐसे बालक व बालिकाएं हमारी पाठशालाओं या शिबिरों में अधिक सार्थक परिणाम दे सकेंगे। जो परिवार बच्चों के प्रति अपना ऐसा दायित्व निर्वहित करने में सक्रिय हैं, वे पूरी समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण करते हैं। प्रत्येक परिषदजन से मेरा यही अनुरोध है।

सेवन्तीलाल एम. मोरखिया
केन्द्रिय अध्यक्ष
अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

अम्बालालजी जैन के निधन से शोक की लहर

अखील भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की दक्षिण भारत इकाई के अध्यक्ष – श्री अम्बालाल जैन (पेद्दापुरम–आन्ध्रप्रदेश) का विगत माह असामयिक निधन हो गया। वे ऐसे युवा नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करते थे जिसमें निष्ठा, धर्मसंस्कार, गुरूभक्ति तथा प्रतिभा थी। वे अच्छे वक्ता थे। उन्होंने श्री कुलपाक तीर्थ पर आयोजित दक्षिण भारत श्री सौधर्म बृहत्पागच्छीय जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ के अधिवेशन में कार्यक्रमों का संचालन किया था। आप परिषद की दक्षिण भारत इकाई के महामंत्री पद पर भी रह चुके हैं।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष – श्री सेवन्तीभाई एम. मोरखिया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष – श्री चैतन्य काश्यप, महामंत्री – श्री सुरेन्द्र लोढा तथा कोषाध्यक्ष – श्री प्रकाश कांठेड़ द्वारा जारी की गई शोक सूचना में कहा गया है कि श्री अम्बालालजी जैन एक हंसमुख, मिलनसार, कर्तव्य निष्ठ युवा थे। उनका निधन परिषद के लिए अपूरणीय क्षति है।

पाठ्यक्रम घोषित

श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ के अधिष्ठाता – श्री सुरेन्द्र लोढा ने बताया कि पूज्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के सानिध्य में ज्ञानपीठ संचालन समिति की सम्पन्न बैठक में ज्ञानपीठ द्वारा संचालित होनेवाली परिक्षाओं का पाठ्यक्रम निर्धारित कर दिया गया है। ज्ञानपीठ की ओर से होनेवाली परिक्षाएं इसी आधार पर होंगी। इस विषयक विशेष जानकारी हेतु – श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, धानमण्डी, मंदसौर – ४५८ ००१ (म.प्र.) से सम्पर्क करें।

जोगेश्वरी परिषद द्वारा विकलांग सम्मेलन आयोजित होगा।

बम्बई – शाखा परिषद जोगेश्वरी द्वारा शीघ्र ही सर्वधर्म विकलांग सम्मेलन आयोजित किया जायेगा, जिसमें विकलांग भाई–बहन अपना जीवनसाथी चुन सकेंगे। उनकी आर्थिक स्थिति एवं शिक्षण योगताओं के अनुसार सहयोग का प्रयत्न भी किया जायेगा। प्रत्यक्ष आनेवाले विकलांग भाई–बहन व साथ आनेवाले संरक्षक के भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जायेगी।

संपर्क सूत्र :– दीपक टेक्सटाईल्स, एस.वी.रोड, जोगेश्वरी (प.) बम्बई–१०२ से फार्म प्राप्त कर सकते हैं।

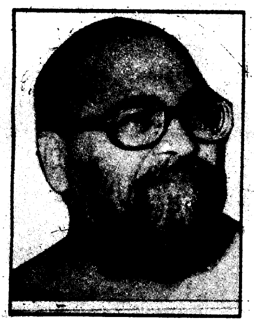

समाचार दर्शन

आचार्य श्री मधुकरजी की निश्रा में नड़ियाद में ज्ञानमंदिर का उद्घाटन सूरत में चातुर्मास प्रवेश आसाढ़सुदि १० को होगा

राष्ट्रसंत वर्तमानाचार्यदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर' की निश्रा में श्री सिद्धाचलजी तीर्थ पर नव्वाणु यात्रा सानंद सम्पन्न होने के बाद यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला के बाहर प्रांगण में श्री सुमतिनाथ जिनालय एवं श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी गृह मन्दिर का भूमिपूजन, शिलान्यास सम्पन्न हुआ। मुनिराज श्री हर्षितरत्नविजयजी, नयरत्नविजयजी, साध्वीजी श्री यशोलताश्रीजी, भक्तिरसाश्रीजी, हर्षितरेखाश्रीजी की बड़ी दीक्षाओं की विधि भी चैत्र वदि ५ को सम्पन्न हुयी।

पू. साध्वीजी श्री शशिकलाश्रीजी के वरसीतप पारणा प्रसंग पर अनुमोदनार्थ थराद निवासी धरू कालीदास खेंगारभाई परिवार द्वारा पंचान्हिका महोत्सव आयोजित किया गया। विविध महानुभवों द्वारा १०८ छोड़ का उद्यापन भी रखा गया था। (ये सभी समाचार इसी अंक में गुजराती विभाग में विस्तृत दिये गये हैं।)

पालीतणा से विहार कर अहमदाबाद होते हुए आचार्य श्री मुनिमंडलसह नड़ियाद पधारे। यहाँ जेठ सुदि १० बुधवार दि. १०.६.९२ को आपकी निश्रा में श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पंचान्हिका महोत्सव रखा गया था। जेठ सुदि १० को, सौधर्मवृहत्पोगच्छीय त्रिस्तुतिक संघ की ओर से समस्त नड़ियाद जैन संघ का स्वामीवात्सल्य हुआ।

पूज्य आचार्य श्री का चातुर्मास हेतु मुनिमंडलसह सूरत में मंगलप्रवेश आषाढ़ सुदि १० गुरूवार दि. ९.७.९२ को होगा, उसी दिन वहाँ श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर का उद्घाटन भी होगा।

भगवान महावीर पर विडियो कैसेट

बम्बई : इन्स्टिट्यूट ऑफ जैनालॉजी द्वारा लगभग ८ वर्षों के प्रयत्न के बाद तीर्थंकर भगवान महावीर के जीवन पर श्री यशोदेवसूरिजी द्वारा सम्पादित चित्रपट संपुट के ४८ चित्रों पर आधारित विडियो कैसेट तैयार की गयी है। कथानक जैन विद्वान श्री कुमारपाल देसाई ने लिखा है। इच्छुक, अनुकम्पा ट्रस्ट, १३–बी, चन्द्रनगर सोसायटी जयभिख्खु मार्ग, अहमदाबाद–७ या एनार्डे फाउन्डेशन, ६ ठा माला, बलदौटा भवन, चर्चगेट स्टेशन के सामने, बम्बई–२० से प्राप्त कर सकते हैं।

भूल–सुधार

शाश्वत धर्म के मई अंक में पृष्ठ ५२ पर छपते–छपते के अंतर्गत साध्वीजी महाप्रभाश्रीजी, प्रियदर्शनाश्रीजी, सुदर्शनाश्रीजी का आगामी चातुर्मास थराद में तय होना प्रकाशित हुआ है। थराद की जगह भीनमाल पढ़े।

थाने (महाराष्ट्र) नगरे चित्तळसर मानपाड़ा मध्ये श्री शान्तिनाथ आदि जिन बिम्बों का मंगल नगर प्रवेश

थाने – यहाँ स्टेशन से चार किलोमीटर दूर चित्तलसर मानपाड़ा में बीस जैन परिवार रहते हैं। वर्षों से दर्शन, पूजन व आराधना हेतु जिनमंदिर व उपाश्रय की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। प्रबल पुण्योदय से उसे साकार रूप मिल रहा हैं, मंदिर व उपाश्रय का निर्माण कार्य चल रहा हैं।

मंदिर में विराजित होनेवाले भगवान श्री शान्तिनाथजी, श्री सुमतिनाथजी, श्री पार्श्वनाथजी जिन बिम्बों एवं गणधर श्री गौतमस्वामीजी, गुरूदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी की प्रतिमाओं का मंगल प्रवेश वैसाख सुदि ५ गुरूवार दि. ६–५–१९९२ के शुभ दिन गच्छाधिपति, राष्ट्रसंत, जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर' के शुभाशिर्वाद एवं प्रदत्त मुहूर्तानुसार संपन्न हुआ।

कापुरबावडी के पास ग्रीनवुड कॉम्प्लेक्स से प्रातः १० बजे चांदी के रथ में भगवान को विराजमान कर स्थानीय श्री अभिनन्दन जैन मंडल की बैंड पार्टी की मधुर सुरावली के साथ शोभायात्रा प्रारंभ हुई। घोडबंदर रोड पर आगे बढती हुयी यात्रा मानपाड़ा में करीबन ११ बजे पहुंची। नगर के मुख्यमार्गों से होती हुयी गन्तव्य स्थान पर विसर्जित हुयी। जहाँ विजयमुहूर्त में विधि–विधान के साथ चल प्रतिष्ठा की गयी।

स्थानीय श्री संघ एवं इस अवसर पर पधारे सभी भाईबहनों के लिये स्वामीवात्सल्य रखा गया था।

कार्यक्रम को मंगल निश्रा साध्वीजी दिनमणीश्रीजी की शिष्यायें दिव्य किरणाश्रीजी आदि ठाणा ने प्रदान की थी। विधि विधान हेतु श्री आणंदभाई दोशी पधारे थे।

समस्त आयोजन का लाभ आहोर निवासी संघवी कुन्दनमलजी भुताजी परिवार ने लिया। ग्रीनवुड काम्पलेक्स के मालिक श्री उगमराजजी द्वारा पांच–पांच रुपये की संघपूजा एवं मानपाड़ा श्री संघ की ओर से भी संघ पूजा की गयी। (कार्यक्रम चित्र पृष्ठ ५३ पर)

शाश्वत धर्म को सप्रेम भेंट

१५१/– नीमच निवासी श्री राजमलजी डूंगरवाल (श्री राजेन्द्र चीप्स उद्योग) के सुपुत्र चि. राजेन्द्र का विवाह सौ. कां. शर्मिला के साथ होने के उपलक्ष में....।

५१/– पू. मुनिराज श्री रतनमुनिजी म. सा. के ५५ वें जन्मदिन के अवसर पर श्री मंगल स्मृति ट्रस्ट दुर्ग (म. प्र.) की ओर से....।

५०/– अलका सेल्स कार्पोरेशन भीनमाल की ओर से पू. साध्वी श्री महाप्रभा श्री जी की प्रेरणा से....।

समाचार – सार

❋ **पाली** – पांच दिवसीय विविध कार्यक्रमों के साथ १० से १४ जून तक आचार्य श्री समुद्रसूरीश्वरजी का जन्मशताब्दी समारोह एवं आचार्यश्री इंद्रदिनसूरीश्वरजी का दीक्षा स्वर्णजयन्ती समारोह मनाया गया।

❋ **बामणवाडजी** – आचार्य श्री गुणरत्नसूरिजी की निश्रा में आध्यात्मिक शिविर २९ मई से प्रारंभ हुयी, जिसमें स्कूल व कॉलेज के २५० छात्र भाग ले रहे हैं। जैनाचार्य का ९ जुलाई को पिण्डवाडा में चातुर्मास हेतु प्रवेश होगा।

❋ **डुडसी** – स्व. मुनिराज श्री चेतनाविजयजी की प्रथम स्वर्गारोहण तिथि निमित्ते सांसारिक पुत्र श्री पारसमलजी सोनगरा परिवार द्वारा मुनिराज श्री जयानन्दविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में अठ्ठारह अभिषेक सह अष्टान्हिका महोत्सव वैसाख सुदि १२ से जेठ वदि ४ तक मनाया गया।

❋ **हैदराबाद** – मुनिराज श्री दिव्यरत्नविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में चैत्री ओली की आराधना संपन्न होकर कुलपाकजी तीर्थ में वरसीतप के पारणे हुए। पेदमीरम तीर्थ में ३ जून से १० जून तक युवाओं को आध्यात्मिक ज्ञान हेतु शिबिर आयोजित की गयी, जिसका संचालन श्री कुमारपाल वी. शाह ने किया। मुनिश्री का चातुर्मास काकीनाड़ा में होगा।

❋ **छिन्दवाड़ा** – आचार्य श्री पुष्पदन्तसागरजी की निश्रा में २३ मई से १ जून तक आध्यात्मिक ज्ञान शिबिर आयोजित की गयी।

❋ **सोजत सिटी** – स्थानक वासी श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर के रूप में आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री घोषित किये गये हैं। आपका जन्म ७ नवम्बर १९३१ को उदयपुर में हुआ। ९ वर्ष की बाल्यावस्था में उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी से दीक्षा ग्रहण की। आप द्वारा लिखित व सम्पादित अब तक लगभग ३०० ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

❋ **दुर्ग** – श्री मंगल स्मृति ट्रस्ट के तत्वावधान में जैन सन्त श्री रतनमुनिजी का ५५ वाँ जन्म दिवस मनाया गया। प्रदेश शासन के राज्यमंत्री, पर्यटन, विज्ञान एवं तकनिक मंत्री श्री वृजमोहनजी अग्रवाल भी इस अवसर पर उपस्थित थे। श्री वर्धमान सेवा मंच – रायपुर द्वारा वृक्षारोपण किया जाकर उपस्थित अनेकानेक गुरूभक्तों ने गुरूगुण गान किया।

❋ **तखतगढ़** – शा. हिन्दुजी मोटाजी चोहान परिवार द्वारा आचार्य श्री सुशीलसूरीश्वरजी की निश्रा में ५ छोड़ के उजमणे एवं भक्तामर पूजन युक्त पंचान्हिका महोत्सव २० मई से २४ मई तक मनाया गया।

❋ **मुलुंड** – आचार्य श्री कलाप्रभसागरसूरिजी की निश्रा में चेक नाका अचलगच्छ जैन

संघ के तत्वावधान में जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा निमित्त पंचान्हिका महोत्सव वैसाख सुदि ८ से १२ तक मनाया गया।

❀ **इन्दौर** – भारत जैन महामंडल के तत्वावधान में ६ मई को रक्तदान शिबिर आयोजित की गयी।

❀ **हैदराबाद** – हैदराबाद से सम्मेतशिखरजी आदि तीर्थों का २६ दिवसीय यात्रा–प्रवास स्पेशल ट्रेन द्वारा भाद्रव सुदि १० दि.६–९–९२ को आयोजित किया जा रहा है। टिकीट बुकिंग एवं अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र – श्री हस्तीमल बागरेचा, C/o.प्रेमदीप नोव्हेल्टीज, १५–८–५३६ फील खाना – हैदराबाद (आं. प्र.)

❀ **अहमदाबाद** – श्री राजेन्द्रसूरि जैन पाठशाला के विद्यार्थियों को मार्च मास में पालीतणा की यात्रा करवायी गयी एवं इनाम वितरण समारोह रखा गया। पिछले २८ वर्षों से सेवारत हालचंद संघवी के शुभ हस्तों से शाल माला एवं रकम द्वारा बहुमान किया गया। उपरोक्त जानकारी पाठशाला के अध्यक्ष श्री बचुभाई चीमनलाल धरू ने दी।
(फोटो पृष्ठ १८ पर)

❀ **कुंभोज तीर्थ** – बैंगलोर, टुमकर, चित्रदुर्ग, दावणगिरी, हुबली होते हुए पूज्य आचार्य श्री राजयशसूरिजी आदि ठाणा एवं साध्वीजी सर्वोदयाश्रीजी आदि ठाणा का कुंभोज पदार्पण हुआ। आपकी निश्रा में अक्षय तृतीया को वरसीतप के पारणे एवं बुद्धिसागरसूरि आरोग्य मन्दिर का खनन एवं शिलान्यास मुहूर्त सम्पन्न हुआ। आपश्री का ४८ वां जन्मदिन प्रवेश महोत्सव भी मनाया गया। इस अवसर पर पंचान्हिका जिनभक्ति महोत्सव आयोजित किया गया।

पूज्य श्री की निश्रा में २१ जून को बनारस तीर्थोद्वार विचार विमर्श हेतु बम्बई में भारत भर के पार्श्वनाथ जिनमंदिर के ट्रस्टी गणों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया है।

❀ **जालोर** – प. पू. साध्वीजी श्री महाप्रभा श्रीजी, डॉ. प्रियदर्शनाश्रीजी, डॉ. सुदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में २८ मई से ७ जून तक ग्यारह दिवसीय छात्राओं की नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक चेतना हेतु अ. भा. श्री राजेन्द्र जयन्त सम्यग्ज्ञान कन्या शिबिर का आयोजन किया गया।

❀ **नासिक** – वरसीतप पारणा प्रसंग पर श्री संघ की विनंती से आचार्य श्री भूवनभानुसूरिजी का शिष्य परिवार सह मंगल पदार्पण हुआ। नासिक के पास विल्डोली के पास आपकी निश्रा में निर्माण होने वाले श्री धर्मचक्रतीर्थ की खनन विधि सम्पन्न हुयी। एवं पू. गणिवर्य श्री पद्मसेनविजयजी, विद्यानंदविजयजी, जयसोमविजयजी, जगवल्लभविजयजी एवं हेमरत्नविजयजी को पन्यास पद से विभूषित किया गया।

❀ **भिवण्डी** – आचार्यदेव श्री कलापूर्णसूरिजी की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीजी श्री दिनमणीश्रीजी चातुर्मास का प्रवेश गोकुळनगर में जेठ सुदि ४ को हुआ। आपकी प्रेरणा से नवकार मंत्र के ६८ अक्षरों के अनुसार ६८ एकांतर उपवास द्वारा नवकार

आराधना श्री संघ में प्रारंभ की गयी है।

❀ **बम्बई** – श्री महावीर जैन विद्यालय की स्थापना के ७५ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में ६ अक्टूबर से २६ जनवरी तक विविध कार्यक्रमों के आयोजनों के साथ मनाने का निर्णय लिया गया है।

❀ **कर्जत** – श्री अरिहंत जैन युवक संघटना के उपक्रम से एक जैन संगीत स्पर्धा २८ मई को आयोजित की गयी। जिसमें प्रथम – लोणावला, द्वितीय – इंदापूर एवं तृतीय – नागोठाणा के मंडलों को पुरस्कृत किये गये।

❀ **आहोर** – स्व. श्रीमती लसुबाई रीखबचंदजी गादिया की इच्छानुसार उनका मकान बेचकर प्राप्त कीमत एक लाख रूपये श्री टेगचंदजी नरसिंगजी ओसवाल (हरजी) ने श्री जैन भोजनशाला आहोर को भेंट रूप में दी हैं। इस कार्य में शाश्वतधर्म के प्रतिनिधी मुथा पारसमलजी वालचंदजी का सराहनीय योगदान रहा।

❀ **बीजापुर (राजस्थान)** – मुनिराज श्री रविरत्नविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में अर्हत् महापूजन, १८ अभिषेक, शांतिस्नात्रसह अष्टान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया।

❀ **शिवगंज** – मुनिराज श्री रविरत्नविजयजी आदि ठाणा की शुभनिश्रा में श्रीमति हुलासीबाई के ५०० आयंबिल का पारणा पंचान्हिका महोत्सव के साथ संपन्न हुआ।

❀ **अगवरी** – आचार्य श्री सुशीलसुरिजी की निश्रा में शा. पारसमलजी वरदीचंदजी परिवार द्वारा श्रीमती गजीबाई के विविध तपश्चर्याओं के अनुमोदनार्थ एवं जीवित महोत्सव निमित्त ५ छोड का उजमणा, सिद्धचक्र महापूजनसह पंचान्हिका उत्सव ११ मई से १५ मई तक संपन्न हुआ।

❀ **हुबली** – स्थानीय श्री राजस्थान युथ फेडरेशन द्वारा नोटबुक एवं स्कूल बेग वितरित किये गये। संस्था द्वारा बस स्टेण्ड पर प्याऊ बनाने की योजना है।

❀ **बम्बई** – श्री जयभिख्खु साहित्य ट्रस्ट के रजत जयन्ति महोत्सव के उपलक्ष में भारतीय विद्याभवन में दो दिवसीय व्याख्यान श्रेणी आयोजित की गयी।

❀ **विजयवाड़ा** – स्व. आचार्य देव श्री भद्रंकरसूरिजी के संयम जीवन अनुमोदनार्थ श्री १०८ पार्श्वनाथ पूजन सह पंचान्हिका महोत्सव आचार्य श्री वारिषेणसूरिजी की निश्रा में २४ एप्रिल से २८ एप्रिल तक मनाया गया।

❀ **मुलुण्ड** – श्री सर्वोदय पार्श्वनाथ मंदिर प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ गच्छाधिपति श्री दर्शनसागरसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में १८ अभिषेक, श्री १०८ पार्श्वनाथ महापूजनसह पंचान्हिका महोत्सव के साथ मनायी गयी।

❀ **बैंगलोर** – आचार्य श्री नयप्रभसूरिजी की निश्रा में गांधीनगर में जगवल्लभ पार्श्वनाथ की वर्षगांठ जेष्ठ वदि ११ को मनायी गयी। ध्वजारोहण, आंगी, पूजा, प्रभावना आदि का आयोजन हुआ।

❀ **कोईम्बतूर** – आचार्य श्री नयप्रभसूरिजी की निश्रा में चैत्रमास की ओली व

भगवान महावीर जन्मकल्याणक का वरघोड़ा आयोजित किया गया।

❀ **नेल्लोर** – आचार्य श्री नयप्रभसूरिजी आदि मुनिमंडल का नेल्लोर में चातुर्मासार्थ प्रवेश दि. २८ जून को होगा।

❀ **बम्बई** – गत १३ वर्षों से नियमित प्रकाशित 'समग्र जैन चातुर्मास सूची' का संकलन सम्पादन शुरू हो गया है। सम्पादक–श्री बाबुलाल जैन, 'उज्ज्वल', १०५ तिरूपति अपार्टमेंट, आकुर्ली क्रॉस रोड़ नं. १ कांदिवली (पूर्व) बम्बई–४०० ००१ ने समस्त जैन समुदायों से ३० जून तक चातुर्मास सम्बन्धी जानकारियाँ भेजने का निवेदन किया है।

❀ **डीसा** – बनासकांठा जिले में आयोजित होनेवाले पशु मेले को बंद करने की मांग जिलाधीश को एक ज्ञापन देकर बनासकांठा जिला हिंसा निवारण संघ ने की है। जिले से अनाधिकृत गौवंश को बाहर जाने से बचाने के लिए अेनीमल लिब्रेशन फ्रंट की युवा शाखा गठित की गयी है।

❀ **डीसा** – अ. भा. हिंसा निवारण संघ की बनासकांठा जिला शाखा के चुनाव में निम्नांकित पदाधिकारी चुने गये हैं। प्रमुख–श्री रतीलाल यु. सोमानी (एडवोकेट)– पालनपुर, उपप्रमुख–श्री सुरेशभाईओजा, उपप्रमुख–श्री रमेशचन्द्र हिरालाल शाह, – महामंत्री श्री हसमुखलाल मफतलाल शाह, सहमंत्री – श्री भरतभाई कोठारी, सहमंत्री – श्री जयंतीलाल गुप्ता, मानद सलाहकार – श्री अमृतलाल बी. शेठ।

❀ **सियाना** – श्री सुविधिनाथ जिनालय की ध्वजदंड की पुनः प्रतिष्ठा के पच्चीस वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में अट्ठारह अभिषेकसह पंचान्हिका महोत्सव जेठवदि १३ से जेठसुदि ३ तक पू. मुनिराज श्री जयानंदविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में सम्पन्न हुआ।

– आपका पत्र मिला –

❀ ....पठनीय सामग्री से परिपूर्ण अप्रेल ९२ का अंक बहुत पसंद आया। मुखपृष्ठ भी नयनाभिराम था। इस अंक का प्रत्येक स्तंभ प्रशंसनीय है। शाश्वत धर्म निरंतर नई उँचाइयों को स्थापित करने की दिशा में अग्रसर हो रहा हैं।

– लक्ष्मीचन्द जैन – प्रधानाचार्य, छोटी कसरावद (म.प्र.)

❀ ....शाश्वत की शाश्वतता को बनाए रखने हेतु आपने जो श्रम किया है, वास्तव में सराहनीय है।

– प्रियदर्शी – उदयपुर

शोक श्रद्धांजली

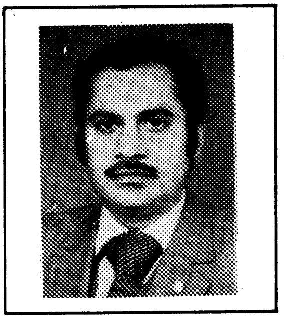

परिषद की दक्षिण भारत इकाई के अध्यक्ष श्री अम्बालालजी जैन का असामयिक निधन

❖ **पेद्दापुरम्** – राजस्थान में बागरा गांव में जन्मे श्री अम्बालालजी जैन का कार्यक्षेत्र आंध्रप्रदेश का पश्चिम गोदावरी जिला रहा। वे हँसमुख, गुरूनिष्ठ, सेवाभावी, युवा एवं अच्छे वक्ता–कर्तव्यपारायण व्यक्ति थे। पेद्दापुरम् की अनेक संस्थाओं से वे जुड़े हुए थे। जालोर में वैसाख सुदि ३ दि.५–५–१९९२ को अचानक हृदयगति रूकजाने से आपका असामयिक निधन हो गया। आपके अचानक चले जाने से परिषद व समाज को अपूरणीय क्षति हुयी है।

❖ **सांथु** – श्री शांतिलालजी रामाजी के निधन से समाज ने एक धर्मस्नेही बंधुवर खो दिया है।

❖ **दुधवा** – स्थानीय श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मन्दिर के ट्रस्टी श्री शान्तिलाल हाथीभाई का स्वर्गवास हो गया। आपके स्वर्गगमन से खोखरा – भक्तप्रल्हाद सोसाइटी व त्रिस्तुतिक संघ को अपूरणीय क्षति हुयी है। आप सेवाभावी व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे।

❖ **थराद** – धरू कालीदास खेंगारभाई का स्वर्गवास ८० वर्ष की उम्र में हुआ। पूज्य आचार्य श्री भूपेन्द्रसूरीश्वरजी व यतीन्द्रसूरीश्वरजी की निश्रा में आपने खूब आराधनायें की। आपके द्वारा स्वर्गगमन के पूर्व ही पालीतणा में आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में पंचान्हिका महेत्सव मनाया गया।

❖ **लाखणी** – पालड़ी निवासी दोशी हालचंद सरुपचंद का दुःखद अवसान ६१ वर्ष की उम्र में दि.२८–५–१९९२ को हुआ। आप धर्मप्रेमी, सरलस्वभावी व सत्यभाषी श्रावक थे।

❖ **लाखणी** – श्री गगलदास गमानचंद का अवसान चैत्र सुदि १२ दि.१४–४–१९९२ को रात्रि ११ बजे ७२ वर्ष की उम्र में हुआ। सद्गत जीवदया प्रेमी थे। जीवन में नवाणुयात्रा, वरसीतप, तीर्थयात्रायें आदि की थी। प्रतिक्रमण, सामायिक, नवकारी आदि प्रतिदिन करते थे।

भारत जैन महामंडल के अध्यक्ष – श्री संचयलाल डागा का निधन

बंबई के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समग्र जैन समाज की अ. भा. संस्था जैन महामंडल के अध्यक्ष – श्री संचयलालजी डागा का ५९ वर्ष की आयु में दिनांक ११ मई १९९२ को बंबई अस्पताल में दुःखद निधन हो गया। स्व. डागा बंबई की अनेकानेक धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे तथा देश एवं विदेश में भारत जैन महामंडल के द्वारा जैन धर्म के प्रचार प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दे रहे थे।

दिनांक १३ मई १९९२ को भारत जैन महामंडल एवं अन्य अनेक सभा संस्थाओं द्वारा स्व. डागा की श्रद्धांजली सभा अणुव्रत सभागार, मरीन ड्राईव, बंबई में साध्वीश्री सरोजकुमारीजी के सानिध्य में रखी गई। सभा का संचालन करते हुए जैन जगत के संपादक श्री चंदनमल "चांद" ने सभा द्वारा स्वीकृत शोक प्रस्ताव पढा। साध्वीश्री सरोजकुमारीजी ने जीवन की क्षंण भंगुरता पर प्रकाश डालते हुए स्व. डागा के पारिवारिक जनों को आर्तध्यान न करते हुए धर्मध्यान की प्रेरणा दी। एक लोगस्स के सामूहिक ध्यान के बाद साध्वी श्री द्वारा सुनाये गये मंगलपाठ से श्रद्धांजली सभा संपन्न हुई।

राष्ट्रसंत उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म.सा. का स्वर्गवास

राजगृही-आत्मदृष्टा, राष्ट्रसन्त, उपाध्याय श्री अमरमुनिजी म.सा. का स्वर्गवास वीरायतन (बिहार)में जेठ वदि ३० सोमवार १ जून को मध्यान्ह ४-३० बजे हुआ । आपकी आयु ९० वर्ष की थी । आपने पन्द्रह वर्ष की आयु में श्री पृथ्वीचंद्रजी के पास माघ शुक्ला १० संवत १९७६ में भागवती दीक्षा ग्रहण की थी । उपाध्यायजी ने अपने जीवन काल में अहिंसा, सत्य और विश्व बधुत्व की भावना के प्रचार-प्रसार में अभूतपूर्व भूमिका अदा की । आप जैन शास्त्रों के अलावा वैदिक व बौद्ध ग्रंथो के भी प्रकाण्ड विद्वान थे ।

उपाध्यायजी ने वीरायतन की स्थापना भगवान महावीर के २५०० वें निर्वाण दिवस के अवसर पर सेवा-शिक्षा और साधना के विकास लिये की ।

२ जून की शाम ४.३० बजे अंतिम संस्कार के समय हजारों लोग उपस्थित थे ।

❀❀❀

★★★ शाश्वत धर्म ★★★

१ अप्रेल १९९२ से ३० मई ९२ तक बनाये गये सदस्यों का विवरण

क्र. सं.	नाम व ग्राम	२० वर्षीय	१०वर्षीय	३ वर्षीय	कुल
१.	नवीनभाई संघवी - अहमदाबाद	–	११	–	११
२.	श्री. जे. के. संघवी - थाने	–	–	७	७
३.	श्री कांतिलाल भंडारी राजगढ	–	–	१	१
४.	श्री मोहनलालजी एच. ढालावत बम्बई	–	–	५	५
५.	श्री उत्सवलालजैन इन्दौर	–	–	१	१
६.	श्री नरेन्द्र पोरवाल मद्रास	–	–	१	१
७	श्री ओच्छवलाल जैन रानापुर	–	–	१	१
८.	श्री धनराज मेवाड़ा चाणोद	–	–	१	१
९.	श्री हरकचंदजी खीमावत इरोड़	–	–	३	३
१०.	कार्यालय - थाने	–	१	८	९
			१२	२८	४०

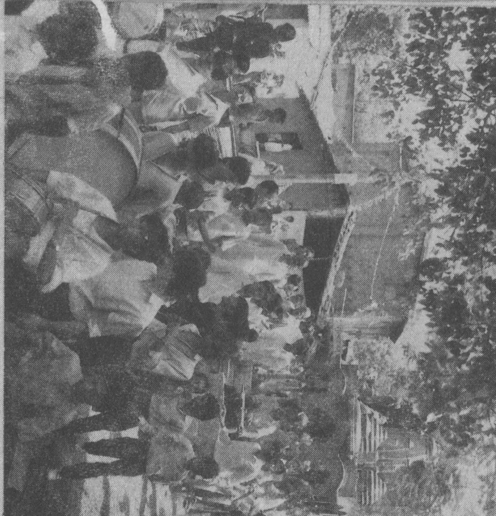

थाने (चित्तळसर मानपाडा में प्रभु एवं गुरु प्रतिमा प्रवेश एवं चल-प्रतिष्ठा समारोह ✦ वैसाख सुदि ५ दि. ७/५/९२

(1.) चांदी के रथ में प्रतिमायें विराजमान कर ग्रीरवुड काम्पलेक्स से शोभा यात्रा प्रारंभ (2.) मानपाडा श्री संघ द्वारा संघवी परिवार का स्वागत (3.) नगर प्रवेश का दृश्य, चित्र में अभिनंदन जैन मंडल दृष्टिगोचर हो रहा है। (4.) प्रतिमा प्रतिष्ठित करते हुए संघवी परिवार

સમાચાર-દર્શન

આચાર્યજીની નિશ્રામાં વિવિધ શાસન પ્રભાવના
સિદ્ધાચલ મહાતીર્થ નવ્વાણું યાત્રા
માળારોપણ - પ્રસંગ

અનંત સિદ્ધ પરમાત્માઓની નિર્વાણભૂમિ શ્રી સિદ્ધાચલ મહાતીર્થ ની શીતળ છાયામાં રાષ્ટ્રસંત-વર્તમાનાચાર્ય-તીર્થપ્રભાવક શ્રીમદ્ વિજયજયંતસેન સૂરીશ્વરજી મહારાજશ્રી તથા મુનીમંડળની પરમ તારક નિશ્રા માં છેલ્લા ૬૩-૬૩ દિવસોથી નવ્વાણું યાત્રાનો અનોખો મહામહોત્સવ ચાલી રહ્યો હતો.

અદ્વિતીય સિદ્ધાચલ મહાતીર્થ નવ્વાણુંયાત્રા ની અનુમોદના નિમિત્ત પ્રાન્તે જિનેન્દ્ર ભક્તિ સ્વરૂપ અષ્ઠાન્હિકા મહોત્સવનું આયોજન રાખવામાં આવેલું.

અષ્ઠાન્હિકા મહોત્સવ ચૈત્રસુદી - ૧૩ થી ચૈત્રવદી - ૫ દરમ્યાન રાખેલ.

મંદિરનું ભૂમિપૂજન

ચૈત્રસુદી-૧૩ ના દિવસે સવારે ૮.૩૦ વાગે યતીન્દ્રભવન જૈન ધર્મશાળા મધ્યે "પ્રભુશ્રી સુમતિનાથ જિનેન્દ્ર પ્રાસાદ તથા પ્રાતઃ સ્મરણીય - જગત્પૂજ્ય પ્રભુશ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્રસૂરીશ્વરજી મહારાજના ગુરૂમંદિર" નું ભૂમિપૂજન (ખનનવિધિ) નવ્વાણું તીર્થયાત્રા આયોજક થરાદ નિવાસી શ્રેષ્ઠિવર્ય શ્રીમાન્ અદાણી ચુનીલાલ નાગરદાસ ના વરદ્હસ્તે સંપન્ન થયું. બપોરે શ્રી મહાવીર સ્વામી જન્મ કલ્યાણકની આરાધના નિમિત્તે શ્રી મહાવીર સ્વામી પંચકલ્યાણક પૂજા ઘણાજ ઉમંગ અને ઉલ્લાસભરે ભણાવવામાં આવી.

સાંજે પાંચ વાગે આદાણી-ઝોહા-વોહેરા-શશિયાણી-પરીખ-મોદી-વિ. પરિવાર કુંવારકા માતા જૈન ટ્રસ્ટ તરફથી અદાણી ચુનીલાલ નાગરદાસ નું સન્માનપત્ર અર્પણ કરવા દ્વારા બહુમાન કરવામાં આવ્યું.

શ્રી લલિતભાઈએ સન્માન ના ઉપલક્ષમાં સમગ્ર પરિવાર.નો આભાર વ્યક્ત કર્યો. ચૈત્રસુદી - ૧૪ નો દિવસ પણ ભરપૂર કાર્યક્રમો વચ્ચે પસાર થયો બપોરે શ્રી સમકિત અષ્ટ પ્રકારી પૂજા વિવિધ રાગ-રાગીણીઓમાં ભણાવવામાં આવી. ચૈત્ર સુદ પુર્ણિમાનું મહત્વ તો જગ જાહેર છેજ. એ દિવસે પાંચ કોટિ મુનિવરો સાથે પુંડરિક સ્વામી (ઋષભસેન) ગણધરે સિદ્ધિપદ પ્રાપ્ત કરેલ. પ્રાયઃ દશહજાર યાત્રિકોએ ચૈત્રીપુનમ ના દિવસે સિદ્ધાચલ તીર્થની યાત્રાનો આનંદ માણ્યો. બપોરે ચૈત્રીપુનમ નો દેવવંદન રાખવામાં આવેલ. તથા સિદ્ધાચલ મહાતીર્થ નવ્વાણું-પ્રકારી પૂજા ભણાવાઈ. ચૈત્રવદી-૧ ના દિવસે લગભગ ૨૦૦ જેટલા આરાધકોએ શાશ્વતી ઓળી કરેલ તેનાં સામૂહિક પારણાં રાખેલ. ચૈત્રીપુનમ નિમિત્તે પ્રાયઃ ૧૨૫ જેટલા છઠ્ઠ-અઠ્ઠમ થયા તે તપસ્વીઓ ના પારણાં પણ રાખવામાં આવેલ.

યતીન્દ્ર ભવન જૈન ધર્મશાળામાં જિનમંદિરનો શીલાન્યાસ વિધિ

ચૈત્રવદી - ૧ ના દિવસે રાષ્ટ્રસંત-તીર્થ પ્રભાવક-આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરીશ્વરજી મ.સા. ની નિશ્રામાં વિજય મુહૂર્તે જિનમંદિર તથા ગુરૂમંદિર ની શીલા સ્થાપન વિધિ નૈનાવા (ગુજરાત) નિવાસી વેહમુથા ચુનીલાલ ભૂરાજી લાલાજી આદિ. નવ મહાનુભાવોના હસ્તે થઈ. મંદિર-ગુરૂમંદિર નિર્માણ નું કાર્ય ત્વરીત ગતિ એ આગળ ધપી રહ્યું છે.

બપોરે શ્રી આદીશ્વર પંચકલ્યાણક પૂજા ભણાવાઈ હતી. ચૈત્રવદી - ૨ નો આખો દિવસ ખૂબજ ઉમંગ અને ઉત્સાહ ના વાતાવરણમાં વ્યતીત થયો. ચૈત્રવદી - ૩ ના દિવસે શ્રી સિદ્ધચક્ર મહાપૂજન કચ્છ નિવાસી કરમશીભાઈ ખોના એ ખૂબ સુંદર રીતે ભણાવ્યું.

ચૈત્રવદી - ૪ અને ૫ના રોજ વિવિધ સંસ્થાઓ તથા અદાણી પરિવારના વ્યાપારિક સંકુલો તરફથી સન્માન ના કાર્યક્રમો ગોઠવવામાં આવ્યા.

બૃહદ્ દીક્ષા પ્રદાન વિધિ

ચૈત્રવદી - ૫ ના રોજ સવારે પૂજ્ય ગુરૂદેવ રાષ્ટ્રસંતાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરીશ્વરજી મ.સા. ના તારક નિશ્રા માં મુનિરાજશ્રી હર્ષિતરત્ન વિજયજી - મુનિરાજશ્રી નયરત્ન વિજયજી - તથા શ્રમણી શ્રી યશોલતાશ્રીજી - સાધ્વીશ્રી ભક્તિરસાશ્રીજી અને સાધ્વીશ્રી હર્ષિતરેખાશ્રીજી ની વડીદીક્ષા વિધિ સંપન્ન થઈ. વિધિ દરમ્યાન સાધ્વીજીશ્રી હર્ષિતરેખાશ્રીજી નું પરિવર્તીત નામ સાધ્વીજી શ્રી હર્ષદર્શનાશ્રીજી રાખવામાં આવેલ. શેષ શ્રમણ - શ્રમણીઓનાં નામ પૂર્વવત્ રાખેલ.

સાંજે પાંચ વાગે નવ્વાણું યાત્રા આયોજક શ્રીમાન્ કુંવરજી દેવરાજ અદાણી પરિવારે સમગ્ર આયોજન "યતીન્દ્રભવન જૈન ધર્મશાળા"માં રાખેલ તેથી પ્રભાવિત થઈ "યતીન્દ્રભવન જૈન ધર્મશાળા" ના ટ્રસ્ટી મંડળે સન્માન પત્ર અર્પણ કરી અદાણી પરિવારનું અભિવાદન કરેલ.

નવ્વાણું યાત્રા આરાધકો તરફથી સન્માન

વિવિધ માર્ગો દ્વારા આત્માનું કલ્યાણ કરવાનો જગહિતકર જૈન શાસન નો ઉદ્દેશ છે. એ કલ્યાણકારી પથ પંક્તિમાં 'મન્હજિણાણં' સૂત્રકાર ભગવંતે રહજથાતિત્થજત્તાયનું પદ મૂકી તીર્થયાત્રા તરફ સૌનું લક્ષ દોર્યું છે. વર્તમાન અવસર્પિણીના આદિ તીર્થંકર ઋષભદેવ સ્વામી પૂર્વનવ્વાણુંવાર તથા અન્ય બાવીશ તીર્થંકરો પણ સિદ્ધાચલ મહાતીર્થ ઉપર પધાર્યા હતા. બસ, ત્યાર પછી ઋષભદેવ સ્વામીની યાત્રા સ્મૃતિ રૂપે આજે ભાવિક ભક્તો નવ્વાણું યાત્રા કરી સ્વજીવન ધન્ય બનાવે છે. પૂ. રાષ્ટ્રસંતાચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરીશ્વરજી

મ.સા. ની વૈરાગ્ય વર્દ્ધક વાણી સાંભળી "અદાણી કુંવરજી દેવરાજ પરિવાર" ને નવ્વાણું યાત્રા કરવા-કરાવવાની ભાવના પ્રબળ બની. વિશાળ પરિવારના સ્નેહસભર સંબંધો થી આકર્ષાઈ લગભગ ૬૨૦ જેટલા આરાધકો નવ્વાણું કરવા આવ્યા. આવેલ દરેક મહેમાનોનાં દિલ આપે અનૂઠા આયોજનના માધ્યમથી જીતી લીધાં. યાત્રિકોએ પણ અદાણી પરિવારનું સન્માન કરવાનો નિર્ણય કર્યો. વિવિધ મહાનુભાવોએ સન્માનપત્ર અર્પણ કરી પાવાપુરી-વિગેરે રચનાઓ દ્વારા સંઘપતિ નું બહુમાન કર્યું.

સન્માન સમારોહ ના અવસરે સેવંતિભાઈ મોરખીયા, સુજાનમલજી જૈન - હરીભાઈ ભણશાળી - પંડિતજીશ્રી વિનોદભાઈ - ગિરિશભાઈ પેથાણી - કુમારપાળભાઈ સંઘવી - રમેશભાઈ પેથાણી - કુંદનમલજી કાકડીવાળા - ગગલદાસ સંઘવી વિગેરે મહાનુભાવોએ પ્રાસંગિક વક્તવ્યો રજૂ કર્યાં. સમગ્ર સમારોહ ના મંચનું સંચાલન પ્રવિણભાઈ કુવાળાવાળા - તથા કુંદનમલજી કાકડીવાળાએ સુંદર રીતે કર્યું.

ચૈત્રવદી - ૬ ના દિવસે અદાણી પરિવારનો વિધિવિધાન પૂર્વક પૂ. ગુરૂદેવશ્રીની નિશ્રામાં ચતુર્વિધ સંઘ સમક્ષ માળા રોપણ વિધિ કરવામાં આવી.

સમગ્ર મહોત્સવ દરમ્યાન શ્રી જિનેશ્વરદેવની પૂજા તથા રાત્રી ભક્તિ ભાવનામાં જૈન 'સંગીતકારોએ ભક્તિની ધૂમ મચાવી દીધી.

યતીન્દ્ર ભવન જૈન ધર્મશાળામાં 'આરાધના કક્ષ' નિર્માણ હેતૂ સંઘવી કુમારપાળ શાંતિલાલ તરફથી તથા ભોજનખંડ હેતૂ અદાણી ચુનીલાલ નાગરદાસ પરિવાર તરફથી સારી રકમની થોપણા કરવામાં આવી. આરાધના કક્ષ તથા ભોજનખંડ નું નિર્માણ કાર્યપણ અવિરત ગતિથી ચાલી રહ્યું છે.

અક્ષયતૃતીયા પંચાન્હિકોત્સવ

પૂ. સાહિત્યમનીષી - તીર્થપ્રભાવક વર્તમાનાચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરીશ્વરજી મ. ની તારક નિશ્રામાં સાધ્વીજીશ્રી શશીકલાશ્રીજી મ. ના વરસીતપ અનુમોદના નિમિત્ત ધરૂ કાળીદાસ ખેંગારભાઈ થરાદનિવાસી તરફથી પંચાન્હિકા ઉત્સવ નું આયોજન રાખવામાં આવેલ.

પંચાન્હિકા ઉત્સવ ચૈત્રવદી - ૧૩ થી વૈશાખ સુદ - ૨ સુધી રાખવામાં આવેલ. તે દરમ્યાન મહાવીર સ્વામી પંચકલ્યાણક - શ્રી નવપદજી - પાર્શ્વનાથ પંચકલ્યાણક ભક્તામર મહાપૂજન તથા સિદ્ધચક્ર મહાપૂજન ધરૂ ફૂલચંદ પાનાચંદ પરિવાર, પારેખ બલવંતસિંહજી તથા નિમ્બાહેડા સંઘ તરફથી ભણાવવામાં આવેલ.

વિવિધ મહાનુભાવો દ્વારા ૧૦૮ છોડના ઉદ્યાપન નું આયોજન પણ કરવામાં આવેલ. આચાર્યશ્રીનું ચાતુર્માસ સૂરતમાં નક્કી થયેલ છે. અમદાવાદ, આણંદ, નડિયાદ થઈ અષાડ સુદ ૧૦ ને ચાતુર્માસ પ્રવેશ થશે.

દેશી ઉપચારથી પણ કેન્સર મટી શકે છે !

કેન્સર એટલે કેન્સલ એવી એક લોકોક્તિ છે. મોટે ભાગે લોકો એવું માને છે કે કેન્સર મટતું જ નથી પરંતુ અહીં આપણા જેવા જ એક સીધાસાધા માનવીની કથા આલેખાઈ છે જે આજે પણ ટટ્ટાર દેહે જીવે છે જે દેહ એકવાર કેન્સરને કારણે અલવિદા કરી જવાનો હતો.

મારા બનેવી શ્રી ભાસ્કરરાવ રાનડે (સ્વાતંત્ર્ય સૈનિક, ઉંમર વર્ષ ૭૮ નિવૃત્ત સરકારી કર્મચારી)ને નડિયાદના શ્રી નટુભાઈ શાહને મળવાની ખુબ જ ઈચ્છા થવાથી અમે તેમના બંગલે ગયા ત્યાં એક સ્ફૂર્તિલા સદગૃહસ્થે અમારૂ સ્વાગત કરતાં કહ્યું, હું પોતેજ નટુભાઈ છું અમોને આશ્ચર્ય થયું શું એ આ જ નટુભાઈ છે જેઓ ત્રણ વર્ષ પહેલા કેન્સરની છેલ્લી અવસ્થામાં હતા અને દિવસો ગણતા હતા !!

પણ એ હકીકત છે, સત્ય ઘટના છે તેમની કેન્સર જેવી જીવલેણ બિમારીનો અને તેના પરના પોતાના જ ઉપચારની વિગત તેમના જ શબ્દોમાં સંક્ષેપમાં અહીં રજૂ કરૂ છું.

તેઓ કહે છે ૧૯૮૯ના ચોમાસામાં મને ખૂબ તાવ આવવા લાગ્યો સખ્ત ઉધરસથી હું આખી રાત પીડાતો. નિષ્ણાત ડોક્ટરોને બતાવ્યું કોઈના મતે મને ચોમાસુ નડે છે તો કોઈના મતે મને ધૂળની એલર્જી છે ! ક્યારેક તાવ ૧૦૪ પર પહોંચી જતો અને હું વિચારશૂન્ય બની પથારી પર પડ્યા પડ્યા કણસતો.

૧૭-૭-૮૯ના રોજ મને ઉપરાછાપરી ચક્કર આવવા લાગ્યા. હું લગભગ બેભાન અવસ્થામાં જ હતો. ફરીથી ડોક્ટરોને બોલાવ્યા એક કહે તમને હાર્ટએટેક આવવાની તૈયારી છે તો બીજો કહે મધુપ્રમેહ છે કાર્ડીઓગ્રામ લેવાયો અને ૧૫ દિવસ પૂર્ણ આરામની સૂચના આપી મને દવા અપાઈ. પણ પંદર દિવસમાં ફરક ન દેખાતા મને નડિયાદના નિષ્ણાત અને સુપ્રસિદ્ધ ડોક્ટરને બતાવ્યો તેઓ ચમકી ગયા મને અમદાવાદની સિવિલ હોસ્પિટલમાં તાત્કાલિક ખસેડવાની સૂચના મારા પત્નીને આપી જતા જતા તેઓ મને કેન્સર છે અને હવે હદબહાર ફેલાયો હોવાનું પણ કહ્યું.

અમદાવાદનાજ બીજા નિષ્ણાત ડોક્ટરને મને બતાવતા તેઓએ, "આ કેઈસ ખુબ જ ગંભીર હોવાથી હવે દિવસો જ ગણી લેવોનો સ્પષ્ટ અભિપ્રાય આપી પોતાની હોસ્પિટલમાં રાખવાની ના પાડી દીધી ! છેવટે મારા પુત્રીના અમદાવાદમાં રહેતા નણંદ ડો. રેણુકાબેન શાહે મારી તમામ જવાબદારી ઉઠાવવાની હાર્દિક તૈયારી બતાવતા એ ડોક્ટરે મને એક નર્સીંગ હાઉસમાં દાખલ કરી ઉપચાર શરૂ કર્યા. તેમના ઘણા પ્રયત્નો હોવા છતાં મારો કર્કરોગ જરાય કાબૂમાં આવતો ન હતો. છેવટે મારા પત્નીને ખાનગીમાં બોલાવી, "હવે તમે તમારા અમેરિકાસ્થિત પુત્રને બોલાવી લો જેથી પિતા પુત્રની અંતિમ ભેટ થશે' એવી સૂચના આપી.

ડોક્ટરે મારા પર ઉપચાર ચાલુ રાખ્યા હતા જ કિમોથેરાપી, ઈંજેક્શન ચાલુજ હતા ઉપરાંત મારા શરીરમાં બાટલામાં રહેલું પ્રવાહી પણ અપાતું હતું. દરમ્યાન મારો એક ભાણેજ મારા તમામ રિપોર્ટ લઈ મુંબઈના વિશ્વ વિખ્યાત ટાટા કેન્સર ઈન્સ્ટીટ્યૂટમાં બતાવી આવ્યો ત્યાંના ડોક્ટરો અમદાવાદના ડોક્ટરો સાથે પૂર્ણ સહમત હતા અને આવી છેલ્લી ઘડીએ દર્દીને મુંબઈ લાવવાની ગંભીર ભૂલ ન કરવા સખ્ત સૂચના આપી.

હવે મારા સ્વજનોએ મારી આશા.છોડી દીધી. કેમ ન છોડે ? મારૂ શરીર ખુબ જ વૃદ્ધ લાગતું હતું• શરીર પર નહીવત માંસ હતું આખી ત્વચા કાળી પડી ગઈ હતી. માથા પરના તમામ વાળ ખરી પડ્યા હતા. હેડકીઓ અને ઉલ્ટીઓ વારંવાર આવતી હતી જ. શ્વાસ રૂંધાઈ જતો અને અવાજ તો સાવ બેસી ગયો હતો. દ્રષ્ટિ મંદ પડી હતી.

પણ મારો ભાણેજ ખુબ જ આશાવાદી હતો. તેણે મારા માટે કેન્સર અંગે પુસ્તકોના પુસ્તકો ખરીદી લાવી મારા હાથમાં મૂક્યા તેમાં શિવામ્બુ (માનવમૂત્ર) અંગેની એક ચોપડી હતી એ સિવાય જ્વારા અને ફળોનો રસનું સુંદર પુસ્તક હતું મેં ડોક્ટરને જાણ ન થાય એ રીતે એ બન્ને વસ્તુઓનું પ્રાશન શરૂ કર્યું. ભારતમાં વિપુલ પ્રમાણમાં મળતા ગળજીભડા, કુંવરપાઠુ અને અરડુસીનો રસ પણ લેવાની શરૂઆત કરી. સોળમાં દિવસે મળ વિસર્જનમાં કેટલીક કંઠક વસ્તુઓ પડી ગયાનો મને ભાસ થયો.

મહિના પછી ફરીથી અમદાવાની હોસ્પિટલની મુલાકાત લીધી ડોક્ટરોએ મને તપાસ્યો અને વારંવાર તપાસ્યો ! તેઓ ખુબ આશ્ચર્યથી બોલી ઉઠ્યા "નટુભાઈ શાહ આજે સુદ્રઢ બાંધો ધરાવે છે.

—સુરેદ્રનાથ નિફાડકર

જાગતા રે' જો

આવ્યા છો તો એક દિવસ જવાનું પણ છે. અણધાર્યું તેડું આવશે; ઊંઘમાં ન રહેવાય માટે જાગતા રે'જો !

કૃત્રિમ પ્રેમ દાખવાનારા ખરા પ્રસંગે પાછા ખસી જશે, ખબર નહિ પડે; માટે જાગતી રે'જો !

ઘણું ય ભેગું કરવા છતાં કોઈ પણ કાંઈ લઈ જવા નહિ દે; માટે જાગતા રે'જો !

હસતા કે રડતાં એક દિવસ બધુંય છોડવાનું છે; માટે જાગતા રે'જો !

કષાય લૂંટારા આવી તમારા આત્મધનને લૂંટી ન જાય માટે જાગતા રે'જો !

(મધુકર)

અજબ એ આત્મબળ...

પ્રસિદ્ધ ઉદ્યોગપતિ શ્રેષ્ઠિવર્ય શ્રી કસ્તૂરભાઈ લાલભાઈના સગાકાકા શ્રી મણીભાઈ અને કાકી રતનશેઠાણીના જીવનનો આ પ્રસંગ ભગવદ્ શ્રદ્ધામાં પ્રેરક છે.

રતનશેઠાણીને તીર્થંકર દેવ ઉપર અડગ શ્રદ્ધા, ધર્મકરણીથી એમનો દિવસ શરૂ થાય અને ધર્મધ્યાન કરીનેજ નિદ્રા પણ લે. ઈષ્ટદેવ તીર્થંકરનું સ્મરણતો ગમે તે અગત્યનું કાર્ય હોય તોયે ચૂકે નહીં.

કહે છે સંસારી જીવોને સુખનાં ચાર સાધન
પહેલું સુખ જાતે નર્યા, બીજું ધન સંપત્તિ ભર્યા,
પ્રીતે રહે નારી પતિ, ચોથું સુખ થાય સંતતિ ॥

બસ આ બધું મળી જાય તો માનવનું મન સંતુષ્ટ.

હવે યોગાનુયોગ રતનશેઠાણીને ઘેર પ્રથમ ત્રણ સુખ તો અપરંપાર પણ ચોથા સુખમાં એક જ દીકરી. વારસાને દીપાવનાર દીકરો દૈવે ન દીધો.

કોકને દેવના દીધેલ દીકરાની ખોટ તો વળી કોકને દીકરા હોય તો ભાગ્યે દીધેલ સંપત્તિનો અભાવ. કાંતો દીકરા મેળવવા અને કાંતો સંપત્તિ મેળવવા સંસારીઓના જીવનરથ દોડ્યા જ કરે. આમજ...

શેઠ-શેઠાણીને પણ વિચાર થાય, "દીકરી તો પારકી થાપણ કહેવાય અને આપણેય કાંઈ અમરપટ્ટો થોડો લખાવી લાવ્યા છીએ. દીકરો હોયતો વહુ આવે ને ઘર ચાલે". એવું છે ને કે પૈસાદારની ચિંતા કરનારેય ઘણા, શ્રીમંતના સો સગાને હજાર વલિસરી. ત્યાં તો વગર પૂછી સલાહ દેનાર અને જી હજુરીયાનો તોટો ન હોય.

કોઈ કાંઈ સલાહ દે, કોઈ વળી ભળતીજ બીજી ભલામણ કરે. મોટેરા નવીજ શિખામણ આપે. શેઠ તો સમજુ કે જેની જેવી લેણ-દેણ ! શેઠાણી નેતો ભગવાન ઉપર પૂર્ણ શ્રદ્ધા ! ભગવાન કહે છે. "ન કરેલું ફળતું નથી અને કરેલું કંઈ મિથ્યા થતું નથી. પછી ભલે તે સારૂં હોય કે ખરાબ. આતો કુદરતનો ન્યાય છે કરે તેવું ભરે".

એવી વાતોમાં પાડોશીઓને જપ થોડો વળે ? "બા આમ સાવ હાથ જોડી બેસી રહે તે કંઈ ચાલે ? કંઈક બાધા-આખડી રાખો, ભાગ્યમાં હોય તોયે ઉદ્યમ વગર ન મળે." વળી એક ભાઈ કહે "જુઓ રતનકાકી, મંત્ર, તંત્ર આગળતો ભૂતનેય ભાગવું પડે. દેવતાને હાજર થવું પડે. પછી એની સેવાથી દીકરો ન મળે એ વાતમાં માલ શું ? "

એ વખતે શેઠાણીએ જે જવાબ આપ્યો તે ખરેખર આપણી પણ શ્રદ્ધાની કસોટી કરવાની પારાશીશી જેવો છે. શું ખરેખર ! આપણને આપણાં શાસનદેવ અરિહંત ઉપર

એવી શ્રદ્ધા ખરી કે ? "અરે ભાઈ ! બાધા આખડી, મંત્ર તંત્ર, અને કામણ ટૂમણ, દોરા-ધાગા એ બધાં મિથ્યા હવાંતિયા છે. ભગવાને એને નકામા કહ્યા છે. ભાગ્યમાં હશે તો મોડું વહેલું મળ્યા વગર નહીં રહે. અને નહિં જ હોય ભાગ્યમાં તો ત્રણ કાળેય મળનાર નથી. આપણે તો ધર્મ-આશ્રયજ શોધવો." હવે કહો સલાહ આપનારા શું બોલે ? કો'ક કહે પદ્માવતીને આરાધો, નાકોડા ભૈરવને, મણીભદ્રને, ઘંટાકર્ણને પૂજો, યજ્ઞ કરાવો. પુત્ર પ્રાપ્તિનાં વિધિ વિધાન કરાવો. પુત્ર ન સાંપડે તો કહેજો. એ વખતેય દૃઢ નિશ્ચયવાળા શેઠાણીનો એકજ બોલ "એવા મિથ્યા વિધિ વિધાનોમાં પડીને આપણાજ ધર્મને શીદ અભડાવવો ?" ખરેખર એ સત્ય હકીકત છે...

જો સાધુ મહાત્માઓ, મંત્ર શાસ્ત્રીઓ, તાંત્રિકો કે ઓલિયા, પીર, ફકિરો જો પોતાના જોર આપી શકતા હોય તો પોતાનું ભાગ્ય કેમ ન સુધારે ? એવું છે ને કે "કાગનું બેસવું ને ડાળનું ભાંગવું" ન્યાયે કદાચ કોઈ તમને કહી દે કે "જાવ આમ થશે ને દૈવયોગે એમજ થાય તો તેને ઘણા વચનસિદ્ધ પુરૂષ માનવા લાગે છે. છેવટે રતનશેઠાણીને વગર મંત્ર-તંત્રે, બાધા-આખડી કે દોરા-ધાગા વિના દેવી-દેવલાંને ઉપાસ્યા વિનાયે એક પુત્ર થયો.

એ પુત્રની સ્મૃતિમાં "શેરથા ગામ" (કલોલ પાસે) સમીપે જિનેશ્વર દેવ પ્રરૂપિત અહિંસા ધર્મના પ્રતિક રૂપે પશુઓને પાણી પીવાનો હવાડો બનાવ્યો.

એ પનોતા પુત્ર ચીનુભાઈના નામે જગપ્રસિદ્ધ થયા.

શેરથાનો એ હવાડો રતનશેઠાણી અને મણિભાઈની ધર્મશ્રદ્ધાની દિવાદાંડી બની રહ્યો.

● મુનિશ્રી પ્રશાંતરત્નવિજયજી

તારી ગણત્રી શું ?

છ ખંડના ચક્રવર્તી જેની સેવામાં લાખો દેવતા રહેતા હતા તેમને પણ યમરાજે નથી છોડ્યા તો પછી તારી ગણત્રી શું ?

અનેક પ્રકારની શક્તિઓ હતી જેના પાસે એવા રાવણને પણ કાળના જડબામાં સમાઈ જવું પડ્યું તો પછી તારી ગણત્રી શું ?

સોનાના પહાડ ઊભા કરનારા નંદરાજાઓને પણ યમનું તેડું આવી ગયું હતું. તો પછી તારી ગણત્રી શું ?

ધર્મતીર્થની સ્થાપના કરનાર અનંતજ્ઞાની તીર્થંકર ભગવંતોને પણ કાળે નથી છોડ્યા.

卐 卐 卐

મધુકર

ભારતની પ્રજાના મોંમાંથી તાજું દૂધ અને શુધ્ધ ઘી આંચકી લેવાનું વિરાટ ષડયંત્ર

અનેક મલ્ટીનેશનલ કંપનીઓ ભારતીય દૂધ ખરીદીને દૂધમાંથી અન્ય પદાર્થો બનાવવા વિરાટકાય યોજનાઓ સાથે આ ધંધામાં ઝંપલાવવા રીતસર થનગની રહી છે. આ સમાચાર ભારતની ગ્રામીણ તથા શહેરી બંને પ્રજા માટે આઘાતજનક છે.

આ દેશમાં દૂધને જ્યારથી વેપારની ચીજ બનાવી દેવાઈ, બસ ત્યારથી ભારતીય પ્રજા જીવન-મરણનો જંગ ખેલી રહી છે. પ્રજાના સ્વાસ્થ્ય-સમૃધ્ધિ અને સામાજિક રીવાજોનો પશ્ચિમી ઢબના ડેરી ઉદ્યોગે ખતરનાક રીતે ખાત્મો બોલાવ્યો છે. હવે જો આ સંખ્યાબંધ દેશીવિદેશી કંપનીઓને આ ક્ષેત્રે પ્રવેશવાના પરવાના આપવામાં આવશે તો પ્રજાના જખમ ઉપર મીઠું ભભરાવવા જેવું આ કૃત્ય ગણાશે.

તાજું દૂધ અત્યંત રૂચિકર-સ્વાદિષ્ટ-વાત-પિત્તનો નાશ કરનાર, બુધ્ધિ બળ તથા લોહી વધારનાર અને તાજગી આપનાર છે. વળી દૂધને અનેક પ્રકારની ઔષધીઓમાં મિશ્રણ કરીને લેવાય તો ઘણા દરદોમાં ઉપયોગી બને છે: દા.ત. અર્જુનની છાલ ગાયના દૂધમાં ઉકાળીને પીવાથી તૂટેલું હાટકું સંધાઈ જાય છે. ગાયને શતાવરી ખવડાવીને દરદીને તે ગાયના માત્ર દૂધ પર જ રાખવામાં આવે તો ટી.બી. મટી જાય છે. આવા તો અનેક કષ્ટદાયક રોગો આ રીતે મટાડી શકાય છે. ગાયનું દૂધ શરીરમાં વિવિધ કારણોએ પેદા થતા ઝેરનો નાશ કરે છે. આયુર્વેદમાં દૂધને જીવન ટકાવનાર ઉત્તમ ઔષધ ગણવામાં આવ્યું છે. તાજુ દૂધ તો દુનિયાનું અમૃત ગણાય છે. અને તે આંખોનું તેજ વધારનાર છે.

વ્યાયામ વિશારદ મેકફડેને પોષણ અને તાકાત માટે તેમજ નિરોગી રહેવા માટે દૂધને જ સર્વશ્રેષ્ઠ પોષક ખોરાક ગણ્યો છે. આવા આ દૂધને ડેરી ઉદ્યોગના રૂડારૂપાળા નામ નીચે લાખો ગામડાઓમાંથી આંચકી લેવામાં આવ્યું. હવે બહુરાષ્ટ્રીય કંપનીઓ દૂધમાંથી અન્ય બનાવટો પાઉડર-ચીઝ-માખણ-ચોકલેટ-વગેરે બનાવવા તલપાપડ થઈ રહી છે. આપણા ઘી-દૂધના બજારો ઉપર સંપૂર્ણ કબજો જમાવીને કાયમી ધોરણે આપણું નિર્દય શોષણ કરવાના દુષ્ટ ઈરાદાથી મલ્ટીનેશનલ કંપનીઓનો કાફલો ધસી રહ્યો છે.

ગાય જ્યારે Dairy Animal ન હતી અને જ્યારે દૂધ વેચવું પાપ ગણાતું, ત્યારે પ્રજાના ઘરઘરમાં તાજું દૂધ અને શુધ્ધ ઘીની રેલમછેલ હતી. દૂધને ડેરી પદાર્થોમાં ફેરવવાથી કરોડો શિશુઓના મોંમાંથી તાજું દૂધ છીનવાઈ જશે. સમગ્ર પ્રજાના આર્થિક-શારિરીક-ધાર્મિક અને સામાજિક વ્યવહારો ખતમ થઈ જશે.

આશ્ચર્યની વાત એ છે કે દૂધને પાઉડર-ચીઝ-ક્રીમ-આઈસ્ક્રીમ-ચોકલેટ કે અન્ય પદાર્થોમાં રૂપાંતર કરવાથી તેના મુખ્ય તત્ત્વો નાશ પામે છે. તાજા દૂધની સુગંધ-સોડમ-ગુણ કે મીઠાશ

તેમાં રહેતી નથી. ગાયને દોહ્યા પછી દૂધ એક વાસણમાંથી બીજા વાસણમાં લેવાય તેટલા માત્રથી તેના ગુણમાં ઘટાડો થઈ જાય છે. તો પછી દૂધની હેરફેરમાં જે સમય વેડફાય અને યાંત્રીક સાધનોમાં એના ઉપર જે પ્રક્રિયા કરાય તેથી દૂધમાં રહેલા અમૂલ્ય પોષકતત્ત્વો નાશ પામે છે. વળી આ દૂધની મોંઘીદાટ બનાવટો આરોગ્ય માટે પણ નુકશાનકારક છે. દૂધને લાંબો સમય રાખી મુકવાથી પણ (પછી ભલે તે Fully A/c માં કે ફ્રીઝમાં રાખ્યુ હોય તો પણ) તેના ગુણ નાશ પામે છે.

આમ દૂધને વેપારની ચીજ ગણીને તેને ઉદ્યોગોને હવાલે કરવાથી ગામડાના ભરવાડો-રબારીઓ-ગોવાળો અને માલધારી પશુપાલકો બેકાર બનશે. એટલું જ નહીં દૂધ અદ્રશ્ય થઈ જતાં ભારતની સમગ્ર પ્રજા ભયંકર રીતે બીમારીનો ભોગ બનશે. ખરો પ્રશ્ન એ છે કે શું ગરીબ અને ગ્રામીણ પ્રજાનો આ રીતે નાશ કરવો છે ?

ભારત ખેતીપ્રધાન દેશ હોવા છતાં અનાજ બહારથી ખરીદ કરે છે. શું હવે આપણે દૂધ પણ પરદેશથી આયાત કરવાનું છે ? દૂધની અછત કરી હવે તેને અદ્રશ્ય કરીને ગરીબ અને મધ્યમ વર્ગનો મહામૂલો સંપૂર્ણ પોષક આહાર છીનવી લઈ પ્રજાને રીતસર મૃત્યુના મુખમાં ધકેલી દેવાનું બોફર્સ કરતાં પણ આ ભયંકર કૌભાંડ છે.

દેશી અને વિદેશી કંપનીઓને દૂધના બજાર ઉપર કબજો જમાવવાના પરવાના અપાશે તો સમગ્ર અર્થતંત્ર અને ગ્રામ્યવ્યવસ્થા ઉપર અતિ ગંભીર ફટકો પડશે. મૂઠ્ઠીભર પરદેશી હિતોના રખવૈયા ઉદ્યોગપતિઓ અને પ્રજાવિરોધી આ સરકારની ચાલ સામે ભારતની સમગ્ર પ્રજાએ પુરી તાકાતથી ધારદાર રીતે વિરોધ કરવો જોઈએ. બહુરાષ્ટ્રીય કંપનીઓની આ રીતની દખલ સામે વિરોધનો વંટોળ નહીં જગાવીએ તો મૂંગે મોંએ અધોગતિના જડબામાં સમગ્ર દેશની પ્રજા ધીમે રહીને ધકેલાઈ જશે.

● સેવંતી એમ. સંઘવી

એથી તારૂં શું ?

લોકો તારી વાહવાહ કે જયજયકાર કરે એથી તારૂં શું ?
રાત દિવસ લાડી, વાડી, અને ગાડીના પાછળ ગાળ્યા, ઘણું ભેગું કર્યું એથી તારૂં શું ?
ઘણા મોટા બંગલા બાંધ્યા અને મખમલની શૈયામાં પોઢ્યો પણ એથી તારૂં શું ?
સારા સારા સમારંભોમાં જઈ આવ્યો, લાંબા ભાષણો ભાખી આવ્યો પરંતુ એથી તારૂં શું ?
દુનિયામાં ફુલણજી જેવો થઈને ફર્યો અને બીજાને કંઈ પણ ન સમજ્યો એથી તારૂં શું ?

મધુકર

સ્વસ્થ અને સાર્થક જીવનનો ઉપાય : સમતુલન

ડૉ. ચિનુભાઈ નાયક

સંસારમાં મનુષ્યનાં માનસિક સ્વાસ્થ્ય અને સ્થિરતા તેની માગણીઓ અને લાગણીઓ પર અવલંબે છે. મનુષ્યની માગણીઓ અને લાગણીઓ પૂરતી ન સંતોષાય તો તેનું જીવન સુખી અને શાંત બની શકતું નથી. અસંતોષની આગમાં શેકાતો માનવી સંસારમાં અનેક પ્રકારના ઉત્પાતો મચાવી શકે છે ! આજના આપણા સમાજમાં હિંસા, ભય, અસ્થિરતા અને આતંકનું જે વાતાવરણ જોવા મળે છે તેમાં મનુષ્યના મનમાં પડેલો તીવ્ર અસંતોષ છે. આજના માનવીની જરૂરિયાતો રોજબરોજ વધતી જ જાય છે, વળી તે પૂરી સંતોષાતી ન હોવાથી તે બલવત્તર બનતી જાય છે, ધન, સત્તા, ભોગવિલાસ અને ભૌતિક સાધનો પ્રાપ્ત કરવા માટે આજનો માનવી છાકટો બન્યો છે. પરિશ્રમ કર્યા વિના રાતોરાત ધનપતિ થઈ જવું છે અને પોતે કલ્પેલું ભોગવિલાસનું સ્વર્ગ માણવું છે !

આજના માનવીની કમનસીબી એ છે કે ભૌતિક માગણીઓ સંતોષવા માટે તે એટલો બધો પ્રવૃત્ત રહે છે કે તે પોતાના હૃદયની લાગણીઓને સમજી શકતો નથી અને સંતોષી શકતો નથી. તેની પરિસ્થિતિ એટલી બધી તનાવયુક્ત હોય છે કે શરીર અને મનની સમતુલા તે જાળવી શકતો નથી. શરીર અને મનની અસમતુલાને કારણે તેની કૌટુંબિક અને સામાજિક સમસ્યાઓમાં વધારો થતો રહે છે.

કુટુંબમાં લાગણીની માવજત ન મળવાને કારણે સંતાનો કેવા બરબાદીના પંથે વળે છે એના અનેક કિસ્સાઓ આપણે વર્તમાનપત્રોમાં વાંચીએ છીએ. ડોક્ટર, વેપારી, વકીલ કે ઉદ્યોગપતિ પોતાના કામમાં એટલા બધા ગળાબૂડ રહે છે કે તેઓ પોતાના કુટુંબીજનોની લાગણીને નેવે મુકી દે છે, ક્યારેક તો તેઓ લાગણીહીન બનીને પોતાના વ્યવહારમાં જડતા પ્રગટ કરતા હોય છે. તેઓ પોતે ટેન્શન-તનાવમાં જીવતા હોય છે અને કુટુંબીજનોને પણ તનાવમાં રાખતા હોય છે ! આ લખું છું ત્યારે એક ડોક્ટર દંપતીનો કિસ્સો યાદ આવે છે. પતિ-પત્ની બન્ને ડોક્ટર છે. પતિ નામાંકિત કન્સલ્ટીંગ સર્જન છે. અમદાવાદ ઉપરાંત ગુજરાતનાં બીજાં નગરોમાં પણ નક્કી કરેલા દિવસે કન્સ્લ્ટીંગ માટે જાય છે. સવારના સાત વાગ્યાથી તે રાતના દશ-અગિયાર વાગ્યા સુધી એમનું સમયપત્રક ઠસોઠસ ભરેલું હોય ! તેમનાં સંતાનોને માતા-પિતા તરફથી જે હૂંફ અને લાગણીની માવજત મળવી જોઈએ તે મળી નહીં ! ખરાબ સોબતને કારણે તેઓ અવળે રસ્તે ચડી ગયાં. જુગાર, દારૂ અને નશીલા પદાર્થોનું વળગણ એવું વળગ્યું કે તેઓએ માધ્યમિક શાળાનો અભ્યાસ પણ પૂરો કર્યો નહીં ! પુત્ર-પુત્રી બન્ને કુટુંબ અને સમાજ માટે બોજારૂપ બની ગયાં ! આવેશમાં આવી જઈને પુત્રીએ ઘરનો ત્યાગ કર્યો અને પુત્રે આત્મહત્યા કરી ! પોતાનાં સંતાનો સીધા માર્ગે

ચાલતાં નથી એવી ફરિયાદો દાદા-દાદી, રસોઈયાએ અને નોકરોએ કરી હોવા છતાં પોતાના ધંધામાં વ્યસ્ત કહેતાં ડોક્ટર દંપતીએ બહુ ધ્યાન આપ્યુ નહીં. જ્યારે કરૂણ અને આકસ્મિક ઘટનાઓ બની ત્યારે પશ્ચાતાપનાં આંસુ સારવાનો તેમને દિવસ આવ્યો. પરંતુ ઘણુ મોડું થઈ ગયું હતું ! ગુરુ નાનક તેમના એક પદમાં કહે છે, 'જબ ચિડિયાં ચૂગ ગઈ ખેત, તબ પસ્તાયે ક્યા હોત".

આપણને પ્રશ્ન થાય કે જીવનની આ પ્રકારની સમસ્યાઓનો ઉકેલ છે ? ઉકેલ લાવવો એ આપણા હાતની વાત છે. શરીર અને મનનું સમતુલન જાળવવા માટે સતત પ્રયત્નશીલ રહેવું જોઈએ. શારીરિક અને માનસિક માગણીઓ અને લાગણીઓને સમજીને તેને વિવેકપૂર્વક સંતોષવા પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. માણસ કેવળ ડોક્ટર, વેપારી, વકીલ કે ઉદ્યોગપતિ હોઈ શકે નહીં, એ સંબંધોની દુનિયામાં રહેનારું પ્રાણી હોવાથી સર્વ પ્રકારના સંબંધોની પણ માવજત કરવી પડે ! ત્યાગ અને પ્રેમની ભાવના કેળવ્યા વિના સંબંધોની માવજત થઈ શકતી નથી. આપણે માટે જાગ્રતપણે સતત પ્રયત્ન કરવો પડે. એવા પ્રયત્નો કરવાથી જ જીવન જીવવા જેવું આનંદમય, સ્વસ્થ અને સાર્થક બની શકે. નહીંતર બોજારૂપ, નિરર્થક અને રગશિયું બની જાય ! આપણે આપણા જીવનને કેવું બનાવવું છે તે આપણાં પોતાના હાથની વાત છે.

ચેતજો !

બીજાના દુર્ગુણોનો ચેપ ન લાગે એટલા માટે ચેતજો !
બીજાના બુરાઈનો ભોગ તમારી જીભ ન બને તે માટે ચેતજો !
જિંદગીનો ભરોસો નથી, થઈ શકે એટલી આરાધના કરવા માટે ચેતજો !
ગાડી સ્ટેશન છોડે નહિ તે પહેલાં બેસવું હોય તો ચેતજો !
'મારું' ને 'હું' બન્ને આદમીને પછાડનાર છે;
એ પછાડે નહિ એ પહેલાં ચેતજો !
ઈન્દ્રિયો શિથિલ થઈ ગયા પછી કંઈ નહિ થાય,
એટલે એ સ્વસ્થ હોય ત્યાં સુધી જ કંઈક
કરી લેવા માટે ચેતજો !
મોંઘો માનવનો ભવ મળ્યો છે, સફળ કરવો હોય તો ચેતજો !
જીવ માત્રને જીવવાનો હક્ક છે, આ સુવર્ણસૂત્ર ભૂલી ન જવાય તે માટે ચેતજો !

મધુકર

श्रीराजेन्द्र वचनामृत

मनुष्य जैसा हराम-सेवन और संग्रहवृत्ति में तल्लीन हो जाता है, वैसा वह यदि प्रभु-भजन में रहा करे तो उसका बेड़ा पार होते देर नहीं लगती।

अपनी मति को सदैव वैराग्य रस में ओतप्रोत रखो, जिससे जन्म-मरण सम्बधी दुःख मिटता जाए और आत्मा सुखमय बनती जाए।

मिथ्यात्वी काले नाग से भयंकर है। काले नाग का जहर तो मन्त्र या औषधि द्वारा उतारा सकता है, किन्तु मिथ्यात्व- ग्रसित व्यक्ति की वासना कभी अलग नहीं की जा सकती।

परिग्रह संचय शान्ति का शत्रु है, अधीरता का मित्र है, अज्ञान का विश्राम-स्थल है, बुरे विचारों का क्रिड़ोंद्यान है, घबराहट का खजाना है, प्रमत्तता का मन्त्री है और लडाई दंगों का निकेतन है अनेक पाप कर्मो का कोष है और विपत्तियों का विशाल स्थान है अतः जो इसे छोड़कर सन्तोष धारण कर लेता है, वह संसार में सर्वत्र सदैव सुखी रहता है।

जब तक हम स्वयं अपनी कमजोर आदतों पर शासन न कर ले, तब तक हम दुसरों को कुछ नहीं कह सकते; अतः सर्वप्रथम प्रत्येक व्यक्ति को अपनी निर्बलताओं को सुधार कर फिर दूसरों को सुधारने की इच्छा रखनी चाहिये।

वर्षा का जल सर्वत्र समान रुप से बरसाता है, परंतु उसका जल इक्षु-क्षेत्र में मधुर, समुद्र में खारा, नीम में कड़वा, और गटर में गन्दा बन जाता है। इसी प्रकार शास्त्र-उपदेश परिणाम में सुन्दर है।

जो मानव उँचे कुल में जन्म लेकर भी अपने आचार-विचार घृणित रखता है, वह नीच है; और जो अपना आचार-विचार सराहनीय रखता है, वह नीच कुलोत्पन्न होकर भी उँचा है।

भटके पाँव
खोज लेते हैं
उन हमउम्र मंजिलों को
नहीं पकड़ पाये थे
जिन्हें
बुड्ढे रास्ते।

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

क्या आप जानते हैं?

कि आज के प्रचलित टूथपेस्टों में उपयोग में लाये जाने वाले फॉस्फेट और जिलेटिन का निर्माण मृत प्राणी की हड्डिओं से किया जाता है? कई लोगों को इस का पता नहीं है. मृत प्राणी की हड्डियों का इस्तेमाल जिस टूथपेस्ट या टूथ पाउडर में किया जाता हो, इसको उपयोग में लाना उचित नहीं है.

अमर टूथपेस्ट — टूथपाउडर में

किसी भी अभक्ष्य पदार्थ का इस्तेमाल नहीं होता. आयुर्वेदिक जड़ी बुट्टियों का इन में बहुत ही सावधानीभरा उपयोग किया जाता है

आयुर्वेदिक
अमर
टूथपेस्ट - टूथपाउडर

**नये युग की हर्बल-लहर
जो दांतों को निरोगी, मज़बूत और
चमकता रखे.**

अमर टूथपाउडर, एक्स्ट्रा स्ट्राँग के नियमित उपयोग से पायोरिया तक के दांत और मसूड़ों के विविध रोग मिट सकते हैं. और श्वास की दुर्गंध भी दूर होती है.

आदर्श दंत-रक्षक — रेग्युलर टूथपेस्ट. रु. ७.५०
आदर्श दंतरोग-निवारक — स्ट्राँग टूथपेस्ट. रु. ८.५०
पायोरिया के इलाज के लिए आदर्श — एक्स्ट्रा स्ट्राँग टूथपाउडर. रु. ११.५०

भारत का एकमात्र अहिंसक आयुर्वेदिक उत्पादन.

निर्माता: स्वामि औषधालय प्रा. लि., ४९७, एस.वी.पी. रोड, बम्बई-४०० ००४.
फैक्ट्री: ४६४, न्यू जी.आई.डी.सी., कतारगाम, सुरत-३९५ ००८.

संपादक - जे.के.संघवी अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।